आठवाँ दिन—

: १२ :

भगवान का ही काम और नाम

रास्ता छोड़ कर क्यों आया ?

मैं तो जा रहा था वर्धा से हैद्राबाद। लेकिन रास्ता छोड़ कर इधर आपके गाँव की तरफ आ गया। उसका कारण यह है कि इधर मांडवी में कस्तूरबा ग्रामसेवा केंद्र है। महात्मा गांधीजी की धर्मपत्नी कस्तूर बा का नाम तो आप सबने सुना ही है। उनके स्मरण में जगह जगह संस्थायें खोली गई हैं जो ग्रामीण स्त्रियों की सेवा कर रही हैं। मांडवी में जो बहन काम कर रही है उसने इच्छा प्रकट की कि मैं उसका काम देखने के लिये वहाँ जाऊं। इसलिये मैं वहाँ जा रहा हूं।

आपके कामों से प्रसन्नता

मुझे यहाँ इस बात की बहुत खुशी हुई कि आप लोगों ने भगवान के भजन सुनाये। इतने छोटे से गाँव में हरि-चर्चा रोज चलती है यह बहुत अच्छी बात है। हरि-चर्चा हर गाँव में चलनी चाहिये और रोज चलनी चाहिये।

दोपहर को मैं आपके गाँव में घूम आया। लोगों के घरों में भी हो आया। सौ साल की एक बूढ़ी स्त्री मिली। उसे बड़ी खुशी हुई।

नौ वां दिन—

: १३ :

लघु-आरंभ का दीर्घ-फल

ग्रामसेविका का प्रेमाग्रह

मैं आज यहां आदिलाबाद से आया हूं। वर्धा से हैद्राबाद जा रहा हूं। आप का गाँव रास्ते में तो नहीं था लेकिन आपके यहां की सेविका पार्वती का आग्रह रहा। उसने कहा, "हम यहां देहात में काम कर रहे हैं। आप अभी न आये तो फिर कब आयेंगे कह नहीं सकते। इसलिये अभी ही चलिये।" मैंने सोचा हमारी लाड़ली लड़की आग्रह कर रही है तो हो आऊं। इससे मुकाम पर पहुंचने में चार दिन देर हो जायगी।

यह काम एक बडे वृक्ष का पौधा है

यहां की बालवाड़ी और आरोग्य केंद्र आज सुबह हम देख आये। यह केंद्र छोटा है लेकिन वह पौधा है। ज्ञानदेव कहते हैं, "इवलें से रोप लावियेलें द्वारीं त्याचा वेल गेला गगनावरी" छोटा-सा पौधा लगाया था लेकिन उसकी बड़ी बेल बन कर सारे आकाश पर छा गई। वैसे ही छोटे पौधे की अगर आप लोग ठीक देखभाल करेंगे तो उसको आगे फूल और फल लगेंगे। बच्चा पैदा होता है तब छोटा होता है। लेकिन माँ जानती है कि वह

राजेन्द्र-स्मृति ग्रन्थ-माला—८

सर्वोदय यात्रा

विनोबा

सर्वापदामन्तकरं सर्वोदय-तीर्थमिदं तवैव ।

—आचार्य समन्तभद्र

भारत जैन महामण्डल, वर्धा

१९५१

सारा गांव एक कुटुम्ब बने

और एक बात आप को कहनी है। हरेक गाँव में अलग अलग पार्टियाँ होती हैं। उससे गाँव में झगड़े होते हैं। लेकिन सारा गाँव एक कुटुंब के जैसा होना चाहिये। कोई आपसे पूछे कि क्या आप काँग्रेसवाले हैं या कम्युनिस्ट हैं या समाजवादी हैं, तो जवाब देना चाहिये कि हम हमारे गाँव के हैं और उस गाँव की सेवा यही हमारा धर्म है। भगवान श्रीकृष्ण के गोकुल में सारा गोकुल एक कुटुंब बन गया था उस तरह आप का गाँव गोकुल बनना चाहिये। इस तरह अपने गाँववालों पर प्रेम करना सीखेंगे तो सारा गाँव भगवान का निवास-स्थान बन जायगा।

झुकें नहीं, नम्रता रखें

आखिर में एक बात। आप लोग नमस्कार करने के लिये आते हैं और पांव पर सिर झुकाते हैं। आप लोगों को खड़े रह कर ही नमस्कार करना चाहिये। हमको सीखना चाहिये कि हम किसी के आगे इस तरह अपना सिर झुकायेंगे नहीं! हमारा आदर और प्रेम हमको प्रकट करना है तो दोनों हाथ जोड़ कर नम्रता से सिर झुका कर खड़े खड़े ही नमस्कार करना चाहिये। पैर तक सिर नहीं झुकाना चाहिए। मैं आप सब को प्रणाण करता हूं।

बालकोंडी, (जि० निजामाबाद)
२४-३-५१

प्रकाशक
रिषभदास रांका
अध्यक्ष,
भारत जैन महामण्डल, वर्धा

पहला संस्करण ५५००

मूल्य : एक रुपया

मुद्रक :
जमनालाल जैन
व्यवस्थापक
श्रीकृष्ण प्रि० वर्क्स, वर्धा

अठारहवां दिन—

: २२ :

सच्चा स्वराज्य

आप मेरा भाषण सुनने के लिये इतनी बड़ी तादाद में यहां आये हैं। आप की उत्सुकता मैं समझ गया हूं। आप शांति से बैठे हैं यह देख कर मुझे खुशी होती है।

स्वराज्य आने पर भी हालत क्यों नहीं सुधरी

आज घर पर बात हो रही थी तब कुछ लोगों ने कहा कि स्वराज्य आया है फिर भी कोई खास फरक हम नहीं देखते हैं। मुझे यह सुन कर आश्चर्य नहीं हुआ। देखिये आप के इस निजाम के मुल्क में करीब सात-आठ सौ साल से दूसरों की सत्ता चली आ रही है। और अब दो साल से आप की खुद की सत्ता आई ऐसा कहते हैं। अब यह स्वतंत्रता आप को किस तरह हासिल हुई है? तो बोले पुलिस ॲक्शन से। पहले के जमाने में भी इसी तरह राज्यों में फेर-बदल होते थे। एक राज्य जाता था और दूसरा आता था, लेकिन उस से प्रजा में कोई फरक नहीं होता था। तो प्रजा में कोई फरक हुए बगैर जो राज्य आता है वह स्वराज्य हो ही नहीं सकता। वह परराज्य है, चाहे उसको चलानेवाले अपने लोग भी क्यों न हो।

जब यहां रजाकारों का जुल्म था तब आप लोग भयभीत थे। तो क्या अब आप लोगों ने भय छोड़ कर के यह राज्य हाथ में लिया

प्रकाशक की ओर से

तीसरे सर्वोदय सम्मेलन शिवरामपल्ली (हैदराबाद) में सम्मिलित होने के लिए जाते हुए पू० विनोबाजी रास्ते के मुकामों पर जो प्रार्थना-प्रवचन दे रहे हैं उन में से शुरू से लेकर ता० २८ मार्च तक इस सकलन में दिए गए हैं।

सर्वोदय का आदर्श बहुत प्राचीन है। दो हजार वर्ष पूर्व जैनाचार्य समन्तभद्र ने 'सर्वोदय-तीर्थ' की भावना व्यक्त की थी। उन्होंने कहा था, 'सर्वोदय-तीर्थ सब की समस्त आपदाओं को दूर करनेवाला है।' आज के युग मे बापू ने इसे व्यवहार मे लाया और विनोबा तो अब उस के यात्री ही बन गए हैं।

महामण्डल की ओर से इन प्रवचनो को प्रकाशित करते हुए हमें विशेष आनन्द हो रहा है। हम पू० विनोबाजी और ग्राम सेवा-मण्डल, नालवाड़ी के विशेष कृतज्ञ है, जिनकी कृपासे हमे यह सद्भाग्य प्राप्त हुआ। और जिन मित्रों की मेहनत और तत्परतासे यह संकलन शीघ्र निकाला जा सका, उन्हें भी नहीं भुलाया जा सकता। उनके हम आभारी हैं।

हमें आशा है यह पुस्तिका नैतिक विकास, चरित्र निर्माण तथा देश में सेवा भावना और समभाव बढ़ाने में मददगार साबित होगी।

राजेंद्र-स्मृति ग्रथमाला का यह आठवा पुष्प है।

वर्धा
३-४-५१

रिषभदास रांका
अध्यक्ष, भारत्त जैन महामण्डल

है ? लोगों का भय तो जैसा का वैसा ही है। आज भी पुलिस डंडा चलायेगी तो लोग डरेंगे। परकीय सत्ता इसलिये होती है कि लोगों में भय होता है। अगर वह भय कायम है तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? परकीय सत्ता इसलिये होती है कि लोगों में आपस आपस में एकता नहीं होती। अगर लोगों में आज भी एकता नहीं है तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? परकीय सत्ता इस-लिए होती है कि लोग शराबी होते हैं, व्यसनी होते हैं, पराक्रमहीन होते हैं। अगर आज भी लोग शराबी हैं, व्यसनी हैं, और पराक्रम-हीन हैं, तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? लोगों में परकीय सत्ता इसलिए होती है कि लोग आलसी ह। अगर आज भी लोग आलसी हैं तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? इसलिए मुझे आश्चर्य नहीं होता कि आप लोगों की स्थिति पहले थी वैसी ही आज है। अगर मुझे कोई कहेगा कि कल रात थी और आज दिन हो गया है फिर भी प्रकाश नहीं है, तो मैं कहूंगा कि दिन नहीं हुआ है बल्कि छोटी सी लालटेन लगी हुई है। तो यही समझो कि पुलिस ॲक्शन के पहले रात थी, और आज भी रात है, लेकिन जरासी लालटेन लग गयी। लेकिन उतने लालटेन से दिन नहीं होता है। दिन के लिये तो सूर्य का प्रकाश चाहिये जो हर घर में पहुँचता है।

स्वराज्य का अर्थ

आप के इस गाँव में १२ हजार लोग रहते हैं, लेकिन यहां आपस आपस में सहकार्य से कौनसा काम चल रहा है ? क्या गाँव का शिक्षण आप लोग चलाते हैं ? आप कहेंगे हमारा रक्षण सरकार करती है और शिक्षण हमें सरकार देती है। इस तरह

अनुक्रमणिका

अगर गाँव का सारा काम हुकूमत ही करती है तो फिर गाँव का स्वराज्य कहां रहा? यहां कपड़ा बाहर से आता है, तेल बाहर से आता है तो गाँव में आप क्या करते हैं? यहां बीड़ियाँ बना कर आप बंबई भेजते हैं और वहां से पैसा लाते हैं। उससे क्या हुआ? शायद पहले से आप अधिक बीड़ियाँ पीने लगे होंगे। स्वराज्य का मतलब तो यह होता है कि हरेक गाँव अपनी-अपनी बहुत सारी आवश्यकताओं को गाँव में ही पूरी कर लेता है। और इस तरह जो गाँव स्वावलंबी होते हैं वे एक दूसरे की पूर्ति कर सकें इसलिये सरकार निमित्तमात्र होती है। सरकार का काम यह नहीं है कि गाँव को हर चीज बाहर से ला दे। सब गाँवों का संबंध बना रखने के लिये सरकार है। सरकार का काम हरेक गाँव को स्वावलंबी बनने में मदद देने का है। मेरी तो व्याख्या यह है कि जहां स्वराज्य नहीं होता है वहां दुर्गुण होते हैं। गोरी चमड़ी वाले लोग गये और काली चमड़ीवाले आये इससे स्वराज्य नहीं बनता। तो मुझे जब लोग कहते हैं कि स्वराज्य के बाद हमारी स्थिति सुधरी नहीं है तो मैं पूछता हूं कि क्या आप के दुर्गुण कम हुए हैं? अगर हमको यह अनुभव आता है कि पहले से हमारे दुर्गुण कम हुए हैं तो स्वराज्य आया ऐसा समझ सकते हैं। अगर वैसा अनुभव नहीं आता है और चार साल पहले जिन दुर्गुणों में हम थे वे अब भी कायम हैं तो स्वराज्य हमें नहीं मिला है ऐसा समझना चाहिये। इसलिये मुझे आप लोगों को यही कहना है कि अभी स्वराज्य हासिल करना बाकी है ऐसा समझ कर आप ज़ोरों के साथ काम में लग जाइये।

प्रास्ताविक

शिवरामपल्ली (हैदराबाद द.) में ता. ८ से ११ अप्रैल '५१ को होने वाले सर्वोदय-सम्मेलन में भाग लेने के लिए विनोबाजी परंधाम (पवनार) से ८ मार्च को सुबह पैदल निकले हैं। सारे देश में इससे आनंद की लहर फैल गयी है और साथ ही प्रेरणा की भी, क्योंकि जिस चीज की आज देश को जरूरत है, और जिसकी साधना के लिये कुछ काल के लिये ही क्यो न हो, परंधाम पर ही स्थिर रहने का तय करके विनोबाजी साम्ययोग के प्रयोग मे जुटे हुये थे, वह साधना है—अर्थ की अनर्थकारी, परावलंबी और सुखाभासी बेड़ियो में से आम जनता को छुड़ा कर श्रम की श्रेयस्कारी, स्वावलंबी, सात्विक और सुखदायी जीवन-क्रम की प्रतिष्ठापना। उसको इस यात्रा मे खूब चालना मिली है, मिल रही है, मिलने वाली है।

देश की पुकार प्रतिध्वनित हुई

देश के अन्य लोगो के समान ही विनोबाजी के निकट परिचितो के लिए भी यह यात्रा-निर्णय आनददायी और अनपेक्षित है। खुद विनोबाजी के लिये भी यह अनपेक्षित है और इसीलिए उन्होने इस निर्णय का वर्णन 'ईश्वर-प्रेरित' ऐसे शब्दों मे किया है। ता० ६ मार्च को सर्व-सेवा-संघ की बैठक थी। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी की विनती से सातवें नयी-तालीम-संमेलन के निमित्त से ता० २७ फरवरी से ७ मार्च तक सेवाग्राम में रहना विनोबाजी ने तय किया और इसीलिए सर्व-सेवा-संघ की ता० ६ मार्च की बैठक भी वहीं रखी गयी। बैठक के सामने शिवरामपल्ली-संमेलन का कार्यक्रम और विषय-सूची वगैरह तय करने का मुख्य कार्य था।

युवानो में सर्वोदय का संदेश सुनने की उत्सुकता

ऐसी निकम्मी तालीम दी जाने के बावूजूद मैं जब कभी शहरों में हाईस्कूल या कॉलेजों में गया हूं और वहां बोला हूं तो आश्चर्य चकित हुआ हूं। क्योंकि मैं देखता हूं कि वहां के लड़के सर्वोदय के विषय में मैं जो कहता हूं वह सुनने के लिये अत्यत उत्सुक रहते हैं और उससे प्रभावित होते हैं। हाईस्कूल, कॉलेजों के नवयुवकों में एक ऐसी आकांक्षा काम कर रही है जिससे उनका जी छटपटा रहा है कि कुछ न कुछ करना चाहिये जिससे हमारा देश आगे बढ़े। मानव में रजोगुण और तमोगुण काम करते ही हैं, और इन दिनों इन दोनों का नाच बहुत जोरों से चल रहा है। रिश्वतखोरी बढ़ी हैं, आलस्य बढ़ा है शराबखोरी और दूसरे व्यसन बढ़े हैं, एक दूसरे को लूटने का विचार हो रहा है, यह सब हो रहा हे। लेकिन इतना होते हुए भीं युवानों में एक ऐसी सद्भावना और शक्ति काम कर रही है जो इस बिगड़ी हुई हवा से बिलकुल अलिप्त है और जिसको अपनी ही कल्पना में विचरने की इच्छा हो रही है। युवानों को लग रहा है कि चाहे साम्यवाद आये, चाहे समाजवाद आये, चाहे सर्वोदय आये, किसी भी तरह से आज जो बुरी हालत है वह जाय। इस तरह की प्रेरणा तरुणों में मैंने देखी है। मैंने सोचा इसका कारण क्या होगा। तो कारण मुझे यही लगा कि इस देश पर भगवान की कृपा हो रही है।

वैसे यह देश एक पुण्यभूमि के तौर पर सारी दुनिया में मान्य है। हम तो कहते ही आये हैं कि "दुर्लभं भारते जन्म"

दो

इसी सिलसिले मे सर्वोदय-समाज और सर्व-सेवा-संघ मे परस्पर संबंध क्या है, क्या हों, आदि चर्चा भी छिड़ी, क्योंकि इस बारे मे बहुतेरों के खयाल साफ नहीं है—यद्यपि अंगुल संमेलन के बाद 'सर्वोदय' मासिक में विनोबाजी की लिखी हुई 'सर्वोदय-समाज और सर्व-सेवा-सघ' नाम की एक टिप्पणी को देखते हुए कोई गलतफहमी, दुविधा या असमंजसता का कारण नहीं रहना चाहिए। चर्चा के दौरान में एक भाई ने विनोबाजी से पूछा कि आप समेलन मे आने वाले हैं या नहीं? विनोबाजी ने कहा, "आने का विचार नहीं है।" निकट परिचितों के लिए यह उत्तर अनपेक्षित नहीं था, क्योंकि इस बारे मे पहले भी बाते हो चुकी थीं। लेकिन प्रश्नकर्त्ता भाई के लिऐ यह उत्तर शायद अनपेक्षित और आज के कुल हालात को देखते हुए अप्रस्तुत भी था। उन्होंने बड़े दर्द के साथ, लेकिन उतनी ही दृढता से और 'एक घाव-दो टूक' शब्दो मे कहा कि "सर्वोदय-समाज और समेलन आपकी ही प्रेरणा का फल है, अभी वह बाल्यावस्था मे है। दूर-दूर से सेवक सत्संग के लिए आते हैं एव खास नेतृत्व न मिलने से निराश-से लौटते है। ऐसी हालत मे आप न आवे तो कैसे चलेगा? इसके बजाय तो समेलन बद कर देना बेहतर होगा।" विनोबाजी के न आने में क्या जिम्मेवारियाँ और दिक्कते है, उनका भी फिर थोड़ा-सा जिक्र हुआ। फिर भी विनोबाजी जानते थे कि उस भाई की कही हुई बात ही हम सबके भी मन मे है। क्षण-भर के लिए विनोबाजी स्तब्ध रहे। न मालूम उन्होंने उस क्षण मे क्या-क्या विचार किया! किसे मालूम कि जिस "भूत मात्र मे हरि भावना" का इन दिनों वे चिंतन, उच्चारण और आचरण तीव्रता से कर रहे है, करने को कह रहे है, उसी भावना से उन्होंने हम सबकी इच्छा की ओर देखा हो। नहीं आने की बात जितने शब्दो मे और जिस तटस्थता से कही थी,

उतने ही शब्दो मे और उतनी ही तटस्थता से उन्होने कहा, "अच्छा, मैं आता हूँ।" जवाब का उच्चारण करने के पहले उहोने पूछ लिया कि समेलन-स्थान यहाँसे कितनी दूर है। जवाब मिला—तीन सौ मील समझ लीजिये। विनोबाजी के आने की बात सुन कर सबको आनंद हुआ, लेकिन शायद ही किसी के ख्याल मे आया हो कि विनोबाजी समेलन में पैदल आवेंगे।

अपवाद भी नही

बैठक के बाद तुरत ही आश्रम की प्रार्थना थी। प्रार्थना के अंत मे विनोबाजी ने समेलन मे जाने की बात का जिक्र किया और कहा कि "कल सुबह यहाँ से परधाम जाने का पहले से तय ही है, वहासे परसो याने ८ तारीख को समेलन के लिए पैदल निकलूगा। वाहन का उपयोग न करने का मैने कोई व्रत नहीं लिया है और अर्थोच्छेद की मेरी कल्पना मे, जो कि आज सुबह की प्रार्थना मे मैने कही है, रेल्वे आदि का परित्याग अनिवार्य है ऐसी भी बात नहीं है, फिर भी मैने पैदल जाने का ही तय किया है। क्योकि जो विचार पूरा विकसित नहीं हुआ है, जिसका सागोपाग दर्शन हमे अबतक नहीं हुआ है, उस अविकसित दशा मे अपवाद करने की मेरी मनोवृत्ति नहीं है। इसलिए पैदल के बजाय वाहन से जाने के लिए मुझे कायल करने मे मित्र लोग अपनी बुद्धि-शक्ति न चला कर, पैदल यात्रा कैसे सुखकर-शुभकर होगी इसका ख्याल करें।"

सेवाग्राम-आश्रम का श्रम-जीवन-संकल्प

प्रार्थना के बाद निकटवर्ती लोगो का यही काम रहा कि नक्शे देख कर किस रास्ते से, किन मुकामो से जाना आदि विनोबाजी से तय करे। दूसरे लोग मिलने और एक तरह से विदा लेने-देने के लिए आते-जाते थे। ता० ७ की सुबह की प्रार्थना में महादेवी ताई ने "जेथे जातो

तेथें तूं माझा सांगाती "–"जहाँ जाता हूँ वहाँ तू मेरा साथी है।" यह तुकाराम का अभंग गा कर मानों प्रस्थान का आरंभ कर दिया। प्रार्थना के अंत में बोलते हुए विनोबाजी ने एक तरह से आश्रमवासियों से बिदा ली। कहा कि 'आश्रमवासी और अन्य संबंधितो की परसों की बैठक मे यह तय हुआ है कि १ जनवरी, १९५२ से आश्रम पैसे में से मुक्त हो जायगा। आश्रमवासियों द्वारा खेती आदि में किये हुए परिश्रम और लोगों से मिलने वाले श्रमदानपर ही आश्रम चलेगा। यह एक शुभ निर्णय है और यही शोभा देता है, क्योंकि बापू के बाद आश्रम यहाँ चलता है, तो वह आखिरी आदर्श के अनुरूप चलाने की कोशिश हो, वरना वह बंद रहे, यह अच्छा है। आश्रम यहाँ न चलता हो तो भी लोगों को इस स्थान से स्फूर्ति तो मिलती ही रहेगी। पैसे के दान पर आश्रम चला कर भी एक तरह की सेवा होगी। लेकिन वैसे देखें तो कौन सेवा नहीं कर रहा है? एक किसान भी सेवा करता है, लेकिन आज जरूरत है लोगों के दिलो मे क्रांति करने की। वह बिना परिश्रम के, बिना प्रचलित अर्थ-व्यवस्था को तोडे नहीं होगी।"

'सुने री मैंने निर्बल के बल राम'

निकलने के नियत समय के कुछ पहले तालीमी संघ का सारा कुटुंब सुबह की प्रार्थना के लिए विनोबा के निवासस्थान के पास आ पहुंचा। विनोबा के साथ सबने खड़े-खड़े प्रार्थना की, 'सुने री मैंने निर्बल के बल राम' यह भजन गाया गया। आखिर मे विनोबाजी ने दो शब्द कहे : "आप नयी तालीम का महान् काम कर रहे हैं। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी ने अपने को इसमें खपा दिया है। उन दोनो का प्रेम मुझे हमेशा मिलता रहा है। आपने यहाँ आ कर प्रार्थना कर के मेरी पैदल यात्रा के लिए खूब बल दिया है। अभी तक के सब संतो का अनु-

भव है–'निर्बल के बल राम ।' मेरे जीवन का भी यही अनुभव है । हा, मैं लिखने बैठूं तो "सुने री" के बदले लिखूंगा कि 'देखि रे मैंने निर्बल के बल राम ।"

आत्मानुभूति का साक्षात्कार

सेवाग्राम से सीधे पवनार जायेंगे ऐसा अंदाज था, लेकिन विनोबा जी ने कहा, मै बजाज-वाड़ी में किशोरलाल भाई से मिल कर वहा से पवनार आऊंगा । किसीने हिसाब किया, कुल ९ मील चलना पड़ेगा । विनोबाजी ने कहा, हररोज १०-१२ मील चलना ही है न ? आज ९ मील से शुरू कर दें । फिर वे महिलाश्रम मे लड़कियों से बिदा लेते हुए बजाजवाड़ी पहुंचे । किशोरलालभाई आदि से मिल कर गोपुरी हो कर पवनार करीब ११ बजे पहुंचे होंगे । पवनार के ग्रामवासी विशेष सख्या में शाम की प्रार्थना में हाजिर थे । वे विनोबाजी के दो शब्द सुनने को आये थे । आज भी हमेशा के मुताबिक विनोबाजी ने ही प्रार्थना चलायी। प्रार्थना मे स्वतः गाये हुए भजनो के द्वारा मानो वे बिदा ले रहे थे। ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ आदि के भजनों में से प्यारे भजनों के सिवा "हसता रमता प्रगट हरि देखुं रे, मारुं जीव्युं सफळ तंव लेखुं रे, नित्यानदनो नाथ बिहारी रे, ओधा जीवनदोरी अमारी रे," ये चरण खास रूप से उन्होंने गाये । कृष्ण के मथुरा-गमन के बाद गोपी-जन को सान्त्वना देने के लिये उद्धव गये थे, उस प्रसग का यह वचन है । प्रार्थना के बाद जो प्रवचन हुआ वह आगे प्रवचनो मे दिया है ।

'भरत राम' से बिदाई

सुबह की प्रार्थना के बाद यथा-समय यात्रा आरंभ हुई। वैसे, सबसे तो पहले दिन ही बिदाई ले ली गयी थी, लेकिन 'भरत-राम' से बिदा लिये बिना विनोबाजी परंधाम से कैसे जा सकते थे ! और वह बिदाई पेशगी में थोड़े ही ली जा सकती है! विनोबाजी अपने कमरे

से निकल कर 'भरत-राम-मंदिर' मे गये। 'भरत-राम-मंदिर' परधाम में प्रवेश करते ही सामने दिखाई देता है। उसका बाहरी आकार प्रचलित मंदिर का-सा नही है। एक सादी-सी झोपड़ी है और उसमें वनवास से आने के बाद रामचंद्रजी की भरत से जो भेंट हुई, उस प्रसंग को अंकित करने वाली मूर्ति रखी हुई है, जो परधाम के खेत में मिली है और जिसके लिये विनोबाजी को विशेष भाव है। विनोबाजी ने अपने हाथों उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की है। वहाँ जा कर वे भजनादि भी यथा-समय करते हैं। लोगों को इसका आश्चर्य होता है और वे विनोबाजी को पूछते हैं कि "आपके आश्रम मे भी मूर्ति है और आप भी मूर्ति-पूजा करते हैं?" तब विनोबाजी कहते कि "मूर्ति-पूजा का मै आग्रही नहीं हूं, लेकिन भगवान खुद होकर मेरे यहाँ आ जाय तो उसे निकाल दूँ, ऐसा अभक्त भी नही हूँ।" इस मूर्ति के बारे में 'भगवान् खुद होकर आ जाय, यह अक्षरशः सत्य है। इतना ही नहीं, यहाँ तो भक्त की एक पावन कल्पना पूरी करने के लिये ही वह आया है, ऐसा मुझे लगता है। करीब उन्नीस साल पहले, ८-५-३२ को धूलिया जेल में गीता के बारहवें अध्याय पर प्रवचन देते हुए सगुण और निर्गुण भक्ति समझाने के लिये अनुक्रम मे लक्ष्मण और भरत का उदाहरण दे कर आखिर में विनोबाजी ने कहा है कि "ऐसा चित्र यदि कोई निकाले, जिसमे दोनो की मुखाकृति समान हो, किंचित उम्र का फरक, चेहरे पर तपस्या वही और राम कौनसा व भरत कौनसा यह पहचाना नही जा सकता, तो वह चित्र बड़ा पावन होगा।" भक्त की यह अभिलाषा पूरी करने के लिये ही मानो १९३७ के बाद जब विनोबाजी परधाम पर रहने गये और शरीर श्रम के तौर पर कुछ-न-कुछ खोदते थे, तब १९४०-'४१ में एक दिन उनकी कुदाली किसी पत्थर पर टकरायी। यहाँ मूर्तियाँ निकलती हैं, यह खयाल होने से उस पत्थर को हिफाजत से निकाला गया तो पाया गया कि औंधी रखी हुई

'भरत-राम-भेट' की वह मूर्ति थी! "धर्म जागो निवृत्तीचा" ('निवृत्ति' का धर्म जागृत रहे) इस ज्ञानदेव के अभंग के द्वारा भरत-राम की बिदा माँग कर वे निकले। रास्ते में दादा धर्माधिकारी से नयी तालीम को लेकर काफी बातें होती रहीं।

लक्ष्मीनारायण-देवस्थान (वर्धा) मे वर्धावासियों से बिदा लेने को ठहरना था। यह देवस्थान हिन्दुस्थान का शायद सबसे पहला भव्य मंदिर है, जो हरिजनों के लिये खोला गया था। बजाज-कुल की देशभक्ति का वह बाह्य चिह्न है। वर्धा का वह एक दर्शनीय स्थान है। योगिराज भनसाळी को १९४२-४३ की चिमूर-पद-यात्रा मे यहीं से बिदा दी गयी थी। वह सारा प्रसंग नजर के सामने आ रहा था। महिलाश्रम की बहनो ने 'वैष्णव जन' और 'प्रेम मुदित मन से कहो राम-राम-राम' ये मधुर भजन गाये। माता जानकीदेवी बजाज़ ने वर्धा-वासियो की ओर से दो शब्द कहे। यहा पर विनोबाजी ने भी वर्धा-वासियों से बिदा लेते समय कुछ शब्द कहे थे। उनका यह भाषण आगे प्रवचनो मे दिया गया है।

और बाद मे वे वायगाव के लिये रवाना हुए।

इस तरह पदयात्रा का आरभ हुई है। पदयात्रा की पावन-शक्ति से हिदुस्तान सदियो से परिचित हैं। जीवन-काल के आखिरी हिस्से में हिदू-सस्कृति ने मनुष्य से अपेक्षा रखी है 'परिव्राजकता' की। परिव्राजक याने चारो ओर घूमने वाला। गीता के 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, सब धर्मो को छोड़ कर मुझको ही शरण आ,' इस आदेश को पालन करने वाला आदेश देते हुए गीता ने मानो उसका मर्म भी बता दिया। भगवान बुद्ध और महावीर के विहार से सारे प्रात को ही 'विहार' नाम मिला। साधु-संतों के परिभ्रमण ने खड-प्राय हिदुस्तान को "अखण्ड" बनाया। बापू की दाडी-यात्रा और नोआखाली-यात्रा का चमत्कार तो हमारी आखों के सामने ही हुआ है।

सर्वोदयी ' पद-यात्रा

आखिर में ज्ञानदेव के अद्रोह के विवरण के शब्दों में कहूँगा कि क्या अद्रोह का ही भावरूप शब्द सर्वोदय नहीं है ? जिस तरह गंगा दुनिया के पाप-ताप दूर करती हुई और किनारे के वृक्षों को पोषण देती हुई समुद्र तक पहुँचती है, या दुनिया का अंधेरा दूर करता हुआ और शोभा के मंदिरों को प्रकट करता हुआ सूर्य जैसे प्रदक्षिणा को निकलता है, वैसे बद्धों को छुड़ाती हुई, डूबे हुओं को और दबे हुओं को ऊपर उठाती हुई एवं आर्त्तों के दुःख दूर करती हुई यह सर्वोदय-पद-यात्रा संपन्न हो।

—वल्लभस्वामी

: १ :

संकल्प

आज यह तय हुआ है कि आगामी सर्वोदय संमेलन के लिये मुझे हैद्राबाद जाना है। बहुत लोग मुझे अब तक आग्रह पूर्वक कहते रहे है कि मुझे समेलन म जाना ही चाहिये। लेकिन मैने न जाने का तय कर रखा था। न जाने के मेरे जो कारण थे वे भी बहुत महत्त्व के थे। अुनको देखते हुए मै जाना नहीं चाहता था। लेकिन आज मित्रो ने आग्रह किया और आग्रहवश मुझे जाने का निश्चय करना ही पड़ा।

कल सवेरे यहाँ से पवनार जाऊंगा। परसो पवनार से हैद्राबाद के लिये पैदल निकलूगा। रोज करीब पन्द्रह मील चलने की कल्पना है।

यह सब मै जब प्रार्थना में जाहिर कर रहा हू तो अपनी जिम्मेवारी महसूस करता हू। वाहन मे न बैठने का व्रत मैने नहीं लिया है। क्योकि व्रत तो सत्य-अहिंसा आदि का लिया जाता है। वित्त-विच्छेद की बात मैं कर रहा हूं तो उसका यह अर्थ भी नहीं है कि मुझे प्रवास छोड देना है। पैसे के छेद के कई पहलू मुझे दीख पडते हैं। उन पहलूओं के अनुकूल समाज हमें बनाना है। परमेश्वर चाहेगा तो इस काम में हमे जरूर यश देगा।

मित्रों से मेरी प्रार्थना है कि मेरे इस संकल्प को तोड़ने की बात वे न सोचें। संकल्प में शुरू से कुछ अपवाद भी नहीं रखना चाहिये। उससे मनुष्य की न संकल्पशक्ति बढ़ती है और न प्रतिभा। पैदल यात्रा की योजना बनाने में जो मदद देना चाहें वे जरूर दे सकते हैं।

सेवाग्राम आश्रम
६-३-५१

: हरिः

परंधाम आश्रम से बिदा

आप लोगो को अब पता चल ही गया है कि कल से मैं पैदल चलकर हैद्राबाद के सर्वोदय सम्मेलन के लिये जा रहा हूं। वहाँ जाने का पहले विचार नहीं था। लेकिन लोगो का आग्रह रहा और जाना तय भी हो गया। अचानक ही यह तय हुआ, और अब केवल तीस दिन ही बचे है। ज्यादा दिन ठहरने की अब गुंजािअश नहीं रही है, अिसलिये मै कल ही कूच कर रहा हूं।

चित्त-शुद्धि का कार्य

अपने यहाँ जो काम चल रहा है उस संबंध में मै कअी बार आपके सामने बोल चुका हूं। यह काम यदि ठीक ढंग से रूप पकड़ लेगा तो उससे हम सबकी चित्त-शुद्धि होगी और समाज को भी कुछ शुद्धि प्राप्त होगी। अिस तरह दोनों का काम बनेगा। अिसलिये अिच्छा थी कि अिस काम का कुछ रूप आने तक यहीं रहें। वैसे मेरी तबियत भी बहुत अच्छी हुअी है अैसा नहीं कह सकते। लेकिन वह चीज गौण है। मुख्यतया यहां के काम का कुछ आकार आनेके बाद ही जरूरत पड़ी तो बाहर जा सकते हैं हो सकता है शायद बाद में बाहर जाने की जरूरत भी न पड़े— अैसी कल्पना थी। लेकिन बीच मे जाने का तय हुआ है तो वह

भी परमेश्वर की इच्छा से ही प्रेरित हुआ है, अैसा मै देख रहा हू। क्योंकि यह सारा अनपेक्षित-सा हो गया और अिस खबर से सब को आनंद भी हुआ है।

पैदल-यात्रा क्यों ?

सर्वोदय संमेलन मे सब लोग जिस तरीके से जा सकते है उस तरीके से जाना ही अच्छा है। जो अिस तरह नहीं जा सकते हैं वे रेलगाडी से आयेगे तो भी उसमे दोष नहीं है। लेकिन हो सके तो पैदल ही जाना अच्छा है। उससे देश का दर्शन होता है। जनता के साथ संपर्क आता है और उसे सर्वोदय का संदेश पहुंचा सकते है। वह संदेश सुनने और उसमे से सांत्वना प्राप्त करने के लिये लोग बहुत उत्सुक है। लोगो को इस समय सात्वना की सख्त जरूरत है। किसी का मन अगर त्रस्त हुआ है और उसमे से मुक्त होने का कुछ रास्ता उसे मिल जाता है तो उसको शांति मिलती है। यही हाल आज जनता का हुआ है। इसमें किसी एक का दोष है ऐसी बात नहीं है। सबका मिलकर दोष है। लेकिन दोषो की चर्चा भी किस काम की है? जरूरत है दोष-निवारण की। और उसका मार्ग सीधा सादा, सब को करने योग्य और असरकारक भी है जो हमने यहा परधाम मे प्रयोग किया है। यद्यपि अभी तक जैसा हम चाहते है वैसा रूप नहीं मिला है, फिर भी शुभ भावना से तपस्या हो रही है। और अुतनी भी व्यथित मन को सतोष दे सकती है।

यात्रा का ढांचा नही बनाया है

अिस प्रवास मै अपनी कुछ भी कल्पना ले कर नहीं जा रहा हूं। सहजता से जो होगा वह होने दूंगा। फलाने ढगसे

सफर करनी है, फलाना काम करवा लेना है, ऐसा कुछ भी मेरे मन मे नही है। जगह जगह जो भी भले लोग मिलेंगे उनसे मिलना और लोगो की जो कठिनाइयाँ होगी उनको हल करने का कुछ रास्ता बना सकू तो बनाऊँ इतना ही मन में है। अब समय कम रहा है। इसलिए निश्चित रास्ते से ही जाना पडेगा। इधर उधर हो आने की गुंजाइश नही है। वापिस आते समय ऐसी कोई पाबंदी न होने के कारण अपनी इच्छा के मुताबिक घूम सकेंगे। लेकिन आगे का विचार अभी नहीं किया है। वह हैद्राबाद पहुचने के बाद तय होगा।

मेरा मन यहीं है

जो लोग यहां असि काम मे लगे हुए है उनके साथ मेरा शरीर यद्यपि नहीं दिखाई देगा तो भी मेरा मन यहीं है ऐसा अनुभव आपको आएगा। शरीर से यहां रहते हुए जितनी तीव्रता से मेरा मन यहाँ था उससे कम तीव्रता से वह नहीं रहेगा। शायद अधिक तीव्रता से ही रहेगा। मुझे उम्मीद है कि जिन नवयुवकों ने यह काम पूरा करने की शपथ ली है वे यदि यह काम ईश्वर का है असि भावना से उसे निरहकार पूर्वक करते रहेंगे तो उन्हे यहां की मेरी गैरहाजरी उत्साह देनेवाली ही साबित होगी।

परधाम, पवनार

७-३-५१

: ३ :

वर्धावासियों से बिदा

बापू के प्रयाण के बाद मुझे हिंदुस्तान भर घूमना पड़ा। थोड़ा व्यापक रूप से देखने का मौका भी मिला। अनुभव से मेरे ध्यान में आया कि प्रवास का यह ढंग अुस काम के लिये अनुकूल नहीं है जो हमें करना है। आज कल राज-काजवाले तो हवा में घूमते हैं। समाज-सेवक भी अुसी ढंग से घूमने लग जाय तो वे भी राज-काजवालो के समान हो जायेंगे। यह हमारे लिये ठीक नहीं होगा।

स्वास्थ्य के कारण जब मुझे घूमना बंद करना पड़ा तब यह सब सोचने का मौका मुझे मिला। अिसी बीच परधाम में चित्त-छेदन का प्रयोग शुरू हुआ। अुस काम के कुछ स्वरूप आने पर, जरूरत पड़ी तो फिर घूमने की मेरी कल्पना थी। लेकिन अितने में यह यात्रा का कार्यक्रम बन गया और बहुत ही सहज ने बना। जो वस्तु सहज उपलब्ध होती है अुसे औश्वर की अिच्छा समझ कर स्वीकारना चाहिये। अिसी खयाल से मैं निकल पड़ा हूं। संभव है, हैद्राबाद पहुंचने के बाद आगे भी बढ़ूं। अुस हालत में वापिस कब आअूंगा कह नहीं सकता। अिसलिये आज आपसे बिदा ले रहा हूं।

वर्धावासियों की जिम्मेवारी :

वर्धावालों से मेरा अिकतीस वर्षों से संबंध रहा है। हम लोगो ने तालीम की अेक पद्धति बनाअी और अुसे हमने 'सेवाग्राम-

पद्धति ' कहा । लेकिन लोगोंने वह नाम नहीं अुठाया । ' वर्धा-शिक्षण-पद्धति ' नाम चला । बापू के अनन्यभक्त जमनालालजी का नाम भी वर्धा से जुड़ा हुआ है । अितने पावन नामों का बल जब हमारे पास है, तो मेरा विश्वास है, वर्धा में बहुत कुछ काम हो सकता है । लेकिन यहा पर हमारी अितनी संस्थाअें होने पर भी वर्धा शहर में हम खास काम नहीं कर पाए हैं यह कबूल करना चाहिये । मैं अुसके कारणों में अभी नहीं जाऊंगा । संभव है अपने-अपने कामों में सभी अितने मशगूल रहे हों कि समय न निकाल सके हों ।

बीच मे हमने वर्धा शहर का सर्वे किया था । सैकड़ो लोगो ने अपने दस्तखत दिये और कुछ न कुछ सार्वजनिक काम करने की अिच्छा प्रकट की । यह छोटी बात नहीं है । लेकिन अुन लोगों से काम नहीं लिया गया । वैसे यहां काफी कार्यकर्ता हैं और रचनात्मक काम के लिये वातावरण भी अनुकूल है ।

अनिंदावृत्ति की आवश्यकता

लेकिन जहां कार्यकर्ता अधिक होते है वहां अेक बात खास ध्यान में रखनी चाहिये । आज अभी वैष्णवगीत गाया गया जिसमें नरसी मेहता ने आदर्श भक्त के गुण बताए हैं । उनमें से अेक गुण की तरफ मेरा ध्यान इन दिनों विशेष रूप से जा रहा है । वह गुण है 'अनिंदा' । अेक जमाना था जब मै कहता था कि अपने तो दोष देखने चाहिये और दूसरों के गुण । लेकिन अेक दिन सूझा कि हमें अपने भी गुण ही देखने चाहिये । क्योंकि आखिर

हम कौन है ? वही शुद्ध चेतन आत्मस्वरूप हम है। तो फिर दोष किसके देखें ? दोषो का भान हम जरूर रखे। लेकिन चिंतन तो गुणो का ही करना चाहिये। दोष तो सिर्फ गुणो की छायारूप होते है। बिना छाया के तसवीर नहीं खींची जा सकती। वैसे बिना दोषो के गुण भी अव्यक्त ही रह जाते है। दोषो को हम जानेंगे जरूर, लेकिन उनको दूर करने के लिये। और गुणो को बाहर आने का मौका देते रहेगे। अिस तरह अगर हम हर जगह गुण-दर्शन ही करते जाएंगे तो तेजी से आगे बढ़ेंगे

महिलाश्रमवालों से

यहां महिलाश्रम की अितनी लड़कियां आई है। आरंभ मे ही उस संस्था से मेरा संबंध रहा है। आज ऊपर से ऐसा दीखता है मानो मेरा महिलाश्रम से कोई संबंध नहीं है। लेकिन दर-असल मै अपने को महिलाश्रम के काम से अलग नहीं समझता हू। अिस वक्त सेवाग्राम में तालिमी संघ के संमेलन मे मैने महिलाश्रम का जिक्र बुनियादी तालीम का प्रयोग करनेवाली संस्था के तौर पर किया। आपको अपना अलग अभ्यासक्रम बनाने का अधिकार है। लेकिन यह बात ध्यान मे रखे कि हिंदुस्तानभर की लडकियों को यहां जो संस्कार मिलेगे उनके द्वारा उनमे तेज तथा वैराग्य प्रकट होना चाहिये।

लक्ष्मीनारायण मंदिर, वर्धा
प्रातःकाल ८-३-५१

पहला दिन—

: ४ :

देहात के मजदूरों का प्रश्न

परंधाम का हमारा काम

आपके गांव में पहले मै कब आया था मुझे याद नहीं है।

[illegible]

करता हू। किसान कैसे बचेगा, देहात कैसे सुधरेंगे, लोगो को सुख कैसे मिलेगा, दैन्य, दारिद्र्य और दु:ख कैसे मिटेगा, प्रेम कैसे रहेगा अिस विषय मे मै सोचता हू। परधाम में मै और मेरे साथ पढ़े-लिखे लोग भी कुदाली से खोदते है, रहट हाथ से चलाकर कुएं से पानी निकालते है, सूत कातते है, कपडा बुनते है, बढ़ई का काम करते है। ये सारे उद्योग कैसे पनपेंगे इसका विचार करते है।

मेरी पैदल यात्रा

आज मै आपके गाव मे आया हू और यहां से घूमते घूमते तीन सौ मीलपर हैद्राबाद है, वहां जाऊगा। वहा सज्जन लोगो का एक समेलन है। वहा मै पैदल जा रहा हू। आप कहेंगे यह क्या पागलपन अिसको सूझा? अिन दिनो तो लोग हवाई जहाज में जाते है। कल ही अेक बालक कह रहा था कि रेलगाड़ी से सफर

करने में बहुत समय लगता है। अब तेजीसे पहुंचाने वाले हवाई जहाज निकले हैं तो अैसे जमाने मे पैदल सफर करने का यह पागलपन कैसे? लेकिन यह पागलपन आपसे मिलने के लिये है। आप देहात की जनता नारायण स्वरूप है। आपसे संपर्क बढ़े, अिस खयाल से मैं आया हूं। कल मै रालेगांव जाऊंगा। सुबह पांच बजे चल देगे। दोपहर को ग्यारह बजे वहां पहुचेगे। फिर भोजन आदि होगा। कुछ लिखने का काम चलता है वह करेंगे, फिर शाम को पाच बजे लोगों से बातचीत करेंगे। रात को प्रार्थना करेंगे, सब मिलकर भगवान का नाम लेंगे और सब को सिखायेंगे। फिर रात को भगवान की गोद मे सो जाएंगे। परसों सुबह उठ कर फिर से कूच करेंगे। ऐसा हमारा कार्यक्रम है।

देहात की चिंता देहात ही करे

आज भी यहा के लोगो से पांच बजे काफी चर्चा हुई। उन्होंने किसानों की दिक्कतो का जिक्र किया। गांव के मजदूरों को आगे शायद खाने के लिये ज्वार न मिले ऐसी हालत पैदा होने की आशंका उन्होंने प्रकट की। मैंने उनसे कहा, तुकाराम महाराज ने हमें सिखाया है कि

"तुझे आहे तुजपाशीं परि तूं जागा चुकलासी"

—तेरा तेरे पास ही है, लेकिन तू जगह भूल गया है और इधर उधर भटक रहा है। तुझे लगता है कि सरकार, डी. सी. या मंत्री मेरे लिये कुछ करेंगे। लेकिन तेरे लिये तू ही करेगा। तुझे थकान आयेगी तो तू ही सोयेगा, दूसरा तेरे लिये नहीं सोयेगा। तुझे भूख लगेगी तो तू ही खायेगा, दूसरा तेरे लिये नहीं खायेगा। तू आया

था तब अकेला ही आया था, और जायगा तब अकेला ही जायगा। इसलिये तेरी जिम्मेवारी तुझे ही उठानी है, और वह तू ही उठा सकता है। भगवान ने कैसी योजना बनाई है यह तू नहीं देखता है? उसने हरेक को दो कान, दो आंख, दो हाथ, दो पाव दिये हैं और बुद्धि भी दी है। ऐसा क्यो दिया है? इसलिये कि हरएक अपने पाव पर खडा रहे और फिर एक दूसरे की मदद करे। वैसे देहातो को भी अपने सवाल खुद ही हल करने होगे। और वे हो भी सकते हैं। हिन्दुस्तान में पाच लाख देहात है। उनके सवाल दिल्ली की सरकार, चाहे वह कितनी भी कुशल क्यों न हो, अकेली हल नहीं कर सकती। सवाल हल करने का इलाज आपके हाथ मे है। वह कौनसा? पैसे के दर नीचे ऊपर होते है। एक रुपये मे कभी चार पायली ज्वार तो कभी दो पायली। वह भी कभी मिलती है कभी नहीं। मैंने सुझाया कि सालदारो की तरह आप मजदूरो को भी कुछ निश्चित प्रमाण मे ज्वार क्यों नहीं देते? यह प्रमाण मैंने रोज की पचास तोला ज्वार सुझाया। स्त्री हो चाहे पुरुष, ज्वार मे फरक न किया जाय। मजदूरी मे जो भी फरक करना है, वह पैसे मे किया जाय। ५० तोला ज्वार दे देने के बाद ऊपर से जो भी पैसे देने है उसमे चाहें तो फरक कर सकते है। अिस तरह मजदूरो को उनकी रोजी में कम से कम ५० तोला ज्वार और बाकी के पैसे देंगे तो आपके मजदूर भूखे नहीं रह सकेंगे। इस पर काफी चर्चा हुई। आखिर यह सुझाव उन लोगो को जंच गया। फिर मैंने कहा कि मेरे सामने आपने तय किया है तो वैसा प्रस्ताव अभी मेरी हाजिरी में ही कर लीजिये। न मालूम फिर

मै कब आपके गांव मे आऊंगा। बातचीत में गांव के बड़े बड़े लोग हाजिर थे। उन्होने प्रस्ताव किया। वह आपको बाद में सुनाया जायगा। अिस प्रस्ताव के अनुसार अगर आप लोग चलेंगे तो गांव में कोई भी भूखा नहीं रहेगा। फिर आपके गांव का उदाहरण देखकर दूसरे लोग भी अुसका अनुकरण करेंगे और अिस तरह देहात का यह जटिल प्रश्न हल हो सकेगा।

पांच अगुलियो की तरह रहो

और अेक बात। हम सब हाथ की पाच अगुलियों की तरह रहे। हमारे हाथ की एक अगुली छोटी हैं तो दूसरी बड़ी है। सब अगुलियां समान नहीं है। फिर भी जो काम करना होता है वह सब मिल कर ही करती है। लोटा उठाना हो तो अंगूठा और अगुलिया मिलकर उठाती है। वे अगर आपस मे झगड़ा करने लगेंगी और परस्पर सहकार नहीं करेंगी तो कुछ भी काम नहीं हो पाएगा। तो हमे भी उनकी तरह प्रेम के साथ रहना चाहिये। कोई छोटा और कोई बड़ा यह तो दुनिया मे रहेगा ही। लेकिन सबके दिल एक होने चाहिये। अपनी अगुलियो से यह सबक हम सीखेंगे तो हमारा भला होगा।

भगवान का स्मरण कीजिये

एक आखिर की बात और है। मुझे आपका अधिक समय नहीं लेना है। लेकिन मै जो कहता हू उसपर अमल कीजिये। रामदास स्वामी ने कहा है—"समजले आणि वर्तले तेचि भाग्यपुरुष

झाले, येर ते बोलत चि राहिले करटे जन"। जो भाग्यहीन होते है वे

अेक साथ बैठकर हर रोज नियमित रूपसे भगवान की प्रार्थना करे। मैने सुना है कि यहा रोज प्रार्थना होती है। लेकिन उसमे हाजिरी पन्द्रह बीस लोगों की ही होती है और उसमें ज्यादातर छोटे लड़के ही होते हैं। ऐसा न करें। आप सब प्रार्थना मे हिस्सा लीजिये। आखिर इस मनुष्य देह मे आकर क्या करना है? मानव-देह में अिसलिये आते है कि हम एक दूसरे की मदद करें, एक दूसरे पर प्रेम करे और सब मिल कर परमेश्वर का ध्यान करे। उसीने हमें वाणी दी है। अिसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि जितने अधिक लोग जमा हो सकते ह उतने जमा होकर परमेश्वर का स्मरण कीजिये।

वायगाव (वर्धा)

सायकाल

८-३-५१

दूसरा दिन—

: ५ :

जन-सेवा ही परमेश्वर की पूजा

प्रार्थना मे निम्न पंक्तियाँ लोगो को गा कर समझायी गई .

भाऊ शेजारी भेट नाही ससारीं।" भाअी भाअी पडोस मे रहते है लेकिन जिंदगी-भर मे अेक दूसरे की मुलाकात ही नहीं होती। कौन है ये दो भाअी? अुसका जवाब है आँखे। दोनो आँखे बिलकुल अड़ोस-पड़ोस मे है। लेकिन अेक आँख दूसरी को नहीं देख सकती। अैसा ही हाल आप का और मेरा हुआ है। मैं आप-के गाव से पचीस-तीस मील की दूरी पर ही रहता हू। और वहां तीस साल से रहता हू। लेकिन आज तक आपकी मुलाकात नहीं हो पाई थी। भगवान ने आज वह दिन ला दिया है।

सर्वोदय संमेलन का पूर्वेतिहास

अभी सर्वोदय संमेलन हैद्राबाद मे है। गांधीजी के जाने के बाद सब लोगों ने मिल कर तय किया कि सर्वोदय-समाज कायम करें। सर्वोदय-समाज याने क्या? जिस समाज में न कोई ऊंचा है न कोअी नीचा है। जिस समाज मे सब अेक दूसरे पर प्रेम करते है उसका नाम है सर्वोदय-समाज। फिर हर साल जगह जगह मेले लगाये जायं। उन मेलों मे सब लोग इकट्ठे हो कर भगवान का भजन करें, एक दूसरे से परिचय कर ले, और गांधीजी का स्मरण कर के देश के लिये अपने हाथ की कती सूत की अेक गुंडी समर्पण करे। तो अिसके अनुसार १२ फरवरी को हर प्रांत मे मेले लगे। आप के प्रांत में पवनार में मेला लगा था। आप में से कुछ लोग शायद वहां पर आये होगे लेकिन सब को आना चाहिये। और अपने साथ अेक अेक गुंडी ला कर भगवान के चरणो में समर्पण करनी चाहिये। यह अगले साल कीजिये। अिसके अलावा यह भी तय हुआ कि हिंदुस्तान भर के कार्यकर्ता सालभर मे अेक दफा अिकट्ठे हो कर अगले साल के काम के बारे मे सोचे।

नारायण के दर्शन के हेतु पैदल यात्रा

अिस साल सर्वोदय-समाज के सेवको का संमेलन हैद्राबाद मे होनेवाला है। वहां अगर मुझे जाना चाहिये तो मै पैदल चलते चलते ही क्यो न जाअूं, अैसा मैंने सोचा है। अुससे आप जो लोग नारायण स्वरूप है अुनके दर्शन मै कर सकूंगा। नदी समुद्र मे

मिलने के लिये निकलती है। लेकिन जाते जाते रास्ते में कहीं अिस गांव को पानी दिया, कहीं अुस खेत को पानी दिया। अैसा करते करते और सबकी सेवा करते करते समुद्र तक पहुंचती है। अुसी तरह मैंने भी सोचा कि हैद्राबाद जाना है तो रास्ते मे लोगों से मिलते मिलते और लोगोंकी कुछ सेवा करते करते जाअूं। तो आज आप के गांव में आया हूं।

दुखियों की सेवा ही परमेश्वरकी पूजा है :

आप और हम सब यहां प्रार्थना मे अिकट्ठे हुअे हैं। अिससे मुझे बहुत आनद हुआ है। आज प्रार्थना मे हमने अेक बात सीखी। सारी दुनिया मे जो परमेश्वर भरा है अुसकी कुछ सेवा हमारे हाथ से होनी चाहिये। और परमेश्वर की पूजा याने दुखियो की सेवा। तो आप लोग हर रोज सोने के पहले अपने दिल से पूछे कि अपनी देहके लिये तो मैंने सब कुछ किया लेकिन दूसरे के लिये क्या किया? गांव के लिये क्या किया? कोअी बीमार था तो उसको दवा दी है? कहीं गंदगी पडी थी अुसको साफ किया है? मेरा देह और मेरा घर छोड कर गांव के लिये मैंने अगर कुछ नहीं किया है तो समझना चाहिये कि मेरा आज का दिन बरबाद हुआ। मै व्यर्थ जिया। अिस तरह तो पशु, पक्षी सभी जीते है। भगवान ने हरेक को प्राण दिया है तो सब खाते है और जीते है। लेकिन दूसरे के लिये जीना, दूसरे की कुछ सेवा करना अिसमें जो समाधान मानव को प्रतीत होता है वह दूसरी किसी चीजमें नहीं होता। यह कल्पना की बात नहीं है। कोअी भी अिसका अनुभव ले सकता है।

दूसरे को खिलाने का आनंद चखो

बचपन की बात है। हमारे गांव में हमारा खुदका अेक कटहल का पेड़ था। जब फल निकलता था तब अुसे काट कर दो दो बीज हरेक घर में दे आने के लिये माँ हम से कहती थी। हमारा गाव पचास-साठ घरों का था। सब घरों में मैं बीज पहुंचा आता था। मै उस समय सात साल का बच्चा था। बच्चों को तो खाने में बड़ा मजा आता है। लेकिन हमको उस फलके बीज पहले नहीं मिलते थे। मुझे अब भी याद आता है कि वे बीज दूसरों को बॉटने में मुझे कितना आनंद होता था। वह एक अजीब प्रकार का आनंद था। खुद खाने में जो आनंद आता है अुसका अनुभव तो हरेक को है। जानवरों को भी वह अनुभव आता है। लेकिन दूसरे को खिलाने में कैसा आनंद आता है यह अनुभव करके ही देखना चाहिये। जैसे शक्कर मुंह में डालते ही उसकी मधुरता का हरेक को अनुभव होता है, वैसे दूसरे को मदद देने मे मधुरता है या नहीं, यह अनुभव करके ही देखना चाहिये। अगर वैसा अनुभव न आये तो आप आ कर मुझे जरूर कहे। इतनी अनुभव सिद्ध यह बात है।

दूसरे को सुख देने में ही मनुष्य-जन्म कृतार्थ होता है

आज की प्रार्थना में हम यह सबक सीखे हैं कि नारायण की कुछ सेवा अपने हाथ से हो। वह पूजा तुलसी, बेल या फूल से नहीं होगी। कुछ सेवा ही होनी चाहिये। किसी-न-किसी तरह भगवान को संतोष पहुंचाना ही होगा। रामदासस्वामी समझाते है कि

इस तरह संतोष पहुंचायेंगे तो ही नारायण की पूजा होगी। वही सिखावन आज मैंने प्रार्थना मे आपके सामने रखी। आज पहले ही मैं आप के गांव मे आया हूं। हम सब ने मिल कर प्रार्थना की, बहुत आनंद आया। फिर कब मिलेंगे कह नहीं सकते। इसलिये इतनी बात याद रखिये कि एक फकीर आया था और सुनाकर चला गया कि मनुष्य देह की कृतार्थता भोग भोगने में नहीं है बल्कि दूसरे को थोड़ा भी क्यों न हो, सुख देने में है।

मजदूरों को मजदूरी मे कुछ ज्वार दीजिये

आज आप के गांववालों से चर्चा चल रही थी। मैंने सुझाया कि मजदूरों को हर रोज की मजदूरी मे कुछ ज्वार देते जाइये। आधी पायली ज्वार (५० तोला) और फिर ऊपर से जो भी कम ज्यादह पैसा देना हो वह दें। अगर यह बात आप को जचे तो दस्तखत करके प्रतिज्ञा कर लो। मुझे तीन दस्तखत मिले है। मुझे खुशी हुई। तीन कुछ कम नहीं है। अरे भाई, एक के हृदय मे भी अगर भगवान जग गया तो सारी दुनिया बदल सकती है। अैसे लोग हमने देखे है। बड़े लोग बड़े कैसे बनते हैं? गांधीजी हमारे सामने हो गये। वे किस कारण बड़े हुए? उनको क्या भगवान ने हमसे अधिक इन्द्रियां दी थीं? उनके पास क्या अधिक था? उनके हृदय मे भगवान जग गया था और दूसरों की सेवा करने की लगन उन्हे थी। इसके सिवाय उनके पास क्या था? वैसी अगर हममें से एक को भी लगन लगी तो वह छोटी बात नहीं है।

तीन लोगों ने दस्तखत दिये, मुझे प्रसन्नता हुई। मुझे उम्मीद है कि वे उसके अनुसार व्यवहार करेगे।

मनुष्य के हृदय पर भरोसा रखो

लेकिन एक भाई ने मुझे सावधान किया। उसने कहा "आप दस्तखत लेनेकी झंझट मे न पडे। उसमे कोई सार नहीं है। हमारा गांव इतना लोभी है कि वचन भले ही दे देंगे लेकिन उसको निभायेंगे नहीं।" मैने कहा "भाई, भरोसा करना मेरा धर्म है। मेरे हाथ मे दंड-शक्ति नहीं है और न मै चाहता हू। यहां आकर एक बात मैने कही और जिनको वह जंची उन्होने उसके अनुसार चलने का वादा किया, तो मै उनपर विश्वास ही रखूगा। मनुष्य के हृदय पर भरोसा रखना ही चाहिये। अगर न रखे तो हम मनुष्यता गंवायेंगे। आपने मुझे सावधान किया, अच्छा हुआ। उससे वे लोग भी चेत जायेंगे। वचन अगर दिया है तो "प्राण जाइ बरु वचन न जाई।" लेकिन याद रखो कि मनुष्य के हृदय में परमेश्वर जागता है। कब जागेगा उसकी कल्पना नहीं कर सकते। किस निमित्त से जागेगा यह कह नहीं सकते। मै एक फटा-टूटा आदमी आप के पास आया और ऐसा कहने की भगवान ने मुझे हिम्मत दी कि "अपने लिये तो हम जीते ही हैं, लेकिन दूसरे के लिये जीना सीखो" तुकाराम महाराज ने यही सिखाया। "तुका म्हणे फार थोडा करी परउपकार" —थोड़ा भी क्यों न हो परोपकार करो। यह देह दूसरों के लिये घिसने दो। अगर देह वैसी घिसेगी तो चंदन घिसने पर

जैसी सुगंध फैलती है वैसी देह घिसने पर सुगंध फैलेगी। वैसी सुगंध फैलने दो यह सिखावन हमारे सब संतों ने हमें दी और वही मैंने आज आप के सामने रखी।

मेरे मित्रो, मेरा भाषण समाप्त होता है। आपको मेरे प्रणाम है।

राळेगाव, (जि. यवतमाळ)
९-३-५१

तीसरा दिन—

: ६ :

हाथ-चक्की और हरि-नाम

यह एक छोटासा गांव है। छोटे गांव मे सब के हृदय एक होते है। एक दूसरे की अच्छी पहचान होती है। किसी को

रेलगाड़ी से और मोटर से बहुत दूर है जिस से आप बड़े सुख में है। लेकिन आगे-पीछे मोटर यहां तक पहुंच जायगी। तब भी आप अपना सादा जीवन और प्रेम न छोड़ें।

हाथ-चक्की का महत्त्व

आपके गांव मे अभी हाथ-चक्की पर पीसा जाता है। यह अच्छा है। लेकिन मोटर नजदीक आ जायगी तो आटे की चक्की निकलेगी और आप अपना आटा वहां से पिसवा लेंगे। अगर ऐसा हुआ तो आप की बड़ी हानि होगी।

मै बचपन में कोंकण में रहता था। आप के जैसा ही वह छोटा गाव था। सुबह चार बजे घर की स्त्रियां उठती थीं और सब से पहले जो कुछ पीसने का होता था, पीस लेती थीं। बाद में झाड़ू आदि लगा कर आंगन में पानी छिड़कती थीं। और फिर

प्रेम से भगवान का नाम लेती थीं। हर गांव में इस तरह चक्की चलती थी।

देश आधा घंटा देरी से उठने लगा

लेकिन तीस साल के बाद अब देहातों मे से चक्की लुप्त होती जा रही है। मै तो देख रहा हूं कि पहले से लोग देरी से उठने लगे हैं। यानी सारे देश का प्रातःकाल का अमूल्य आधा घंटा बरबाद हो रहा है। सुबह के दो-तीन प्रहर बहुत मूल्यवान होते हैं। उस समय नामस्मरण कर सकते हैं और गहरा अभ्यास आदि कर सकते है। इसलिये सुबह के प्रहर मे आधा घटा देरी से उठने के कारण सारे देश का उतना नुकसान हो रहा है। तो आप लोग सुबह जल्दी उठते जाइये और रात मे जल्दी सोते जाइये।

पुरुष भी चक्की चलायें

और पिसने का काम केवल स्त्रियां ही क्यो करे? बहुत सारा तो वे पीसती है। लेकिन आप को भी थोड़ा पीसना चाहिये। हम जेल मे पीसते थे। जेल में पुरुष पीसते है, यह तो सब जानते है। लेकिन हम परंधाम के हमारे आश्रम मे हर रो पीसते है। पुरुष और स्त्रियां दोनों पीसती हैं। हर रोज ताजा आटा मिलता है। हाथ के ताजे आटे में जो ताकत है वह मिल के आटे में नहीं है। आपके गांव में अभी तक तो चक्की चल रही है। लेकिन मोटर आने पर भी आप यह नियम न छोड़ें। आलस्य को छोड़ दें। और परमेश्वर का नाम लेते लेते चक्की चलाते जाइये। कबीर

एक कविता में लिखते है कि लोग मंदिरों में पत्थर रखकर उसकी पूजा करते है; लेकिन "घर की चक्की कोई न पूजे, जा पर पीसा खाय।" जिस चक्की पर हम अपना आटा पीसते हैं और हमारी रोज की रोटी खाते है अुस चक्की की पूजा क्यों नहीं करते? वह भी परमेश्वर ही है। चक्की की पूजा बेल-फूल चढ़ाकर नहीं होती। उसको हर रोज साफ कर के उसमें तेल दे करके आटा पीसना यही उस चक्की की पूजा है।

व्यसन छोड़िये

इस तरह अगर हम आलस्य छोड़ेगे, उद्योग करेंगे, तो छोटा गाँव होने पर भी हम सुखी रह सकते है। गांव में किसी प्रकार का व्यसन नहीं होना चाहिये। किसी को चिलम का व्यसन, किसी को बीडी का व्यसन, किसी को गांजा-अफीम का व्यसन, और आज कल तो चोरी से शराब का व्यसन भी शुरू हो गया है। आप ही सोचिये कि इन चीजों का न देह को उपयोग है न आत्मा को। इन व्यसनों के कारण तो मनुष्य गुलाम बन जाता है। मनुष्य देह में हम आये हैं तो गुलाम बनने के लिये थोड़े ही आये है? हम तो इस देह में मुक्ति का अभ्यास करने के लिये आये हैं। इसलिये गाव में किसी प्रकार के भी व्यसन न रहने दो।

हरि-नाम मत विसारो

यह छोटा गांव होते हुए भी करीब आधे गांव के लोग आये हैं। मैं जो बात अब कहूंगा वह ध्यान में रखो। हर रोज गांव के १५-२० लोग अेक जगह जमा हो कर प्रेम से प्रभु का भजन

करते जाइये। १५-१६ साल पहले मै मेरे बचपन के देहात में गया था। उस गांव मे स्कूल नहीं है। न कोई खास लिखना पढ़ना भी जानता है। दो दिन ही मै वहां रहा। लेकिन एक दिन रात को दो बजे मेरी नींद खुली तो मुझे भजन की आवाज सुनाई दी। बुधवार का रोज था। मै बिस्तर से उठा और जहां भजन चल रहा था वहां जाकर बैठ गया। घंटा-आधा घंटा उन लोगों ने भजन गाया। मुझे बहुत आनंद हुआ। मैं सोचने लगा जिस गांव में स्कूल नहीं है और लिखना-पढ़ना भी कोई नहीं जानता वहां इतना ज्ञान भी इन लोगो को किसने दिया? तुकाराम के चार अभंग ये लोग भक्तिपूर्वक गाते है तो उतनी अकल गांव में बची है। वरना कब स्कूलें निकलती और कब इनको ज्ञान मिलता? लेकिन भजन करने की आदत देहातो को रही तो चार अच्छे शब्द इनको कंठ हो गये हैं। इसलिये मै आपसे कहना चाहता हू कि आप एकत्र हो कर प्रार्थना करते जाइये। जिनको पढ़ना आता है वे कुछ अच्छी किताब पढ़ कर सुनायें। जो गाना जानते हैं वे भजन सुनाये। आज मैंने जिस तरह आपको भजन करना और ताल पर ताली बजाना सिखाया वैसे आप छोटे बड़े एक साथ भजन कीजिये। पीठ सीधी रख कर बैठना चाहिये। और थोड़ी देर मौन रह कर ईश्वर का ध्यान करना चाहिये। ऐसा आप करेंगे तो स्कूलों से बढ़ कर शिक्षण आप को इस प्रार्थना में से मिलेगा। स्कूल तो देहात में होने

ही चाहिये और आगे चल कर होंगे भी। लेकिन भक्तिपूर्वक की गई प्रार्थना से जो संस्कार और तालीम आपको मिलेगी वह तालीम स्कूल की तालीम से बढ़ कर होगी।

सखी–कृष्णपुर
१०-३-५१

खास स्त्रियों के लिए—

: ७ :

स्त्रियों की जिम्मेवारी

स्त्रियों को भी भजन करना चाहिये

अपने लोगो मे आम तौर से केवल पुरुष लोग ही भजन करते दिखाई देते है। लेकिन क्या स्त्रियों के लिये कोई भगवान ही नहीं है? गांव की स्त्रियों को एक जगह जमा होकर प्रेम के साथ

धर्म की रक्षा स्त्रियों ने ही की है

आप देखेगी कि हिंदुस्तान में स्त्रियों ने ही धर्म की रक्षा अधिक की है। पुरुषों में जितने व्यक्ति व्यसनी मिलते है उससे बहुत कम स्त्रियों में मिलेंगे। स्त्रियों ने दुनिया में सदाचार जिंदा रखा है। इसीलिये उनके बालको की जिम्मेवारी होती है। बच्चों में अच्छी आदते डालना और उनको साफ-सुथरा रखना स्त्रियों के हाथ में है। आप अपने बच्चों को सच्चरित्र बनायेंगी तो देश को अच्छे नागरिक मिलेंगे। बच्चे तो आप की बड़ी इस्टेट हैं। इनसे बढ़ कर कौन

सा धन है ? कौसल्या की कोख में से भगवान रामचद्रजी निकले और देवकी की कोख से भगवान श्रीकृष्ण। जितने भी सत्पुरुष हुए है उनकी माताये धर्मपरायण थीं। जिस घर की स्त्रियां भगवान का स्मरण करती है, सत्य का पालन करती है, प्रेमभाव से रहती हैं उस घर में अच्छे पुरुष पैदा होते है यह बात दुनियाभर मे प्रसिद्ध है। अिसलिये आपके हाथ मे बडी शक्ति है यह बात ध्यान में रखिये।

पुरुष को सन्मार्ग पर लाना भी स्त्रियों का काम है

पुरुष झगडा करते है, शराब पीते हैं, लेकिन उनकी स्त्रियाँ चुपचाप सहन कर लेती है। उनका काम है कि वे अपने पतिसे इन आदतो को छोड़ देने को कहे। और अगर उनका कहना पुरुष न माने तो कहना चाहिये कि जब तक ऐसी आदत आप नहीं छोडेंगे तब तक हम भोजन नहीं करेगी। यह सारा काम स्त्रियों का है।

आप सब बहने प्रेम से यहां आयीं मुझे बहुत अच्छा लगा। आप अपने पुरुषों को अच्छे रास्तेपर रखिये, बच्चो को सदाचारी बनाइये और एक दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार कीजिये। यह सब आप करेंगी तो आपके गांव मे स्वर्ग उतरेगा। *

सखी—कृष्णपुर
१०-३-५१

* प्रार्थना के बाद गाव की बहुत-सी स्त्रियां विनोबाजी का प्रवचन सुनने को आई। उनके लिए उन्होने जो चार शब्द कहे थे, उसका साराश यहा दिया गया है।

चौथा दिन—

: ८ :

श्रम और प्रेम से स्वराज्य का उदय

भगवान की देन

हम जो देहात के लोग हैं उनके पास धन संपत्ति नहीं है, लेकिन कुछ और चीज है या नहीं ? क्या भगवान ने हम को बिलकुल खाली ही रख छोड़ा है ? पटाके मे बारूद भरी होती है इसलिये उसको बत्ती लगाते ही धमाका होता है। लेकिन बारूद न होती तो कैसे आवाज आ सकती थी ? तो देहात के लोगो में भगवान ने कुछ मसाला भरा है या नहीं ? मेरा कहना है कि भगवान ने हमें दो अहम चीजे दी है : काम करने के लिये दो हाथ, और हृदय मे प्रेम।

हिम्मत रखनी चाहिए

अपने हाथ की ताकत से हम गंदगी साफ कर सकते है। आप देखते है कि घर घर मे देविया हैं इसलिये घरों के आंगन साफ रहते हैं। तो भगवान ने दो हाथो से काम करने की शक्ति हमे दी। और दूसरी चीज दी है प्रेम। तो देहात के लोगों के पास कुछ नहीं है, वे दीन हैं, दरिद्र है, दुबले है, लाचार है ऐसी अभद्र वाणी मुह से मत निकालो। बल्कि यू कहो कि हम भगवान के बड़े लाड़ले हैं। उसने हमे प्रेम दिया और काम करने के लिये हाथ दिये। कोई भी बाप अपने लड़के को कुछ न कुछ दिये बिना नहीं रहता। परमेश्वर हमारा पिता है, उसकी हम पर प्रीति है और उसने हमे बहुत बड़ी देन दी है। हम श्रीमान् है। दुनिया के सामने भीख मांगने की हमें क्या जरूरत है। इस तरह हिम्मत रखनी चाहिये।

बिना श्रम के खाना पाप समझें

वैसे देहात के लोग काम तो करते हैं। वे खेती करते है। लेकिन प्रेम और अभिमान के साथ नहीं करते। लाचारी से करते हैं। लगना यू चाहिये कि बिना श्रम किये खाना पाप है इसलिये मैं श्रम करके ही जीऊंगा। अब देखिये आप सब लोगों के बदन पर कपड़ा है। लेकिन यह सारा आप खरीद कर लाते हैं। कपास आप के खेत मे पैदा होती है वह आप बेच डालेंगे और बिनौले मोल लेते है, कपड़ा मोल लेते है। तिलहन आप के खेत में होती है, उसको आप बेचेंगे और खल्ली और तेल मोल लेंगे। यह क्या चल रहा है ? अगर देहात इस तरह आलसी बने तो वे कभी सुखी नहीं बन सकते। हमें भगवान ने पैसा नहीं दिया है लेकिन हाथो की ताकत दी है उसका उपयोग करना चाहिये।

आपसी अनबन

दूसरी बात प्रेम की। देहात छोटे से छोटा भी क्यों न हो लेकिन वहां पर तीन गुट, चार पार्टियां, और पांच पक्ष होते हैं। इसका उसके साथ बनता नहीं और उसका इसके साथ बनता नहीं। मै एक देहात मे गया था। रात के करीब नौ बजे मैंने आग लगी हुई देखी। मैंने पूछा "यह आग कैसे लगी ?" तो लोगों ने कहा, "लगी नहीं, बल्कि लगाई गई है।" उस गांव मे धनिये का बड़ा व्यापार चलता था। दो आदमियो का झगड़ा था तो एक ने दूसरे के धनिये को आग लगा दी। मुझे यह भी कहा गया कि यह बात आज की नहीं, बल्कि हमेशा चलती है।

स्वराज्य का उदय काम से ही होगा

इस तरह हम न हाथो से काम करते है और न एक दूसरे से प्रेम करते है। तो फिर स्वराज्य की गरमी कैसे महसूस

होगी। आप किसी भी देहात में चले जाइये। आप को पाँच पचास आदमी बेकार बैठे हुए दिखाई देंगे। अगर आपको सभा करनी है तो किसी भी समय पचास लोग सभा के लिये आप को मिल ही जायगे। स्वराज्य आया कहते है। लेकिन वह है कहां? कपडा बाहर से खरीदते हैं, तेल, खल्ली, गुड बाहर से खरीदते हैं। इतना ही नहीं रस्सियाँ भी आप बाहर से मोल लेते हैं। तो फिर स्वराज्य काहेका? एक आदमी को प्यास लगी थी। अब पानी कहां से मिलेगा? उस से कहा गया कि पानी चालीस मील की दूरी पर पैनगंगा नदी में है। वह दुखी हुआ। एक दूसरा आदमी था जो पैनगगा नदी से एक मील के फासले पर था। वह भी प्यासा था। चालीस मील दूर रहने वाले आदमी ने उससे कहा "अरे तू क्यो दुखी होता है। पानी तो तेरे नजदीक पडा है।" उसने जवाब दिया, "अरे भाई नजदीक हुआ तो क्या हुआ। पानी गले मे उतरेगा तभी न प्यास बुझेगी।" इसी तरह स्वराज्य लंदन से दिल्ली आ गया, और दिल्ली से नागपुर या यवतमाल भी आ गया। लेकिन वह तुम्हारे क्या काम का। सूर्य जब तक आप के गॉव मे नहीं ऊगेगा, तब तक आप सूर्योदय हुआ ऐसा माननेको तैयार नहीं होंगे। स्वराज्य हमारे हाथ में है। हम और आप काम करने लग जायेंगे तभी स्वराज्य का उदय होगा।

रुंझा, जि० यवतमाल

ता० ११-३-५१

पाँचवाँ दिन—

: १ :

स्वराज्य-लक्ष्मी का आवाहन

स्वराज्य-सूर्य की गरमी महसूस नहीं होती

हमारे देश को स्वराज्य मिले अब तीन साल हो चुके; लेकिन स्वराज्य का असली दर्शन इस देश मे अब तक नहीं हो रहा है। सब जगह स्वराज्य का उदय सूर्योदय के समान माना जाता है। सूर्योदय के बाद अंधकार नहीं रहता। स्वराज्य आने पर भी सारी जनता उत्साह से काम करने लगती है, जिम्मेवार बनती है, परस्पर सहयोग बढता है, और हमारे देश की लक्ष्मी कैसे बढ़ेगी, हमारे देश का सौभाग्य कैसे प्रकट होगा इसकी चिंता सब लोग करते है। वैसा अनुभव इस देश मे अब तक नहीं आ रहा है, यह बड़े दुःख की बात है!

देश का उत्पादन कैसे बढ़ेगा

आज कल जो भी उठता है, कहता है कि देश की पैदावार बढनी चाहिये, उद्योग बढ़ने चाहिये। लेकिन पैदावार और उद्योग सिर्फ बोलने से नहीं बढते। खेती करनी पड़ती है और उद्योग भी करने पड़ते हैं। आज आपके गाँव मे कताई मंडल की स्थापना की गई है। मै वहाँ गया था। दो-चार लोग कात रहे थे। इस शहर

की आबादी करीब दस हजार की है। इन सब को कपड़ा लगता है। बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सब कपड़ा पहनते हैं; लेकिन सारा कपड़ा ये लोग मिल का ही खरीदते है। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि जिन मिलों में इतनी पूँजी और इतनी अकल खर्च हो रही है, वे हिंदुस्तान को कितना कम कपड़ा देती हैं। इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। पिछली लड़ाई के पहले हिंदुस्तान की मिलों में फी आदमी १७ गज़ कपडा तैयार होता था, अब लड़ाई के बाद याने दस साल बीत जाने पर फी आदमी १२ गज कपड़ा तैयार होता है। और इस साल कहा गया है कि हडताल आदि कारणों से कपडा और भी कम मिलेगा, करीब ११ गज़। १७ से १२ और १२ से ११। यह है मिलों का बारह साल का पराक्रम!

लोग दलील करते है, अब स्वराज्य आगया है तो मिलो को पूरा कपड़ा देना ही चाहिये। मै बहस मे नहीं उतरता। मै पूछता हू क्या आज मिले पूरा कपड़ा दे सकती है? मामूली धोती जोड़ा भी काले बाजार मे आज १५) २०) रुपये मे मिलता है। काला बाजार क्यों होता है? कपड़ा थोड़ा है। श्रीमान लोग चाहे जितना दाम देने को तैयार होते है। इस लिये कपड़े की कीमत बढती है और गरीब लोगों को पूरा कपडा नहीं मिलता।

इस हालत मे लोग अगर खुद कातने लग जाँय और रोज का एक घंटा भी दे तो साल भर में फी आदमी १५ गज कपड़ा तैयार होगा। मै कहता हू आधा घटा भी वे दें तो साढ़े सात गज

कपड़ा तैयार होगा। मिलो मे बारह गज होता है उसमे यह साढ़े सात गज और बढेगा तो देश को अधिक कपड़ा मिलेगा या नहीं ? लेकिन यह सब बिना किये कैसे होगा ? मै विवाद मे नहीं पडता। मिलो के जरिये अगर कपड़े का सवाल हल हो सकता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता तब तक आप घर में सूत कातेगे, तो देश की सपत्ति मे वृद्धि होगी या नहीं ?

आज की जरूरत

आपके एक गॉव ने अपना कपडा तैयार करने का सकल्प अगर किया तो बहुत बड़ा काम होगा। जो बात कपडे पर लागू है वही दूसरी चीजों पर भी है। मै उम्मीद करता हू कि जिन लोगो ने यहाँ कताई मडल कायम किया है वे हारेंगे नहीं। खुद कातते रहेंगे, अपने मित्रो को सिखायेंगे, और इस तरह अपना मडल बढाते जायेंगे।

लोग कहते है, इस ज़माने मे अगर हम चरखे पर सूत कातेंगे तो पुराने ज़माने मे चले जाते है।' मै उनसे कहता हू 'पुराना जमाना और नया जमाना' इस बहस मे क्यो पडते हो ? आज आपको कपड़ा चाहिये। मिले कपडा देती है, वैसे चरखा भी देता है। फिर चरखे पर सूत कातकर कपडा बना लेने मे क्या हर्ज है ? मैने सुना है पाढ़रकवड़े की आबादी पहले नौ हजार थी अब आठ हजार होगई है। यह एक हजार संख्या कैसे कम हो गई ? तो कहा गया कि यहाँ मजदूरी नहीं मिलती इसलिये

मजदूर गाँव छोड़कर शहर मे चले गये है। लेकिन वहाँ भी उनको क्या उद्योग मिलने वाला है? देश में जब तक उद्योग नहीं बढते है तब तक लोगों को मजदूरी कैसे मिलेगी? स्वराज्य मिलने पर भी हम अगर आलसी रहें तो हमारा स्वराज्य भी सुस्त ही रहेगा। हम उद्योगी बनेंगे तभी स्वराज्य में लक्ष्मी रहेगी। लक्ष्मी का ऐसा बाना है कि वह उद्योगी पुरुष के घर में ही रहेगी। स्वराज्य आया है इसका अर्थ इतना ही है कि हमारी रुकावटे दूर हो गयी है, और काम करने की उमंग बढी है। लेकिन एक बात साफ है कि देश का हरेक मनुष्य जब तक उत्पादन मे हाथ नहीं बटायेगा तब-तक हमारे देश को सुख के दिन नसीब नहीं होंगे।

पाढरकवडा, (जि० यवतमाळ)
१२-३-५१

छठा दिन—

: १० :

नाम जैसा ही काम

पैदल यात्रा क्यों ?

अभी सर्वोदय संमेलन हैद्राबाद के नजदीक शिवरामपल्ली में होने जा रहा है। अगर इन दिनो रेलवे से जाते हैं तो वर्धा से हैद्राबाद एक रात का रास्ता है। लेकिन हमने तो सोची पैदल-यात्रा। और उसमें भी कोशिश यह करते है कि बने जहां तक छोटे छोटे गांवो में पहुचें। अब लोग पूछ सकते हैं कि क्या आप रेलवे या विमान आदि नहीं चाहते हैं ? मैं कहता हूं कि ऐसी बात नहीं है। उलटे मै तो आज से भी अधिक गति वाले विमान चाहता हू। अगर घटे भर मे हम दिल्ली जा सकें तो जरूर जायेंगे। लेकिन हर चीज का अपना स्थान होता है। ऐनक की चाहे जितनी भी महिमा गाई जाय तब भी आंख की महिमा से वह नहीं बढ़ सकती। ऐनक आंख की मददगार है। लेकिन आंख की स्वयंभू महिमा है। वैसे हम विमान और दूसरे भी गतिमान साधन चाहते है। हमें उनसे नफरत नहीं है। फिर भी पांव की जो प्रतिष्ठा है सो है। पैदल-यात्रा के जो लाभ हैं वे विमान से हरगिज नहीं मिल सकते।

भारतवर्ष एक कैसे बना

हमारे पूर्वजों ने यात्राओं की महिमा बहुत गायी है। काशी-वाले को कहा कि तुमको रामेश्वर के दर्शन करने चाहिये। वैसे

तो काशी में भी गंगाजी है, विश्वनाथजी है। लेकिन उनके बावजूद काशीवाले की इच्छा होती है कि जिंदगी-भरमे कभी रामेश्वर हो आऊँ तो अच्छा है, और गंगाजी का पानी रामेश्वर के मस्तक पर चढाऊँगा तो धन्य होऊँगा। तो इधर रामेश्वरवाले को क्या लगता है ? उसको शास्त्रकारो ने सिखाया कि समुद्र का पानी उठा लो और काशी ले जा कर विश्वनाथजी के मस्तक पर चढाओ। इस तरह काशीवाले को रामेश्वर की प्रेरणा और रामेश्वरवाले को काशी की प्रेरणा। दोनो के बीच पन्द्रह सौ मील का अतर। रेलवे तो उन दिनो थी नहीं। तो पैदल-यात्रा की ऐसी प्रेरणा हमारे पूर्वजो ने दी थी, और हजारो लोग जिंदगी-भरमे प्राय पैदल जाने की हवस रखते थे। उससे लोगो के दिल एक-दूसरे से एकरूप हो जाते थे। यह एक ऐसा तरीका उन्होंने निकाला कि सारा भारतवर्ष एक बन गया।

पैदल-यात्रा में पारमार्थिक बुद्धि

आज हम देखते है कि इतने साधन बढ जाने पर भी देश मे जातीयता बढ रही है, प्रांतो प्रातो मे वाद बढ रहा है। यह सब किस लिये हो रहा है ? इसीलिए हो रहा है कि लोग ज्यादा स्वार्थी बने है। वे दूर दूर जाते है तो मतलब के लिये जाते है। कोई बबई जाता है तो कोई कलकत्ता जाता है। रोज गाडी भर भर कर जाती है। लेकिन टिकट घर पर जा कर देखो क्या तमाशा दीखता है। किसी को किसी की दरकार नहीं होती। हरेक अपनी अपनी टिकट कटाने की धुन मे होता है। एक दूसरे की पूछ परख करने को फुरसत नहीं

और एक दूसरे की परवाह भी नहीं। रेल की मुसाफिरी तो बहुत बढ़ी है लेकिन उसके पीछे स्वार्थ है। अब पैदल अगर कोई मुसाफिरी के लिये निकलेगा तो क्या स्वार्थ ले कर जायगा। यहां तो काफी मुसीबतो का सामना करना पडता है। और दिन भी बहुत जायेंगे। अगर पारमार्थिक बुद्धि है तो ही यह काम किया जायगा। और पारमार्थिक बुद्धि से होनेवाले लाभ स्वार्थी बुद्धि से कभी नहीं मिल सकते। कोई अगर विमान मे बैठ कर काशी या रामेश्वर पहुंच जाय तो यात्रा का जो फल है, उससे चित्त-शुद्धि की, देशनिरीक्षण की और जनता मे एकरूप होने की अपेक्षा कभी नहीं पूरी हो सकेगी। इसलिए हमने सोचा कि हम अपने देशवासियो से मिलने-जुलने, उनसे बातचीत करते करते सर्वोदय समेलन के लिये जायगे।

नाम अच्छे हैं लेकिन काम अच्छे चाहिये

आप पूछेंगे भला यह सर्वोदय क्या चीज है? अच्छे अच्छे नाम तो आज कल बहुत चल पडे है। कोई अपने को समाजवादी कहते है। वे कहते है कि सारा समाज एक है और हम सारे समाज के सेवक हो जायेंगे। अपना अलग कोई व्यक्तित्व नहीं रखेंगे। निजी स्वार्थ जैसी कोई चीज नहीं। सारा समाज को समर्पण। इसका नाम है समाजवाद। कोई कहते है कि हम साम्यवादी है। सब के साथ समान व्यवहार होना चाहिये। न कोई ऊंच और न कोई नीच होना चाहिये। जाति का या अन्य कोई स्वार्थ नहीं होना चाहिये। पूरा साम्य होना चाहिये यह हमारा उद्देश्य है। बहुत अच्छा उद्देश्य

है । साम्यवाद शब्द भी अच्छा है, समाजवाद शब्द भी अच्छा है। अब यह नया शब्द निकला "सर्वोदय"। यह भी अच्छा है। अच्छे शब्द तो बहुत निकले है लेकिन हमें काम अच्छे करने चाहिये तभी ये शब्द काम देगे। नहीं तो वे हवा मे रह जायेगे। हमे तो इनको जमीन पर लाना है। सर्वोदय का मतलब है 'हरेक का भला।' याने एक का स्वार्थ दूसरे के स्वार्थ के विरोध मे, या दूसरे की परवाह किये बगैर अपना स्वार्थ साधना यह बात नहीं होनी चाहिये। हम सब एक हैं और हम सब का उदय। यह है सर्वोदय का अर्थ। तो सर्वोदय में सब से जो पिछड़े हुए होते है उनकी फिक्र करना पड़ता है। इसीलिये हमने सोचा है कि हम छोटे-छोटे गाँव में पहुचें और हो सके तो वहां मुकाम करे।

भारत की सभ्यता देहातों में ही

आखिर यह हिंदुस्तान है कहां? हिंदुस्तान का प्रेम, भारत-माता का अभिमान, देशभक्ति आदि बातें हम सुनते हैं। लेकिन देशभक्ति याने क्या देश की जो मिट्टी होती है उसकी भक्ति? वह तो जो हमारे देश मे है वैसी दूसरे देशों में भी पड़ी है। भारतमाता की भक्ति का यही मतलब है कि अपने जो लाखो भाई देहातो में पड़े है उनकी भक्ति, उनकी सेवा, उनपर प्रेम। इन छोटे देहातो के इतिहास कौन लिखेगा? बड़े शहरों के तो इतिहास लिखे जा चुके है। रोम एक बडी भारी नगरी हो गई। उसका इतिहास सुनो। लेकिन छोटे गांवों का इतिहास जब कोई लिखने बैठेगा तब उसको पता चलेगा कि ये गाँव दीखने में तो छोटे छोटे हैं लेकिन अति प्राचीन

काल से चले आ रहे हैं। ये देहात ही हिंदुस्तान की रगे है, असलियत है, आत्मा है। हिंदुस्तान की जो संस्कृति और सभ्यता है वह देहातों में देखने को मिलती है। आज भी हमारी पुरानी सभ्यता जितनी हम देहात में पाते हैं उतनी बड़े शहरों में नहीं पाते। एक मिसाल देता हूं। कल हमारी सभा एक शहर मे हुई और आज की सभा देहात में हो रही है। कल की सभा मे तो क्या शोर ही शोर मचा था। आज यहां भी छोटे बच्चे हैं लेकिन सारे शांति से सुन रहे है। ऐसा क्यो होता है? इसका कारण यही है कि प्राचीन काल से हमारी जो सभ्यता चली आ रही है उसका अंश देहातों में मौजूद है। देहातो मे आप देखेंगे कि वहां के लोग बहुत दीन बन गये है, खाने को भी उनको पूरा नहीं मिलता। लेकिन साथ साथ यह भी देखेंगे कि किसी के घर पर अगर भूखा आदमी पहुंच जाय तो किसी-न-किसी तरह उसको खिला ही देते है। उसका आदर करते है। गरीब से गरीब के घर में भी अतिथि का सत्कार पहले से आज तक होता आया है। इसका अर्थ यही है कि भारत की संस्कृति और भारत की आत्मा देहात में है। देहातों के काम करने के औजार भी करीब करीब पुराने जमाने के ही है। पुराने जमाने का ऋषि अगर आज देहात में आ जाय तो देहातियों की पोषाक मे वह जरूर फरक देखेगा, लेकिन उसके जमाने की भावना का अंश वह आज देहातों में जरूर देखेगा, इसमें संदेह नहीं है।

देहात की करुण हालत

लेकिन आज इन देहातो मे किसी को कुछ आकर्षण ही नहीं है। न यहां कोई मजा है, न यहां कोई सिनेमा है और न और कोई समाँ है। यहां कुछ है ही नहीं। शहर का आदमी यहां आता है तो कहता है यहां कुछ सूझता ही नहीं। देहातो में से भी बुद्धिमान लोग शहर मे जा कर रहने लगे हैं। अगर कभी देहात में आते है तो उनकी जो कुछ इस्टेट यहा पडी होती है उसको देखने या यहा से कोई चीज उठा ले जाने के लिये आते है। लेकिन अपनी सारी अकल वह शहर को समर्पित कर देता है। अगर इस तरह देहात का धन, देहात की अकल शहर मे चली जाय तो सारे देहात कंगाल हो जायेगे और मिट जायेगे। शहरों की आबादी बढ रही है। बीस साल पहले वर्धा शहर बीस हजार आबादी का था। अब कहते है कि चालीस हजार का हो गया है।

देहात का सर्वांगी विकास

इसलिये सर्वोदयवालो का काम है देहात की चिंता करना, उनकी देख-भाल करना। यह किस तरह होगा? देहातियों के जो उद्योग है वे उनके हाथ मे रखने चाहिये। देहात के कुछ उद्योग ऐसे है जो उनके हक के है। वे अगर उनसे कोई छीन लेगा तो उसके खिलाफ बगावत करनी चाहिये और कहना चाहिये कि ये हमारे उद्योग है, हम नहीं छोड़ेंगे। जिन उद्योगों का कच्चा माल देहात मे होता है उनका पक्का माल करने का उद्योग देहात में ही होना चाहिये। सिर्फ किसानी से याने

खेती से किसानों का कारोबार नहीं चलेगा। खेती के साथ गोसेवा का काम, कपड़ा बनाने का काम, कोल्हू चलाने का काम, गुड बनाने का काम, मकान बनाने का काम, यह सारा देहात मे बनना चाहिये। ऐसा होगा तभी देहात ताजा-तवाना होगे और दुनिया के सामने हिंदुस्तान हिम्मत के साथ खडा रहेगा।

देशकी की रक्षा देहाती ही कर सकेंगे

देहात अगर क्षीण होते गये तो अपने देश की रक्षा सिर्फ शहरवालो के भरोसे नहीं हो सकेगी। देश के लिये मर मिटने का प्रश्न आयेगा तब देहात के लोग ही मरने के लिये तैयार होगे। क्योंकि अपने वतन का खेती का अभिमान और उसकी रक्षा करने की तीव्र वासना देहात को ही हो सकती है। क्योंकि देहातवाले जमीन से चिपके हुए है। हिंदुस्तान जैसा देश अपनी रक्षा के लिये अगर सिर्फ शहरवालो पर निर्भर रहा तो खतरे मे रहेगा। इसकी रक्षा तो देहातियो से ही होगी। इसलिये सर्वोदय वालों ने यह सकल्प किया है कि हम देहातियो की सेवा करेंगे। और यही आप को कहने के लिये मै आपके सामने उपस्थित हुआ हू। भाइयो, सर्वोदय का विचार देहातियो की दृष्टि से थोडे मे मैने आपके सामने रख दिया है।

पाटणबोरी, (जि० यवतमाळ)
१३-३-५१

सातवाँ दिन—

:११:

आत्म-जाग्रति से ही दुख मिटेगा

हरिनामसंकीर्तन का कार्यक्रम

आप लोग शायद जानते है कि हम लोग पैदल निकल पड़े हैं और हैद्राबाद मे सर्वोदय समेलन के लिये जा रहे है। जब मैंने पैदल चलने का सोचा तो एक भाई ने पूछा, "एक दिन के काम के लिये आप एक महीना लगा रहे हैं तो इस बीच आपका क्या कार्यक्रम रहेगा।" मैंने जवाब दिया, "मेरा कार्यक्रम तो यही रहेगा कि मै हरिनाम लू और सब को लेना सिखाऊ।" यह जवाब

आश्चर्य की बात भी नहीं है। हमारा देश बहुत बड़ा है। फिर हमारी आजादी को भी अभी कितने साल हुए हैं? जिम्मेवारी एकाएक आ पड़ी इसलिये हमारे देश की नौका गहरे पानी में आ पडी। इन सबका हल एक राम-नाम के सिवा और किसी मानवी प्रयत्न मे है, ऐसा मैं नहीं मानता हू।

आखिर हरिनाम का क्या मतलब है ? जो हरिनाम लेगा वह और कोई नाम नहीं ले सकता। हमारे संतों ने हमें सिखाया है कि भाई, परमेश्वर की उपासना और पैसे की उपासना दोनों बाते साथ नहीं चल सकतीं। यदि आप अपने मन मे परमेश्वर को स्थान देते हैं तो फिर दूसरी किसी चीज को आपके मन मे स्थान नहीं हो सकता। हमारे यहां कई प्रकार के भेद पड़े है। इन्होंने हमारा रास्ता रोक रखा है। अगर ये मिटते हैं तो हमारा रास्ता साफ हो जाता है, और देश एक हो जाता है। हमारे देश मे धर्म अनेक है यह बात दुख की नहीं है बल्कि सौभाग्य की है। जहां अनेक धर्मों की सम्मिलित उपासना होती है वहां धर्मों की यह विविधता देश के विकास मे मददगार ही होती है। हिंदुस्तान के विकास में यहा के विविध धर्मों ने काफी मदद पहुचाई है। भिन्न भिन्न धर्मों के जरिये एक परमेश्वर का नाम हम लें तो हजारो भेद मिट सकते है।

हरिनाम में भेद मिटाने की शक्ति

एक दूसरे की भाषाओ का हमे अध्ययन करना चाहिये। हमारे विविध साहित्यों में अनेक खूबियां भरी है। लेकिन यहा तो एक दूसरे की भाषा का भी द्वेष शुरू हुआ है। कोई भी साहित्य द्वेष पर नहीं टिक सकता। इसी तरह प्रांत-भेद, प्रदेश-भेद, पक्ष-भेद भी हम मे है। हिंदुस्तान मे दुख तो सब तरफ पड़ा है। हमें जरूरत है सिर्फ सेवा में लग जाने की। पक्ष भेद आदि से सुरक्षित रहने की तरकीब अगर कोई है तो वह भगवान का नाम ही है। मैं लोगों को यह सुनाऊंगा कि हम सारे भगवान के पैदा किये है। वे

परमपिता है और हम सब उनके पुत्र है। हम अगर आपस में लड़ेंगे तो उनको बहुत दुख होगा। "अमृतस्य पुत्रा." सब के सब अमृत के पुत्र है। देह को क्या देखते हो? आखिर सब को खाक मे ही मिलना है। फिर कौन सी खाक ब्राह्मण की है, कौनसी हरिजन की है या और किसी की है, यह पहचाना भी नहीं जायगा। आत्मा एक है, उसीका ध्यान रखो। हम देह मे इसीलिये आये है कि अपने पडोसियो की, दीनो की और सबकी सेवा हम करे और परस्पर प्रेम करे। इसी मे मानवदेह की सार्थकता है। और यही हरिनाम का अर्थ है।

और जो हरिनाम लेनेवाले है उनको सेवा म लग जाना है। पानी निकलता है समुद्र की ओर जाने के लिये; लेकिन रास्ते मे जो कुछ सेवा वह कर सकता है करते हुए जाता है। समुद्र तक पहुचने मे अगर वह कामयाब रहा तो वहा तक पहुच जाता है। अगर न पहुच सका तो रास्ते मे ही खतम हो जाता है। वैसे हमारी कोशिश यही होनी चाहिये कि हमारी जो भी ताकत है उसमे हम दीन-दुखियो की सेवा करे।

दोनों हाथों का उपयोग कर

वैसे हिंदुस्तान मे क्या कम है। जमीन पडी है, कितनी ही नदिया है, फिर भी हम भीख मांगते है। न खाने को अन्न है और न पहनने को कपडा। मेरी समझ मे नही आता कि परमेश्वर ने हमे दो हाथ दिये है तो हमे हाथो से काम करने मे क्या आपत्ति है? मानव की ही यह विशेषता है कि उसको भगवान ने दो हाथ

दिये है, जिससे कि वह कर्मयोग साध सके। स्वर्ग मे देवता सुख ही सुख भोगते है, तो पृथ्वी पर जानवर दुख ही दुख भोगता है। जहा केवल भोग ही भोगना है वहा योग कैसे सधेगा? मनुष्य योनि मे कर्मयोग की साधना हो सकती है इसीलिये देव योनि और पशु योनि से मानव योनि श्रेष्ठ समझी गयी है। तो भगवान ने हमे दो हाथ दिये यह उसकी बहुत बडी देन है। उनका हम उपयोग करेगे तभी हमारे दुख मिटेगे।

स्वराज्य के सही माने क्या है?

लोग कहते है स्वराज्य आ गया। क्या किसी पार्सल से आया है? स्वराज्य तो अपना निज का होता है। अपनी कमाई का होता है। स्वराज्य आया इसका अर्थ इतना ही है कि उजाला हो गया। अब काम करने मे सहूलियत हो गई। लेकिन हम अगर काम ही न करे तो सिर्फ उजाले से क्या होनेवाला है? स्वराज्य नही था तब हम जिम्मेवारी अधिक महसूस करते थे। अब सभी कहने लगे है कि सब कुछ सरकार को ही करना चाहिये। मै पूछता हू कि सरकार आप से भिन्न है क्या? आप जिसे चाहते है उनको वोट दे कर चुन लेते है। आप अगर मजबूत बनेगे तो आप-की सरकार मजबूत बनेगी। और आप दुर्बल रहे तो आप की सरकार भी दुर्बल ही रहेगी।

लोग कहते है कि अब तक हमने बहुत काम किया अब कुछ आराम करने दो। मैं कहता हू आराम कैसा? क्या पौर्णिमा आ गई है? अभी तो अमावस्या खतम हुई है और चांद धीरे धीरे

बढ़ेगा। कुछ लोग कहते हैं अब तक हमें काँग्रेसवालों से आशा थी अब आप सर्वोदयवालों पर आशा रखी है। यह कितना बड़ा भ्रम है। सर्वोदय समाज कोई अमृत की पुड़िया तो नहीं है जिसे खा लिया और सर्वोदय अपने आप हो गया। हमको ऐसा व्रत लेना होगा कि हमारे जीवन के लिये हम दूसरे की सेवा नहीं लेंगे, बल्कि हो सकेगी उतनी दूसरे की सेवा करेंगे। ऐसा जो करते हैं वे सर्वोदय-समाज के सेवक बनेंगे। सर्वोदय-समाज सब का है। वह किसी प्रकार की शहादत नहीं मागता। जो कहता है कि मुझे सर्वोदय समाज के उसूल मान्य हैं वह सर्वोदय समाज का सेवक है। कोई शराबी भी अगर सर्वोदय की बात मान कर शराब पीना कम कर देता है तो वह भी सर्वोदय-समाज का सेवक है।

आत्मा की पहचान ही सब दुख दूर करेगी

किसी ने मुझे बताया कि ढाई साल पहले यहां रजाकारों का बहुत जुल्म था। अब वह चला गया है फिर भी हमें दुख है। ऐसा होता ही है। जब तक मनुष्य की निज की आत्मा जाग्रत नहीं होती तबतक एक दुख मिटता है तो दूसरा शुरू होता है, पेशवाओं के राज मे लोग दुखी थे। उनके बाद अंग्रेजों का राज आया। उनका पहला गवर्नर माउंट एलफिन्स्टन हुआ। उसकी व्यवस्था मे हमारे लोगों ने सुख समझा। लोगों ने देखा कि सारे काम इनके जमाने में समय पर चलते हैं, व्यवस्था अच्छी है। राज कानून से चलता है। यह सब देख कर लोग बड़े खुश हुये, लेकिन थोड़े ही दिनों में लोग दुखी हो उठे। डाक्टरी इलाज का

ऐसा ही है। एक बीमारी के लिये दवा देते हैं, वह बीमारी अच्छी हुई ऐसा लगता है इतने में दूसरी बीमारी शुरू होती है। हिंसा में ऐसा ही होता है। रजाकारों से हमको किसने छुड़ाया। पुलिस ने और हथियारों ने। उससे हम तो पराधीन ही रहे। जीवन में कुछ परिवर्तन ही नहीं आया। इस तरह से जीवन सुखी नहीं होगा।

सर्वोदय के कार्यक्रम में रस क्यों नहीं ?

लोग कहते है कि सर्वोदय के कार्यक्रम में रस नहीं आता। तो अब मै क्या प्रोग्राम बताऊं? पाकिस्तान से लड़ाई छेड़ने का प्रोग्राम दूं? लड़ाई के नाम से लोगों मे उत्साह आता है, लेकिन वे यह नहीं सोचते कि फौज पर देश का पचहत्तर फी सदी से अधिक खर्च होता है। तो फिर गरीबों की सेवा कैसे कर सकेंगे?

सारे मानव-सेवक बनें

भाइयो, मुझे इतना ही कहना है कि आप सब भेद भूल जाँय। आड़े गंध और खड़े गंध, भस्मी और बिना भस्मी, सर्वोदय वाले और बिना सर्वोदयवाले ये सब भेद मिटा कर आप एक भाव रखिये कि मैं मानव हूं और मानव का सेवक हू।

-आदिलाबाद (निजाम स्टेट)

१४-३-५१

आपने एक बड़ा अच्छा काम किया है। यहाँ का कुआँ और हनुमानजी का मंदिर सबके लिये, हरिजनों के लिये भी, खोल दिया है। यह काम मुझे बहुत अच्छा लगा। भगवान के सामने भेद-भाव रखना गलत बात है। हरिजनों के साथ छूत-छात रखना और उन्हें मंदिरों में आने से रोक-टोक करना अच्छी बात नहीं है। इसलिये आपने जो काम किया है वह बहुत अच्छा है।

फिर आप लोगों ने पानी आदि का छिड़काव देकर यह प्रार्थना की जगह साफ कर ली यह भी बहुत अच्छा किया। इससे आप लोगों को शिक्षण भी मिला।

पशु बलिदान गलत चीज

मैंने सुना कि यहाँ आप लोगों के दो देव है। एक हनुमानजी हैं और दूसरी है पोचम्मा देवी। यह देवी कौन है? उसे तो मुरगी चाहिये। बकरा भी चाहिये। क्या अपने बच्चों को खानेवाला भी कोई देव हो सकता है? इसलिये आप एक ही देवता की पूजा करे। और सब देव झूठे है। उसके नाम पर बकरे और मुरगी काटना धर्म नहीं हो सकता।

बुनकर क्यों नही?

मैंने और एक बात देखी। इस गाँव में बढई, लुहार, चमार कुम्हार तो हैं। लेकिन बुनकर नहीं है। मैं परेशान रह गया। कपड़ा तो आप सबको चाहिये। बच्चे, बूढे, स्त्री, पुरुष सबको। इतने पुरुष यहाँ बैठे हैं सब कपड़ा पहने हैं। लेकिन, सारा कपड़ा खरीदा

जाता है यह शरम की बात है। गाँव का धन इस तरह बाहर भेजना ठीक नहीं है। मैंने यह भी सुना कि यहाँ स्त्रियाँ दोपहर में खेती पर नहीं जातीं। सिर्फ सबेरे ही खेत पर जाती है। याने उनके पास वक्त रहता है। उन्हें कातना सिखाया जाय तो वे कातेंगीं। भगवान ने मनुष्य को दो बड़ी भारी शक्तियाँ दी हैं। एक वाणी, दूसरी हाथ। वाणी से भगवान का नाम लेना चाहिये, हाथ से भगवान का काम करना चाहिये।

वैसा आप करेंगे तो आप जो भजन करते है वह कृतार्थ होगा। भगवान आप सबको ऐसी प्रेरणा दें, ऐसी प्रार्थना है।

कुचलापुर अर्थात् कौसल्यापुर
१५-३-५१

आगे चल कर बड़ा होनेवाला है और उसकी हिफाजत करती है, उसकी सेवा करती है। वैसे आप भी इस केंद्र की कीजिये।

कस्तूरबा की महत्ता

इस केंद्र का नाम है कस्तूरबा ग्रामसेविका केंद्र। कस्तूरबा गांधीजी की पत्नी थी यह तो आप जानते ही हैं। जैसे गांधीजी पढ़े लिखे थे वैसी कस्तूरबा नहीं थीं। लेकिन उनका भाग्य बड़ा था। गांधीजी और कस्तूरबा ये नाम आज जैसे सार्वभौम हो गये हैं वैसे ही वसिष्ठ और अरुंधती के नाम थे। आज भी विवाह-विधि में वधू और वर को उत्तर दिशा की तरफ मुह करके खड़ा करते हैं और अरुंधती की तरफ इशारा करते हैं। उत्तर दिशा में वसिष्ठ का तारा है और पास ही चार अंगुलियों के फासले पर अरुंधती का छोटा-सा तारा है। इन दो तारकाओं के दर्शन करके उनको नमस्कार कराने की विधि आज भी विवाह मे चलती है। कौन वसिष्ठ और कौन अरुंधती ? लेकिन वसिष्ठ के साथ अरुंधती का नाम भी अमर हो गया है। देह के पास छाया होती है। लेकिन मनुष्य छाया की ओर ध्यान नहीं देता है। फिर भी छाया मनुष्य को छोड़ती नहीं है। अरुधती का ऐसा ही था। उसका व्रत था कि पति के साथ रहना, सुख में या दुख मे। वह सकट में पड़ेगा तो उसके पीछे सकट में पड़ना, और वह स्वर्ग में जाय तो उसके पीछे स्वर्ग में जाना। कहीं न ठहरते हुए जाना इसी व्रत के कारण तो उसका नाम "अरुंधती" पड़ा। ऐसा ही दूसरा नाम सीता का है। हम "राजा राम" के साथ साथ "सीता राम" भी कहते हैं।

रामचंद्रजी वनवास के लिये निकले तो वह भी उनके पीछे निकली। रामचंद्रजी ने कहा, "पिताजी ने तुझे तो वनवास नहीं कहा है।" सीता ने जवाब दिया, "आप सुखोपभोग के लिये कहीं निकलते तो शायद मै न आती, लेकिन आप जंगल मे जा रहे हैं इसलिये मैं आये बगैर नहीं रहूंगी।"

इन उदाहरणों के जैसे ही गांधीजी और कस्तूरबा थी। जहां जहां गांधीजी गये वहां वे गयीं। और आखिर सरकार के साथ सत्याग्रह के युद्ध में लड़ते हुए गांधीजी के साथ जेल गयीं और वहीं गांधीजी की गोद मे उन्होने प्राण छोड़ दिये। कस्तूरबा के स्मरणार्थ यह काम शुरू हुआ है। तो आप लोग इस काम में सहयोग दें और इस केंद्र से लाभ उठायें ऐसी मेरी आप से प्रेमपूर्वक प्रार्थना है।

माडवी, (जि. आदिलाबाद)

१६-३-५१

दसवां दिन—

: १४ :

सेवा ही तीर्थ-यात्रा है

गाँव की फिक्र गॉववाले ही करें

मै आज आपका गाँव घूम आया। यहां काफी शक्ति ह। दो-चार घरों मे कातना चलता है। हर घर मे क्यो नहीं चलना? आपके गॉव में कपास बहुत होती है। पहले हमारे यहा सब कातते थे और खेती भी करते थे। तब खेती ज्यादा थी और लोग कम थे। इसलिये खेती मे ज्यादा समय जाता था। आज खेती कम है और लोग ज्यादा हैं। फिर कातने के लिये समय क्यो नहीं मिलेगा? मै आप लोगों को दोष नहीं देना चाहता। यह स्थिति हर गाँव में है। इसे बदलने के लिये हर गाँव में कार्यकर्ता चाहिये। अब कार्यकर्ता हर गाँव में बाहर से कैसे आयेगे? इसलिये गाँव में से ही कार्यकर्ता निमाण होने चाहिये।

हम लोगो को एक आदत पड गई है कि हम अपने परिवार के बाहर नजर नहीं देते। घर का कचरा पडौसी के दरवाजे पर डालते है। घर के बरतन साफ रखेंगे लेकिन गाँव का कुआ साफ नहीं रखेंगे। सोचते हैं कि वह तो सब का है मैं क्यों फिक्र करूं? लेकिन चेचक एक को भी हो जाय तो सारे गाव में फैलती है। इसलिये सारा गाँव मेरा और सारे गाँव वाले मेरे इस तरह सोचेंगे तो

गांव वैकुंठ बन जायगा। लेकिन आज तो मैं इतना ही चाहता हूं कि हर गांव में कम-से-कम एक कार्यकर्ता निर्माण होना चाहिये। हिंदुस्तान में यह खूबी है कि जिस गांव मे कोई अच्छा आदमी होता है उसके पीछे लोग चलते हैं। मांडवी में अभी मैं गया था। वहां एक अच्छे भाई हैं तो लोग उनके पीछे जा रहे हैं। आप से मेरी प्रार्थना है कि आप अपने गाव के बारे में आज से ही सोचना शुरू करें। जिस गांव में लोग सारे गांव का नहीं बल्कि सिर्फ अपने बारे में ही सोचते हैं वह गांव नहीं बल्कि स्मशान है।

दुखियों की सेवा कीजिये

लोगों को एक ही स्थिति मे समाधान नहीं होता। मन की शाति के लिये वे तीर्थ-यात्रा करते हैं। लेकिन हम अगर एक दूसरे की सेवा करेंगे और चिंता करेंगे तो तीर्थ-यात्रा की जरूरत नहीं रहेगी। खाने का आनद तो पशु को भी होता है। लेकिन खिलाने का संतोष मनुष्य को ही होता है। आपके गाँव में एक भी दुखी आदमी नहीं रहना चाहिये। दुखी आदमी किस जाति का है यह भी नही देखना चाहिये। दुखी लोगों की अलग जाति नहीं होती। वह दुखी है यही उसकी जाति है। वैसे ही पुण्यवान लोगों की भी जाति नहीं होती। आप ने सुना है कि साधु संत सब जातियों में हो गये। हम महात्माओं की जाति नहीं देखते। सब महात्मा महात्मा हैं। वैसे सब पापी पापी ही है। मरने के बाद परमात्मा यह नहीं पूछेगा कि तुम ब्राह्मण हो या

रेड्डी। वह यही पूछेगा कि तुमने पाप किया है या पुण्य। यह जो ढबू पैसा आप कमा रहे है वह साथ नहीं जानेवाला है। इसलिये जिसके पास जो भी धन है वह लोगो की सेवा में लगा दे। तभी आप भगवान के सामने खडे रह सकेंगे।

तलमगु (जि० आदिलां)
ता० १७–३–५१

ग्यारहवाँ दिन —

: १५ :

ग्रामोद्योग न छोड़ें

पक्के रास्ते के खतरे

हम लोग वर्धा से हैद्राबाद पैदल जा रहे हैं। आप लोग भी यात्रा के लिये जाते है। यात्रा के लिये पैदल ही जाने का रिवाज है। हमारा रास्ता तो आदिलाबाद से इस गाँव से हो कर जाता है। लेकिन रास्ता छोड़ कर मैं माडवी हो आया। आदिलाबाद जिले मे जंगल ज्यादा है। देहातों के रास्ते भी अच्छे नहीं हैं। बहुत लोगों को लगता है कि अच्छे रास्ते न होना बड़े दुःख की बात है। शहर वाले सोचते है कि रास्ते अच्छे बनाना ही पहली सुधार की बात है। हमारे गाँव वाले भी भोले होते हैं। कहते हैं कि हां रास्ते बनने चाहिये। लेकिन मै सोचता हूं कि देहातो में रास्ते बन जायेंगे तो उनका कल्याण होगा या अकल्याण? रास्ता अच्छा बन जाता है तो सुभीता हो जाता है सही। लेकिन किन लोगों का सुभीता होता है? सब से ज्यादा सुभीता शहरवालों को होता है। वे यहां आसानी से आ सकते हैं और देहातों को लूट सकते हैं। देहातों में रास्ते नहीं बनने चाहिये, यह मुझे नहीं कहना है। लेकिन रास्ते बनने पर क्या आपत्ति आती है यह मैं समझा रहा हूं। आप के नजदीक के एक गांव में मै कल घूम आया था।

वहां मैंने देखा कि कई उद्योग चल रहे है। रंगारी का काम चल रहा था। वहां रास्ता अच्छा नहीं था इसलिये वह रंगारी का धंधा चल रहा है। लेकिन रास्ता पक्का बन जाने के बाद रंगारी का धंधा जिंदा नहीं रहेगा। कुछ देहातो मे चरखे चलते हुए भी देखे। लेकिन मोटर-रोड हो जाने पर वे कहीं भी दिखाई नहीं देगे। कुछ घरो में हाथ की चक्की चलती हुई देखी। मै बहुत खुश हो गया। लेकिन रास्ता बनने के बाद कोई पूंजीवाला यहां आ कर मिल की चक्की शुरू कर देगा और सारे देहात वाले अपनी चक्कियां छोड कर उस मिल के गुलाम बनेंगे।

पीसने का व्यायाम

एक गॉव की बात है। वहा एक मुसलमान रहता था। उसकी बीबी बीमार हो गई। उस आदमी की मुझ पर श्रद्धा थी। उसने मुझे बुला लिया और क्या इलाज करना चाहिये इसके संबंध मे मेरी सलाह मांगी। मैने देखा कि उस बहन को सिवा बदहजमी के और कोई बीमारी नहीं है। मैने पूछा कि घरमें आटा कौनसा आता है? जवाब मिला कि मिल का आता है। फिर मैने सलाह दी कि आप एक चक्की घर में लगा दीजिये और बड़ी फजर उठ कर थोड़ा पीसते जाइये। उस आटे की रोटी खाते जाइये। सारा रोग दूर हो जायगा और आज से दुगुनी भूख लगेगी। उसने वैसा ही किया। वह बहन धीरे धीरे चक्की पर पीसने लगी। पंद्रह-बीस दिनों के बाद मै उस बहन को देखने गया और पूछा कि अब तबियत कैसी है? तो उसने जवाब दिया कि अच्छी है।

हाथ के आटे की रोटी जब से खाना शुरू किया तब से भूख बढ़ी। रोटी भी बहुत बढ़िया लगती है। पीसने का व्यायाम होता है तो तबियत भी अच्छी रहती है। लेकिन मोटर-रोड बनने पर मिल आते ही हम हाथ से पीसना बंद कर देते हैं। हम आलसी बनते है। कौन जल्दी उठेगा? फिर मिल सस्ता भी तो पीस देती है। लोग अब छः बजे उठने लगे हैं।

रास्ता होने पर भी उद्योग न छोड़ो

रास्ते आज नहीं कल होने ही वाले है। बिना रास्ते के यह जिला पिछड़ा हुआ माना जायगा। लेकिन रास्ते होने पर भी आप अपनी अकल कायम रखेगे तो आपका कोई कुछ नहीं बिगाड सकता। मै आपको एक हिसाब बताता हू। आप सबके बदन पर कपड़ा है। यह सारा आप मोल लेते है। हर आदमी के पीछे रोज की आधा सेर ज्वार हम पकड़ें और एक कुटुंब में पांच आदमी पकडे तो साल भर मे पांच खडी ज्वार लगेगी। साठ रुपये खंडी का भाव पकड़ें तो तीन सौ रुपये हो गये। अब कपड़े का हिसाब करें। एक कुटुंब के लिये आज के भावसे, ब्लैक मार्केट के कारण सौ रुपये का कपड़ा साल भर में लगता है। याने ज्वार के बाद कपड़े का ही खर्च अधिक होता है। अब यह सारा कपडा अगर हम बाहर से खरीदेगे तो हमारी गृहस्थी कैसे चलेगी और दारिद्रय भी कैसे मिटेगा?

आप जरा सोचें कि हमने पहले क्या किया था? हिंदुस्तान की मिलो से योरप की मिलो का कपड़ा बहुत सस्ता बिकता था।

यहां की मिलों का कपड़ा पड़ा रहने लगा। तब हमने विलायत के कपड़े का सस्ता होते हुये भी बहिष्कार किया। तो अब हम भी मिल का कपडा, सस्ता होने पर भी, नहीं लेगे ऐसा व्रत क्यों नहीं लेते? ऐसा व्रत अगर नहीं लेगे तो फिर देहात मे कौनसा उद्योग रहेगा? सारे देहात के उद्योग अगर शहरवाले छीन लेंगे, और हम भी तुच्छ बन कर कहेगे कि बहुत अच्छा हुआ सस्ता मिलने लगा, आप शहरवाले सेवा ही कर रहे हैं, तो फिर अनाज भी बाहर से लेने लगेगे क्या? कुछ लोग तो आज कह भी रहे है कि अनाज पैदा करने की अपेक्षा तंबाकू पैदा करना अधिक फायदेमंद है। लेकिन तबाकू से यद्यपि पैसा मिलेगा फिर भी अन्न कैसे मिलेगा? खाने के लिये अन्न चाहिये इसलिये वह गाँव मे ही पैदा करना चाहिये। उसी तरह पहनने के लिये कपड़ा चाहिये तो वह भी गांव में ही तैयार करना चाहिये। घर मे कपास होती है। उसको धुन कर पूनी बना लेनी चाहिये। घर मे ही कातना चाहिये और बुनना भी घर में ही चाहिये। बुनना कोई कठिन काम नहीं है। ऐसा होगा तो किसान के घर में उद्योग दाखिल होगा और उसका घर सुखी होगा। फिर झगडे भी नहीं होगे।

आज जहां देखो वहां झगड़े ही झगड़े है। खाने को पूरा नहीं मिलता इसके कारण ये सब झगड़े है। हमे जो चीजें हर रोज लगती है वे अगर हम घर पर ही तैयार कर लेंगे तो हमें कोई लूटेगा नहीं और हम भी किसी को लूटेंगे नहीं। लेकिन इसके लिये पराक्रम करना पड़ेगा।

हाथ-चक्की के चार फायदे

मेरी आप से प्रार्थना है कि रास्ते होने पर भी आप अपने घर के उद्योग मत छोड़िये। आटा घर पर ही पीसिये। मिल हो जाने पर भी वहां नहीं पिसायेंगे ऐसी शपथ लीजिये। आप कहेंगे दो ही पैसे में पिस कर मिलता है। लेकिन रोज के दो पैसे याने महीने में एक रुपया और साल-भर में बारह रुपये हो जाते हैं। आप का गांव ढाई सौ घरों का होगा तो साल भर में तीन हजार रुपये चले जायेंगे।

दूसरी बात यह होगी कि रोज का आपका व्यायाम चला जायगा। आज अपने देहात के लोग कमजोर है। और पीसने की आदत छूट जायगी तो बाद में वह काम बहुत कठिन मालूम होगा।

तीसरी बात यह कि मिल का आटा हम छः-छः दिनो तक खाते रहेंगे। ताजे आटे में और हाथ-चक्की पर पीसे हुए में जो ताकत है वह मिल के और बासे आटे में नहीं है।

चौथी बात यह कि हम आलसी बनेंगे, देर से उठेंगे। आज जो भगवान का नाम लेते हैं वह भी नहीं लेंगे। मुझे याद है कि मेरी मा सुबह जल्दी उठ कर करीब घंटा भर पीसती थी। और पीसते हुए भगवान का नाम लेती थी। हमारे संतों ने चक्की पीसते हुए गाने के लिये भजन और अभंग बनाये है। मेरी मां तुकाराम का अभंग गा कर पीसती थी। "पहिली माझी ओवी ओवीन जगत्र गाईन. पवित्र पांडुरंग"....(यह अभंग विनोबाजी ने पूरा गाकर सुनाया)।

तो अगर चक्की बंद हुई तो ऐसे भजन भी बंद हो जायेंगे। इसलिये मुझे आप को सावधान करना है। आप की सेवा करने के बहाने बाहर से लोग आयेंगे और आप लूटे जायेंगे इसलिये आप अपने गाँव के धंधों को कभी भी मत छोडिये यही मुझे कहना है।

गुडी हतनूर, (जि० आदिलाबाद)

१८-३-५१

बारहवां दिन—

: १६ :

व्यापार सेवा के लिए

हिंदुस्तान के बाजार का बिगड़ा रूप

आप इतने लोग दूर दूर के गांवों से यहा इकट्ठे हुए है यह देख कर मुझे खुशी होती है। मुझे इस गांव की कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन जिन लोगोने कार्यक्रम तय किया उन्होंने यहा का मुकाम रखा, और यह अच्छा ही हुआ। क्योकि आज यहा का बाजार था। दुनिया भर में बाजार कैसे चलता है वह तो दुनिया जाने! लेकिन हिंदुस्तान में जहाँ बाजार भरता है वहां झूठ ही झूठ का बाजार होता है। आज ही का किस्सा है। एक दूकान पर एक आदमी पुस्तक खरीदने गया। दूकानदार ने उसको वह पुस्तक चौदह आने में दी। फिर वह आदमी दूसरी दूकान पर पहुंचा। वहा उसको वही पुस्तक दिखाई दी तो उसने उसके दाम पूछे। दूकानदार ने छह आने बताये। तो फिर वह आदमी पहली दूकान पर वापिस आया और दूकानदार से पूछने लगा कि इस किताब के तुमने चौदह आने कैसे लिये जब कि यह दूसरी दूकान पर तो छह आने में मिलती है? दूकानदार ने जवाब दिया, भाई, मैं तो व्यापारी हूं। मुझे जो दाम लेने थे मैने लिये। तुमको अगर यह पुस्तक दूसरी दूकान पर छह आने में मिलती थी तो आप वहीं से खरीदते।

याने दूसरी दूकान पर नहीं खरीदा, यह आपका ही दोष है। दूकानदार का कोई दोष ही नहीं है। ऐसा सब हो रहा था। इतने में हममें से एक साथी वहां पर पहुंचा। उसने पूछा क्या बात है? उस आदमी ने कहा कि यह पुस्तक इस दूकानदार ने चौदह आने में दी जब कि दूसरी दूकान पर छह आने में मिलती है। हमारे भाई ने पुस्तक खोल कर दाम देखे और कहा, इस पुस्तक के दाम न चौदह आने हैं और न छह आने है बल्कि तीन आने है। वह कीमत उस पुस्तक पर छपी थी। उस तीन आने मे दूकानदार का कमीशन आदि सब आ गया। इसलिये दूकानदार को उससे अधिक कीमत लेने का कोई हक नहीं था। फिर दूकानदार का और पुस्तक खरीदने वाले का झगड़ा शुरू हुआ। मै इस बात को आगे बढाना नहीं चाहता। हमारे बाजार कैसे होते है यह समझ लो "झूठ ही लेना झूठ ही देना झूठ चबेना।"

व्यापारियों का धर्म

होना तो यह चाहिये कि व्यापारी सेवा का भाव रखें। व्यापार एक धर्म है। हमें शास्त्रकारों ने बताया है कि वैश्यों को व्यापार के धर्म का आचरण करना चाहिये। धर्म का मतलब लूटना नहीं होता, बल्कि सेवा करना होता है। जो चीज एक जगह नहीं मिलती है उसको दूसरी जगह से लाकर लोगों को देना और उसमे अपनी जो मेहनत लगी हो उसको जोड़ कर ठीक भाव से बेचना। इसका अर्थ है व्यापार।

मालिक को जाग जाना चाहिये

वास्तव में किसान मालिक है और व्यापारी सेवक है। तो सेवक कभी स्वामी से बढ़कर नहीं होता। जब हिंदुस्तान मे मालिक गरीब है तो सेवक भी गरीब ही होना चाहिये। लेकिन बात उलटी हो गई है। मालिक गरीब बन गया है और सेवक श्रीमान बन गया है। और वह श्रीमान कैसे बना? मालिक को लूट कर। आज अगर उन सेवकों को कोई उनका धर्म सिखादे तो वे नहीं सीखेंगे। इसलिये अब मालिक को ही जाग जाना चाहिये। मालिक के जागने का मतलब यह है कि वह अपना आधार बाजार पर न रखे। मेरा तो विश्वास है कि अगर गाँववाले अपनी जरूरत की चीजें गाँव में बना लेंगे तो हर गाँव बादशाह बन सकता है। यह किसान क्या खरीदने के लिये आता है? उसको भाजी चाहिये तो क्या वह अपने खेत में भाजी पैदा नहीं कर सकता? आंगन मे भी भाजी बन सकती है। कोई कपड़ा खरीदने आते है। गाँव में कपड़ा क्यो नहीं बन सकता है? अगर कपड़ा नहीं बन सकता तो कल आप रोटी भी बाजार से ही खरीदने लगेंगे। अगर इस तरह बनी बनाई चीजें खरीदते रहोगे तो लूट में से आपको कौन बचायेगा?

भगवान की व्यवस्था से सबक सीखो

हमें गांधीजी ने चरखा चलाने को कहा, और यही कहते कहते वह बूढ़ा मर गया। उनका वह संदेश अब भी सुनने लायक है। लोग कहते हैं अब तो स्वराज्य हो गया अब कातने की क्या जरूरत है? सरकार का काम है कि वह कपड़ा हमें दे। मैं कहता

हूं कि आप कल कहेंगे स्वराज्य आया है तो अब हम हल नहीं चलायेंगे, सरकार को हमें अनाज देना चाहिये। लेकिन स्वराज्य का यह मतलब नहीं है कि हम सारे काम छोड़ दें। दिल्ली के लोग बड़े हैं और बुद्धिमान हैं इसमें शक नहीं है। लेकिन उनसे भी परमेश्वर अधिक बड़ा और बुद्धिमान है। वह किस तरह हमारा पालन करता है देखो। उसने हमको हाथ दिये, पाव दिये, नाक दिया, कान दिये, और बुद्धि दी। और कहा कि अपने हाथो से काम करो, तुम्हारा पेट भरेगा। उसने थोड़ी थोड़ी बुद्धि हरेक को दी। अगर वैसा वह नहीं करता और बुद्धि का सारा खजाना वैकुंठ में ही रखता तो हमारा पालन वह कैसे कर सकता था? उस दशा में भगवान को चैन से नींद भी नहीं आती। लेकिन भगवान तो कहते है कि शेषशायी है और योगनिद्रा मे सो रहा है। वह इसलिये सो सकता है कि उसने सब को अकल दी और काम करने की जिम्मेवारी का ढंग बताया। हम हाथों से काम करते हैं फिर भी अगर काम नहीं बनता है तो परमेश्वर की प्रार्थना करते हैं, और वह हमें मदद देता है। हम अगर हाथो से काम नहीं करते हैं तो भगवान भी मदद नहीं करता इसी तरह हम अगर हाथों से काम नहीं करेंगे तो दिल्ली की सरकार भी हमको कुछ मदद नहीं दे सकेगी।

सरकार खास प्रसंग के लिये है

आप कहते हैं कि अब स्वराज्य आ गया है तो हमें कुछ कर्तव्य ही बाकी नहीं है। सब सरकार करेगी। हरेक काम के लिये अगर हम सरकार पर अवलंबित रहेंगे तो वह स्वराज्य होगा या

गुलामी। अपने गाँव में हम शांति नहीं रखेंगे और हर समय पुलिस को मदद के लिये बुलायेंगे तो वह होनेवाली बात नहीं है। विशेष मौके पर पुलिस की हम मदद मांगें तो सरकार दे सकती है। बाकी हमारी रोज की शांति, हमारा अनाज, हमारा कपड़ा, हमारी सफाई, हमारा शिक्षण, सारा गाँव मे ही करना चाहिये।

लोग कहते हैं कि सरकार हर गांव में स्कूल खोले। लेकिन सरकार के पास उतना पैसा नहीं है। अधिक कर देने के लिये आप तैयार नहीं है। मै कहता हूं कि आप आपस आपस में क्यों नहीं सिखाते? जो थोड़ा बहुत पढ़ा हुआ है वह अगर रोज एक घंटा दूसरे को पढ़ायेगा तो सारा गाँव शिक्षित हो सकता है। मान लीजिये कि हजार लोक-संख्या के गाव में दस लोग पढ़े हुए हैं। वे अगर हर साल दस लोगो को पढ़ा देंगे तो एक साल में सौ लोग पढ़े-लिखे बन जायेंगे। और इस तरह दस साल मे सारा गाँव पढ़ा-लिखा बन जायगा, इतनी यह आसान बात है। यही बात दूसरे कामो के बारे मे भी है।

उद्धरेत् *आत्मनात्मानम्*

हमारे सब काम हमें खुद करने चाहिये। भगवान ने गीता में कहा है, "उद्धरेदात्मनात्मानं" खुद का उद्धार खुद को ही करना चाहिये। दूसरो पर भरोसा रख कर मत बैठो। गाँव का राज्य गाँव वालों को स्थापित करना है। जो स्वराज्य दिल्ली में या आदिलाबाद मे है वह आप को काम नहीं देगा। आप को वही स्वराज्य काम देगा जो आप के गांव में बनेगा। यहीं देखो न। बाहर से मनुष्य

के शरीर को वैद्य तब तक ही मदद दे सकता है जब तक शरीर में ताकत बची हुई होती है। अगर शरीर की ताकत खतम हो जाती है तो वैद्य कुछ नहीं कर सकता। इसलिये हमारा काम यह है कि शरीर का आरोग्य हम अच्छा रखें। उसके लिये हमे गाधीजी ने बताया है कि कुदरती इलाज पर आधार रखो। सूर्यप्रकाश, पानी, मिट्टी, आदि से रोग अच्छे करना सीख लेना चाहिये। आज कल तो लोग कहते है हर गाँव में एक दवाखाना हो। अभी तक वैसा नहीं हुआ है यह परमेश्वर की कृपा है। अगर ये लोग हर गॉव मे दवाखाना खोल सकें तो गाँव का पैसा दवाखाने के निमित्त से बाहर जायगा और रोग दसगुना बढ़ेंगे....जरा कहीं कुछ हुआ तो हम दवाखाने मे दौडेगे। और यह समझ लो कि एक दफा वैद्य अगर घर में आता है तो फिर वह घर नहीं छोड़ता। कुछ लोग कहते है फलाना डॉक्टर हमारा फॅमिली डॉक्टर है। याने घर मे जैसे माता-पिता होते है वैसे वह डॉक्टर भी घर का ही एक हिस्सा बन गया। इस तरह हर बात मे अगर हम गुलाम बनते जायेंगे तो फिर स्वराज्य काहे का? सरकार का काम आप को बाहर से कपडा ला देने का नहीं है। वह आप को कातना बुनना आदि सिखा दगी। वैसे तो सरकार आप की खिदमत करने के लिये ही है। आप जैसा चाहेंगे वैसा वह करेगी। लेकिन आप को उसके लिये पैसा खर्च करने की तैयारी रखनी होगी। आप कहेंगे हम खेती नहीं करेंगे हमें बाहरसे गल्ला दो तो सरकार अमेरिका से गल्ला ला देगी। उसके लिये आप को पैसा देना पड़ेगा। सरकार तो सेवक है। सेवक

से कैसी सेवा लेनी चाहिये यह मै आप को समझा रहा हूं। आप उसको कहे कि हमें तालीम दो, हम स्वावलंबी बनना चाहते है।

भगवान झूठे पर प्रसन्न नहीं होता

आप का बाजार देख कर मुझे जो बातें सूझी वह मैने आप के सामने रखी। जब तक हिंदुस्तान के बाजारों में झूठ चलता ह तब तक हिंदुस्तान सुखी नहीं होगा। हम परमेश्वर का भजन करते है। लेकिन परमेश्वर झूठे पर कभी प्रसन्न नहीं होता। एक दफा दुर्योधन गाधारी के पास आशीर्वाद मागने गया था। युद्ध का अवसर था। दुर्योधन ने गाधारी से कहा कि मुझे विजय मिले ऐसा आशीर्वाद दो। गाधारी तो दुर्योधन की माता थी और उसका दुर्योधन पर बहुत प्यार था। लेकिन उसने अपने पुत्र से कहा, "जहां धर्म होगा वहीं विजय होगी यह मेरा आशीर्वाद है।" परमेश्वर का हमारे ऊपर बहुत प्यार है। वह हमे कहता है कि सचाई से बरतो तो तुम्हे मेरा आशीर्वाद है। अगर हम झूठे होंगे तो परमेश्वर हमें उसके लिये सजा देगा। उसमे भी उसकी दया ही होती है। परमेश्वर की दया अजीब होती है। पापी को शुद्ध करने के लिये वह उसको सजा देता है तो उसमें उसकी दया ही होती है। तो अगर हम परमेश्वर का आशीर्वाद चाहते हैं और जीवन सुखी हो ऐसी इच्छा रखते है तो सत्य को नहीं छोड़ना चाहिये।

इच्छोडा (जि० आदिलाबाद)
१९-३-५१

तेरहवाँ दिन—

: १७ :

देहात के काम

आप सावधान रहें

आप का यह गाँव बिलकुल ही छोटा है। लेकिन इस गाँव मे मैंने जो काम देखा है उससे मुझे बहुत ही आनंद हुआ है। क्यों आनंद हुआ यह आप लोगों को नहीं मालूम हो सकता। बात ऐसी है कि आप के गाँव मे मैंने बीस पचीस चरखे चलते हुए देखे। इस तरह चरखों का काम मैंने अपनी इस यात्रा में अभी तक कहीं नहीं देखा। और यह दृश्य देख कर मेरे हृदय को बड़ा संतोष हुआ। लेकिन आप लोगों को मैं जाग्रत कर देना चाहता हूं। यहां अभी तक बाहर के व्यापारियों का ज्यादा प्रवेश नहीं हुआ है। लेकिन आगे चल कर स्थिति ऐसी ही नहीं रहेगी। बाहर के व्यापारी यहां भी आयेंगे। मुझे आज कल व्यापारियो का सब से अधिक डर लगता है। वास्तव में व्यापारी तो होने चाहिये ग्रामों के सेवक। लेकिन इन दिनो ऐसा हुआ है कि व्यापारियों मे दयाधर्म नहीं जैसा रह गया है। इसलिये वे जब कहीं जाते है तो गांवों की सेवा के बजाय अपने स्वार्थ को ही देखते हैं। आज तामीरातवाले एक भाई मुझसे मिलने आये थे। बातचीत में उन्होंने बताया कि यह जिला जो अभी बहुत पिछड़ा हुआ है पैनगंगा पर

पुल बनने के बाद आगे बढ़ जायगा। क्योंकि फिर बरार के साथ बहुत व्यापार चलेगा। लेकिन फिर यह जिला आगे बढ़ेगा इसका मतलब इतना ही है कि यहां व्यापारियों का जमघट बन जायगा। मतलब उसका इतना ही है कि फिर आपके गाँव में जो अच्छा दृश्य हमने देखा वह देखने को नहीं मिलेगा। बाहर के व्यापारी आपके गाँव में आयेंगे। कपड़ों के अच्छे अच्छे नमूने आपको बतायेंगे, आप लोभ में पड़कर उनसे कपड़ा खरीदने लग जायेंगे और गुलाम बन जायेंगे। आज भी मैं देखता हूं कि आपके गाँव में सूत कतता है। कुछ लोग हाथ का कपड़ा पहनते हैं; लेकिन मिल का कपड़ा भी बहुत चलता है। लेकिन जब वे व्यापारी आयेंगे तब सारा का सारा कपड़ा बाहर से आने लग जायगा। इसलिये मैं आज ही आपको सावधान करना चाहता हूं कि आप शपथ लीजिये कि बाहर का कपड़ा नहीं लेंगे। अगर आप ऐसा नहीं करते तो आप के देखते देखते सारा गाँव दरिद्र हो जायगा। आज मैं आपके गाँव में घूम आया। सारे घर देख आया। घर बहुत तो थे नहीं इसलिये समय भी ज्यादा नहीं लगा। छोटासा गाँव है। आज आप लोग संतोष से रहते हैं। लेकिन अगर आप आलस में पड़े और बाहर की चीजें खरीदने लगे तो आज का यह संतोष नहीं रहेगा।

खादी का व्रत

एक घर में, जो कुछ पड़ा था, लोगों ने बैठने के लिये कहा। मैं वहां बैठा। उन्होंने मेरा स्वागत किया। लेकिन उस घर में मैंने

देखा कि उस घर की लक्ष्मी सारे कपड़े मिल के पहने हुय थी। मैंने उन्हें प्रेम से समझाया कि इस घर में मैं आया हूं तो अब यहा बाहर का कपड़ा नहीं आना चाहिये। उन्होंने मेरी बात को मान लिया। अब मै नहीं जानता कि वे कहां तक अपना वचन पालन करेंगे। भगवान से मेरी प्रार्थना है कि उन्होंने जो वचन दिया है उसका पालन करने की शक्ति वह उन्हे दे।

हिंदुस्तान की पहले की स्थिति

मैं अभी हैद्राबाद मे होनेवाले सर्वोदय समेलन के लिये जा रहा हू। सर्वोदय का मतलब है सब की उन्नति। सर्वोदय मे यह बात नहीं आती कि किसी एक का भला हो, दूसरे का न हो। इसलिये सर्वोदय का चिंतन करनेवाले मुझ जैसो के सामने यह बड़ी समस्या है कि शहरो के साथ देहातो का भला कैसे होगा? हम चाहते हैं कि भला शहरो का भी हो और गाँवो का भी। एक जमाने मे हिंदुस्तान के सारे गाँव बहुत सुखी थे। परदेश से आनेवाले लोग उसकी गवाह देते थे। बीच में जब अंग्रेज यहा आये तो उन्होंने भी देखा कि यहा हर गाँव मे कपडा बनता है और दूसरे भी बहुत से उद्योग चलते है। तो उन्होंने लिखा है कि गाँव गाँव में दूध बहुत मिलता है। लेकिन आज हम देखते हैं कि लोगों को मुश्किल से दूध मिलता है। दूध नहीं, तरकारी नहीं, कपडा नहीं, और आज तो गल्ला भी बाहर से आता है। यह हालत दो सौ साल के अंदर हुई है।

स्वराज्य का कार्यक्रम

अब स्वराज्य आया है। हम चाहते है कि हमारे गाव फिर से सुखी हों। लेकिन स्वराज्य आने पर भी अगर हम लोग देहात का रक्षण नहीं कर पायेंगे, देहात के उद्योग कायम नहीं रख सकेंगे तो हमारे गाव सुखी नहीं हो सकेंगे। स्वराज्य का अर्थ ही यह है कि आप लोगो को अपने गाव का कपडा पहनना चाहिये। अपने ही गांव की चीजे खरीदनी चाहिये। बाहर का पक्का माल आप को नहीं खरीदना चाहिये, बल्कि अपने गाँव मे खुद कच्चे से पक्का माल बनाना चाहिये। आप के गाव में पक्का माल बनेगा तो शहरवाले खरीदेंगे और आप को लाभ होगा। लेकिन अगर आप कच्चा माल पैदा करके पक्का बाहर से खरीदेंगे तो आप को नुकसान होगा। अगर अपने ही गाँव मे कच्चे माल से पक्का बनाते है तो मजदूरी आप को मिलती है। पक्का नहीं बनाते तो मजदूरी बाहर जाती है। एक जमाना था जब हिंदुस्तान-वाले अपने लिये तो कपडा बनाते ही थे लेकिन बाहर भी भेजते थे। उस जमाने मे लोगों को चरखा कातने के लिये समय मिलता था और आज नहीं मिलेगा ऐसी बात तो नहीं है। आज लोगों की संख्या बढ गई है, जमीन कम हुई है। इसलिये समय तो खूब मिलता है। अभी एक जगह एक गाव का सर्वे किया गया तो मालूम हुआ कि वहा के लोगो को साल भर में छः माह काम नहीं मिलता है। मै देखता हूं कि आप के गांव मे बगीचे भी नहीं है। याने आप के यहां की खेती बारिश के पानी पर ही होती है।

इसलिये वह काम अधिक नहीं रहता। समय काफी बचता है। उसका क्या किया जाय? अगर कोई व्यक्ति ऐसा हो जो आप के गाव की सेवा करे तो आप के गाव की उन्नति होगी। वह व्यक्ति आपके गाव का ही होना चाहिये। कॉंग्रेसवालों का काम है कि ऐसे गांव की सेवा करें। मुझे तो ऐसे गाव मे रहने की इच्छा हो जाती है। यहां रहा तो पहले मै कातनेवालों को धुनना सिखाऊंगा। आज तो कातनेवाले अपनी पूनी नहीं बनाते। दूसरे लोग उनके लिये पूनी बनाते रहे हैं। अपने घर मे कपास बने और दूसरा मनुष्य उसकी पूनी बनावे और फिर मै कातू ऐसा क्यों होना चाहिये? अगर हम अपने ही घर में पूनी बनाते है तो पूनी अच्छी बनती है और सूत भी अच्छा कतता है। दिल्ली में हमने यह प्रयोग करके देखा। पंजाब की निर्वासित स्त्रियों को कातने के साथ हमने उन्हें पूनी बनाना भी सिखा दिया। परिणाम यह हुआ कि जो स्त्रियां पहले आठ दस नबर तक कातती थीं वे सोलह बीस नबर तक सूत कातने लगीं। याने पहले बिलकुल मोटा सूत कातती थीं अब महीन कातने लगी हैं। बारीक सूत से धोतियां और साडियां बन सकती है। आप देख रहे है कि मदालसा यहां बैठी पूनी बना रही है। पांच पाच छः छः साल के बच्चे भी ऐसी पूनी बना लेते हैं। इस तरह अगर घर मे ही पूनी बनने लग जायगी तो सूत अच्छा कतेगा।

फिर आप के यहां ये पहाड़ भी है। अगर मैं यहां रहा तो पहाड से पत्थर ला ला कर उन पत्थरों से मकान बना लूंगा। इस

तरह अपने परिश्रम से पक्के मकान बन जायेंगे। फिर सफाई का काम शुरू कर दूंगा ताकि गांव में कोई बीमारी न होने पावे। आप लोग बाहर खुले में पाखाना जाते हैं। लेकिन उस पर मिट्टी नहीं डाली जाती। खाद की बरबादी होती है। हमारा हिसाब है कि फी आदमी मैले की कीमत चार रुपया होती है। मतलब यह कि पांचसौ जनसंख्या के आप के गांव में दो हजार रुपयों की आमदनी बढ़ सकती है। इस तरह गांव गांव उत्पादन भी बढ़ेगा और स्वच्छता भी बढ़ेगी। अब यह सारा काम अगर यहां कोई मनुष्य रहेगा तो हो सकेगा। लेकिन बाहर से मनुष्य कहां से लावें? इसलिये यहीं पर कोई कार्यकर्ता मिलना चाहिये।

एक बात और। आप के गांव में प्रेम-भाव बढ़ना चाहिये। जैसा एक परिवार में प्रेम होता है वैसा सारे गांव में होना चाहिये। सारा गांव एक परिवार ही हो जाना चाहिये।

तो आप लोग नित्य गांव में उद्योग बढ़ाइये और प्रेम-भाव बनाये रखिये, यही मुझे आप से कहना था।

निरडगोंडी, (जि० आदिलाबाद)
२०-३-५१

चौदहवाँ दिन—

: १८ :

ग्राम राज्य

गांधीजी का ही संदेश सुनाता हूं

मुझे गांधीजी का आदमी समझ कर आप सब स्त्रिया अपने अपने चरखे लेकर इस सभा मे आयी हुई है। और आज मै आपको जो सुनानेवाला हूं वह गांधीजी का ही संदेश है। लोग कहते है कि गांधीजी ने जो कहा उससे कोई नई बात यह मनुष्य नहीं कहता है। यह बात सही भी है। क्योकि गांधीजी के पास मैंने जो सीखा उसे नहीं भूल सकता। अगर गांधीजी का शिक्षण मै भूल जाऊगा तो पशु बनूगा।

सुदर्शन चक्र धारी भगवान के दर्शन

आप लोगो को मै नारायण समझता हू। और जब मैने देखा कि सौ से अधिक स्त्रिया यहां चरखे चला रही है तो उस सुदर्शन चक्रधारी भगवान के ही मैंने आज दर्शन किये। इस तरह आपके दर्शन का लाभ लेने के लिये मै पैदल निकल पडा हू। आज सुबह पांच बजे हम निकले और चौदह मील की मुसाफिरी की। एकदम से इतना चलने से हम लोगो को कुछ तो थकान जरूर लगी। लेकिन जो दृश्य यहां आपके कातने का मैने देखा उससे वह सारी थकान

उड गई। आज की सभा जो भी देखते वे अगर मनमे शंका रखते है कि चरखा कैसे चलेगा इन दिनों, तो यह दृश्य देखकर वे समझ जायेंगे। लेकिन आज तो आप लोगों ने बता दिया कि आप खेती का काम भी कर सकती है और चरखा चला कर अपना कपड़ा भी बना लेती है।

लक्ष्मी की कथा

अब मुझे यही कहना है कि आप यह काम निष्ठा से अधिक बढ़ाइये। अपने गाँव में हाथ का बना कपड़ा ही हमें पहनना चाहिये। बाहर का कपड़ा यहा नहीं आना चाहिये। आप कातती है और उसका कपड़ा भी पहनती है यह अच्छा है। लेकिन खद्दर ही पहनेंगे दूसरा कपड़ा नहीं पहनेंगे ऐसा व्रत आपने नहीं लिया है। ऐसा व्रत न लेने में क्या खतरा है यह मै आपको समझाऊंगा। खतरा यह है कि मिल का कपड़ा यहा आता रहेगा और आपको उसका मोह होगा। फिर आप खुद उस मिल के कपड़े को शायद नहीं पहनेंगी। लेकिन अपनी लड़कियों को वह पहनायेगी और कहेगी कि कैसी सुंदर दीखती है मेरी लड़की मिल के कपड़े में। लेकिन मै आपको कहता हूं कि मिल के कपडे में आपके लडके लड़किया खूबसूरत नहीं बल्कि बदसूरत दीखेंगी। क्योंकि मिल का कपड़ा अगर घर मे आता है तो घर की लक्ष्मी बाहर चली जाती है। और लक्ष्मी अगर बाहर गई तो फिर घर की क्या शोभा रही? लक्ष्मी की कथा है कि वह शामके समय गाँव मे घूमती है। जिस घरमें देखती है कि सायंकाल के समय भी दीपक जल रहा है और

काम हो रहा है उस घर में वह प्रवेश करती है। उसका मतलब यह है कि जहां दिन मे भी काम चलता है और रातको सोते तक निरंतर काम और उद्योग चलता है उसी घर पर लक्ष्मी की कृपा होती है। चरखे से इस तरह घर घर काम हो सकता है।

कातनेवालों की जाति नहीं होती

मै देख रहा हूं कि कुछ स्त्रियां कात रही हैं लेकिन कुछ नहीं कातती है। एक बाई से मैने पूछा कि वह क्यों नहीं कातती? मिल का कपड़ा क्यो पहनती है? उसने उत्तर दिया कि हमारी जाति मे कातना निषिद्ध है। यह खयाल गलत है। जो भी कपड़ा पहनता है उसको कातना चाहिये। जैसे बढ़ई की या लुहार की जाति होती है वैसे कातनेवालो की कोई जाति नहीं होती। हरेक जाति को कातना चाहिये। हर घर में रसोई बनती है उसमे जाति का कोई प्रश्न नहीं होता। वैसे हर घरमे कातने का काम होना चाहिये। मै यह भी देखता हू कि स्त्रियां तो कातती हैं लेकिन पुरुष नहीं कातते है। शायद उनको लगता है कि वे कातेंगे तो उनका धर्म बिगड़ेगा। स्त्रियां कपड़ा पहनती हैं तो पुरुष नंगे थोडे ही रहते हैं? इसलिये पुरुषों को कातना चाहिये स्त्रियों को कातना चाहिये बच्चों को कातना चाहिये और बूढ़ों को भी कातना चाहिये। गांधीजी रोज नियम से कातते थे। जिस दिन उनका खून हुआ उस दिन भी वे कात कर मरे हैं। इस तरह उन्होंने सारी जिंदगीभर हमारे सामने एक आदर्श दिखा दिया कि हमको रोज कुछ न कुछ सूत कातना चाहिये।

बेकार रहेंगे तो शैतान मन में घर करेगा

लोग पूछते हैं कि अब तो स्वराज्य आया है अब कातने की क्या जरूरत है? तो आप से यह भी पूछ सकते हैं कि अब स्वराज्य आया है तो रसोई करने की क्या जरूरत है? स्वराज्य के पहले घर में रसोई करने की जरूरत थी, स्वराज्य के बाद भी जरूरत है। मिल का पराक्रम आप को सुनाता हूं। लड़ाई के पहले मिलें फी आदमी १७ गज कपड़ा देती थी। और अब १२ गज तैयार करती है। इस पर से आप के खयाल में आयेगा कि मिल पर भरोसा रखना कितना घातक है। मै तो कहना चाहता हू कि मिलें अगर ५० गज भी कपड़ा तैयार करें तो भी उसको खरीदने में देहातवालों का भला नहीं है। कोई कहते है कि मिल का कपड़ा सस्ता होता है। मैं कहता हू कि वह मुफ्त मे भी मिले तो भी हम वह कपड़ा नहीं लेंगे इस तरह का निश्चय हमें करना चाहिये। ऐसा निश्चय अगर देहातवाले नहीं करेंगे तो उनके सारे धंधे खतम हो जाएंगे। और आप के धंधे अगर नष्ट हो गये तो फिर आप को मुफ्त कौन खिलायेगा? इसलिये मैने लक्ष्मी का जो चरित्र कहा था वह याद रखिये। उद्योग चले गये तो लक्ष्मी चली जायगी, हम आलसी बनेंगे और फिर आपस आपस में झगड़े शुरू हो जायेंगे। फिर लोगों में तरह तरह तरह के व्यसन शुरू हो जायेंगे। नशाखोरी चलेगी। लोग शराब और बीड़ी पीने लगते हैं। बीड़ी पीनेवाले तो यहां तक आगे बढ़ गए हैं कि जहां प्रार्थना चलती है वहां भी वे बीड़ी पीते हैं। याने साधारण सभ्यता भी वे नहीं जानते हैं कि

जहां लोग इकट्ठे होते हैं वहां बीड़ी नहीं पीनी चाहिये। जहां उद्योग नहीं होते हैं और मनुष्य खाली रहता है वहां ये सारे ढग सूझते है। फिर झगड़े बढ़ते हैं और उसके साथ व्यभिचार आदि भी चलते है। इसीलिए हमारे पुरखाओं ने हमें सिखाया है कि " क्षणार्धमपि व्यर्थ न नेयम् " एक क्षण भी खाली नहीं रहना चाहिये। इस तरह एक एक क्षण का हम हिसाब नहीं रखेंगे तो फिर हमारे मन में शैतान काम करने लगता है और यह विचार शुरू होता है कि दूसरे के जेब से पैसे कैसे लूटे जांय। व्यापार में सर्वत्र झूठ शुरू होता है। चोरियां कैसे की जाय इसकी युक्तियां खोजी जाती हैं। यह सब हिंदुस्तान में शुरू हो रहा है इसलिये मै आप लोगो को सावधान कर रहा हूं।

ग्रामराज्य और रामराज्य की व्याख्या

जो लोग अपने घर में सूत कातेंगे उनका अपना कपड़ा घर का होगा। लेकिन उनके घर मे अगर ज्यादा कपडा तैयार होता है तो गांव के दूसरे लोग उसको खरीद सकते हैं। गाव मे कुछ लोग जरूर ऐसे होंगे कि जिनके लिए खुद सूत कातना संभव नहीं होगा। तो वे अपने गाव मे कते सूत का कपड़ा खरीदेंगे। यह जो मैने कपड़े के लिये कहा वही दूसरे उद्योगों को भी लागू है। तेल गाव में बनाना चाहिये। गुड़ गांव में बनाना चाहिये, आटा घर घर पीसा जाना चाहिये। इस तरह आप देहात की स्त्रियां और पुरुष काम करेंगे तो यह राज्य आपका होगा। इसको ग्रामराज्य कहते है। ग्राम में जब स्वावलंबन होगा, गांव अपनी शक्ति पर खड़ा होगा तब

वह ग्रामराज्य होगा। और रामराज्य तब होगा जब आपस आपस में कोई झगड़ा नहीं रहेगा, सब एक दूसरे पर प्यार करेंगे, सब एक दूसरे का साथ देंगे और सहकार करेंगे। अपने देश के लिये स्वराज्य तो आया है। लेकिन ग्रामराज्य स्थापित करना बाकी है। उसके लिये अब हमें झगड़ना है, मेहनत करनी है। वह बड़ी भारी लड़ाई होगी।

ग्रामराज्य के लिए लड़ाई लड़नी है

स्वराज्य के लिए तो लड़ाई हो गई। लेकिन उससे भी कठिन लड़ाई आगे ग्रामराज्य के लिये होनेवाली है। आज तक हमने जो लडाई लड़ी वह अहिंसात्मक थी। वैसे यह लड़ाई भी अहिंसात्मक ही होगी। यह लड़ाई टलनेवाली नहीं है। उस लडाई के सिपाही आप सारी बहनें और भाई होंगे। उधर शहरवाले लोग व्यापार में लगे हुए हैं, ग्रामों की कोई चिंता नहीं करते हैं। उनके साथ हमारा कोई भेदभाव तो नहीं है, लेकिन झगड़ा जरूर है। उस युद्ध मे हमारे औजार होंगे चरखा और हल। हमारे युद्ध के लिये हमें बम की जरूरत नहीं है, तोपों की भी जरूरत नहीं है। हमें जरूरत है काम करने के औजारों की।

गोपाल पेठ, (जि० आदिलाबाद)
२१-३-५१

पन्द्रहवाँ दिन—

: १९ :

सर्वोदय की महिमा

स्वराज्य शब्द की महिमा

हम सर्वोदय के यात्री अपनी पैदल मुसाफिरी मे आप के गांव में आ पहुंचे है। सर्वोदय एक महान शब्द है और उसका अर्थ भी महान है। समाज के सामने जब कोई महान शब्द होता है तो उससे समाज को शक्ति मिलती है। शब्द की महिमा अगाध होती है। जिस समाज के सामने कोई बड़ा शब्द नहीं होता है वह समाज शक्ति-हीन और श्रद्धा-हीन बनता है। शब्द की शक्ति का यह अनुभव हर जमात को और हर देश को आया है। हमारे देश में चालीस साल तक स्वराज्य शब्द चला और उसका पराक्रम तथा महिमा सब ने देख ली। १९०७ में स्वराज्य शब्द दादाभाई नौरोजी ने हमें दिया और १९४७ में उसका दर्शन हमें मिला। उसका चमत्कार आखिर तो हैद्राबादवालों ने भी देख लिया। हैद्राबादवाले बहुत दिनों से सोच रहे थे कि बाकी के सारे देश में स्वराज्य का उदय हुआ, हमारा क्या हाल होगा? उनको भी अनुभव हुआ कि जो शक्ति देशभर में पैदा हुई थी उसका स्पर्श यहां भी होना था। यह संस्थान उससे अलग नहीं रह सकता था।

स्वराज्य के बाद का शब्द

इस तरह स्वराज्य शब्द का कार्य हिंदुस्तान में हो गया और उसके साथ साथ महात्मा गांधीजी का अस्त हुआ। उनके जाने के पीछे सारा देश हक्का-बक्का हो गया और कुछ रोज तो सूझता ही नहीं था कि इस देश का क्या होनेवाला है? लेकिन परमेश्वर की कृपा से सब लोग स्थिर हो गये और अब ऐसा समय आ गया है कि देश के प्रगति का अगला कदम रखा जाय। अगला कदम तो तब रखा जा सकता है जब कि जहां जाना है उसकी दिशा तय हुई हो। तो गांधीजी के जाने के बाद चंद लोग इकट्ठा हुए और उन्होंने अपने देश को सर्वोदय शब्द दे दिया। यह शब्द भी गांधीजी का ही रचा हुआ था। और उसकी जड़ हिंदुस्तान की संस्कृति में प्राचीन काल से जमी हुई है। जब स्वराज्य नहीं हुआ था तब तो वही एक शब्द हमारे सामने था और परदेशियों का यहां का राज्य हटाने मे ही हम सब लगे हुए थे। हमारे खेत मे तरह तरह के निकम्मे झाड़ उगे हुए थे, उनको काटने का काम हुआ उसीका नाम स्वराज्य था। अब स्वराज्य-प्राप्ति के बाद उस खेत में परिश्रम करना है और बोना है। लेकिन मैं देख रहा हूं कि लोगों का यही खयाल है कि अब तो काटनेका समय है। यह बिलकुल गलत खयाल है। तो वह जो खेती में परिश्रम करके फसल लाना है उसी का नाम है सर्वोदय। सर्वोदय शब्द अगर हमारे सामने न होता तो हम सब ध्येय-शून्य बन जाते।

स्वराज्य के बाद का नैतिक कार्य

सर्वोदय शब्द ने हमारे सामने स्पष्ट उद्देश्य रख दिया। वह उद्देश्य ऐसा है जिसमें सब लोगों का समावेश हो सकता है। मेरे अभिप्राय में स्वराज्यप्राप्ति के बाद हिंदुस्तान में जो तरह तरह के राजकीय पक्ष पैदा हुए हैं उनकी कोई जरूरत नहीं थी। स्वराज्य के बाद हिंदुस्तान में जो असंख्य समस्यायें पैदा हुई वे बहुत सारी अनैतिक थीं। याने जनता की नीति गिरी हुई थी उसका हमें तरह तरह से अनुभव आया। और आज भी हम यही देखते हैं कि जहां जाओ वहाँ नीति-हीनता और शील-भ्रष्टता का दर्शन होता है। इसके लिये मैं जनता को दोष नहीं देता हू। क्योंकि मैं जानता हूं कि सारी की सारी जनता नीति-भ्रष्ट नहीं हो सकती। लेकिन वैसा नीति-भ्रष्टता का दर्शन अगर सर्वत्र होता है तो यही समझना चाहिये कि उसका कारण परिस्थिति में मौजूद है। जिम्मेदारी चाहे परिस्थिति की हो चाहे जनता की हो लेकिन जो है उसको हमें दुरुस्त करना है। स्वराज्य प्राप्ति के बाद सब लोगों का शील कायम रखना, आपस आपस में प्रेम-भाव कायम रखना आदि बिलकुल बुनियादी काम करना जरूरी हो गया था और है। इस हालत में किसी भी तरह के राजकीय उद्देश्यों के लिये मौका ही नहीं रहता है। जब समाज का नैतिक स्तर और आपस आपस का प्रेम-भाव बढ़ेगा तब राजकीय उद्देश्यों के लिये मौका आ जाता है। इसलिये जिन जिन लोगों से जब जब बात करने का मौका मिलता है तब उन्हें मैंने यही कहा है कि भाइयो,

यह राजकीय लेबल अब अपने सिर पर मत चिपकाओ। और केवल इन्सान बन जाओ।

आज का परदेशावलंबी स्वराज्य किस काम का

देखिये मैं तो पैदल घूम रहा हूं। बीच-बीच में छोटे-छोटे गाँवो मे जाना होता है तो बीच में शहर देखने को मिलते हैं। तो मैं देखता हूं कि उधर गावों की परिस्थिति क्या है और इधर शहरों की परिस्थिति क्या है! देहात में एक तरह का दुःख है तो शहरों मे दूसरी तरह का। देहात मे देखता हूं कि लोगों को कपड़े पहनने के लिये नहीं है और शहर में देखता हू कि लोग शराबी बन रहे है। वस्त्रों का न होना एक बड़ा भारी दुख है तो शराबी होना कोई सुख की बात नहीं है। तरह तरह के व्यसन शहरों में बढ़ रहे हैं। स्वराज्य के पहले स्वदेशी विदेशी का जो फरक हम करते थे वह भी अब भूल गये हैं। जो भी अच्छी चीज देखते हैं खरीद लेते हैं। स्वराज्य के बाद हमारे शहरो की अगर यह हालत हो जाय कि सारे बाजार परदेशी वस्तुओं से भर जाय तो वह स्वराज्य किस काम का? और मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि आप परदेशी वस्तु खरीदते रहिये, आप के स्वराज्य पर कभी आक्रमण नहीं होगा। आपका स्वराज्य कायम रहेगा। क्योंकि दूसरे देशों को क्या फिक्र पड़ी है कि आप का देश कब्जे में रख कर सारा जिम्मा उठायें अगर उनका माल यहां खपता है? और इन दिनों किसी देश को अपने कब्जे मे रखना कठिन काम हुआ है। इसलिये दुनिया के बड़े बड़े

देश यह नहीं सोचते कि दूसरे देशों पर अपनी राजकीय सत्ता कायम करें। अगर व्यापारी सत्ता हासिल है तो राजकीय सत्ता हासिल करने में कोई लाभ नहीं है। मतलब यह हुआ कि फिर हमारे स्वराज्य का कोई अर्थ ही नहीं रहेगा अगर हमारे बाजार परदेशी वस्तुओं से भरे रहे। यह है हमारे शहरों का हाल।

उधर देहातो का हाल यह है कि उन लोगो के पास कोई धंधे नहीं हैं। उनके जो छोटे छोटे धंधे थे वे शहरवालों ने छीन लिये। यहीं देखो, हम जहा बैठे हैं वह एक धान कूटने की मिल है। अगर धान कूटने का धंधा देहात में चला तो लोगो को काम मिलेगा, वह भी शहर में गया तो देहातवाले बेकार हो जायेंगे।

तो उधर परदेशी वस्तुओं से शहर के बाजार भर रहे है उनके विरोध मे शहरियो का पराक्रम कुछ नहीं चलता है। उनका सारा पराक्रम देहात के धंधे डुबाने का है।

देहात के धंधे सुरक्षित रहें

होना यह चाहिये कि देहात के धंधों को देहात में रखना चाहिये और परदेश से जो माल आ रहा है उसके विरोध में शहरों में धंधे खड़े होने चाहिये। आज की हालत यह है कि परदेश के लोग हमारे शहरों को लूटते जा रहे हैं और शहरवाले हमारे देहातों को लूटते जा रहे हैं। अगर उससे उलटा बना याने परदेश के धंधों के विरोध में शहरवाले खड़े हो गये और देहात के धंधों को उन्होंने बचा लिया तो देहात और शहर दोनों का सहयोग होगा

और यह देश शक्तिशाली बनेगा। हम हमारे कुछ जंगलों को जैसे रिजर्व रखते हैं वैसे देहात के लिये कुछ धंधे रिजर्व रखने चाहिय। इस तरह देहात के धंधों को हमने सुरक्षित नहीं रखा तो देहात उजड़ जायेंगे और आखिर देहाती लोग शहरों पर टूट पड़ेंगे। तो उधर परदेश के व्यापारी शहरों को लूटेंगे और इधर देहात के लोग शहरो पर टूट पड़ेंगे तो फिर शहरों की क्या हालत होगी आप ही सोचिये। तो स्वार्थबुद्धि से भी आप को देहात की रक्षा करनी चाहिये।

देहात उजड़ जाय तो शहर और देहात की लड़ाई अटल है

तो हम लोगोंकी अकल अब इस बात में लगनी चाहिये कि देहात और शहर दोनों का सहयोग कैसे हो और दोनों मिल कर परदेशी माल के विरोध में कैसे शक्ति पैदा करे? यह नहीं हो रहा है और मुझे देहातवालों को कहना पड़ता है कि भाई तुम्हारे और शहरियों के बीच लड़ाई होनेवाली है। मैं उस लड़ाई को नहीं चाहता। लेकिन अगर शहरियों का रवैया नहीं बदला तो यह लड़ाइ अटल है, यह मैं देख रहा हूं और वही मुझे कहना पड़ता है।

सर्वोदय का ध्येय

मैं उस लड़ाई को नहीं चाहता इसीलिये सर्वोदय के प्रचार के लिये आप को समझा रहा हूं। और मैं कहता हूं कि इस समय इस शब्द में जो शक्ति है वह आप चिंतन करेंगे तो आप को महसूस होगी। सर्वोदय शब्द हमें यह समझा रहा है कि देश में जगह

शक्तिसंचय हो जाना चाहिये। देश में एक घर भी अशक्त नहीं रहना चाहिये। अगर इस तरह हम नहीं सोचते हैं और वर्गों के झगड़ों की बात निकालते हैं या कोई खास लोगों के हित की ही बात सोचते हैं तो हिंदुस्तान सुख में नहीं रहेगा। सरकारी कानूनो में जो भी लूपहोल मिलते हैं उनका लाभ उठाने का व्यापारी सोचते हैं। इस तरह व्यापारी और सरकार दोनों के बीच अकल की लड़ाई चलेगी और इन दोनों की लड़ाई के बीच देहात के लोग मारे जायेंगे। जरूरी इस बात की है कि व्यापारियों की ताकत देहात के हित में लगे, सरकार की ताकत देहात के हित में लगे और शहरियों की भी ताकत देहात के हित में लगे। और देहाती लोग, शहर के लोग, व्यापारी और सरकार चारों मिलकर परदेशी वस्तुओं का और विचारों का जो आक्रमण हो रहा है उसके विरोध में खड़े हो जाँय।

सर्वोदय का लक्ष्य

तो स्वराज्य के बाद सर्वोदय का क्या काम है यह मैंने थोड़े में आपको समझाया। हमारे देश में चार शक्तियां काम कर रही हैं। एक है सरकार की, दूसरी है व्यापारियों की, तीसरी है शहरियों की और चौथी है देहातियों की। इन सब शक्तियों का योग साध्य करना सर्वोदय का काम है। अब आप ही सोचिये कि सर्वोदय में इतना अर्थ भरा है तो इसको छोड़ कर और किस शब्द की आपको जरूरत है? और किन राजकीय पक्षों की आपको आवश्यकता है? सर्वोदय कोई राजकीय पक्ष नहीं है।

लेकिन सारे राजकीय पक्षों को पेट में निगलने के लिये वह पैदा हुआ है। दूसरी भाषा ने सबका हृदय एक बनाना, सबकी भावना एक बनाना, और सबकी शक्तियों का समवाय सिद्ध करना सर्वोदय का लक्ष्य है।

भाइयो, मैं आशा करता हूं कि यहां का हरेक जवान और प्रौढ़ इस शब्द से स्फूर्ति पावेगा और इसके लिये जीवन भर कोशिश करेगा। इस शब्द से जो स्फूर्ति मिलती है वह राम-नाम जैसी शक्ति है। और राम वही है जो सबके हृदय में रम रहा है। उसी का भजन अब हम सब मिल कर करेंगे।

निमल, (जि० आदिलाबाद)
२२-३-५१

सोलहवां दिन—

: २० :

सच्चा वर्णाश्रम धर्म

आज प्रार्थना सभा सदा की भांति साढ़े पांच बजे होनेवाली थी। लेकिन आप सब भाई बहनें दूर दूर गांव से यहां आ कर बैठे हैं इसलिये जल्दी ही शुरू कर देता हूं। ये स्त्रियां अपने बच्चों को घर छोड़ कर आई है। इसलिये मैं उन्हें जल्दी ही रवाना कर देना चाहता हूं।

ग्रामोद्योग का अर्थशास्त्र

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप सूत कातती हैं। लेकिन आपके चारो ओर घटोत्कची माया फैली है। सब तरफ मिलों का कपड़ा छाया हुआ है। आप के लिये इस देश की मिलो और परदेश की मिलों में कोई फरक नहीं है। आप को तो अपने सूत का ही कपडा पहनना चाहिये। मुझे इस बात का दुःख है कि आप तो सूत कातती हैं लेकिन यहां के लोग मिल का कपड़ा पहनते हैं। होना तो यह चाहिये कि इस गांव में बना हुआ कपड़ा ही यहां के लोग पहनें। अपने गांव वालों पर जो प्रेम नहीं करते वे प्रेम करना जानते ही नहीं। प्रेम का अर्थ ही यह है कि एक दूसरे की रक्षा करें। गांव में चमार है। वह जूता बनाता है तो उसका जूता हम नहीं खरीदेंगे और बाहर का खरीदेंगे तो

गांव का चमार मर जायगा। इस तरह हमारे चमार को हम रक्षण नहीं देते हैं तो उस पर हम प्रेम नहीं करते। इसी तरह तुम्हारे गांव

लड़कियां हमारे घर लेते है। क्या यह सौदा महंगा पड़ता है? इसी तरह अगर तेली का पैसा चमार के घर और चमार का पैसा तेली के घर जाता है तो किसका नुकसान होता है? इस तरह जिसे आप महंगा कहते हे वह महंगा नहीं है बल्कि उस पर ही हमारे गांव का जीवन चलता है। इस लिये आप लोगों से मेरी प्रार्थना है कि जो माल आप के गांव में बनता है वही खरीदिये। यह मत कहिये कि हमारा देश बड़ा है तो दिल्ली का माल क्यों न खरीदें। दिल्ली हमारे देश में तो है पर दिल्लीवालों का काम है कि वे दिल्ली की चीजें खरीदें, यहांवालों का काम है कि वे यहां की चीजें खरीदें। दिल्ली में जो बारिश होती है वह सुवर्णपुर में नहीं

आती। भगवान हर गांव में बूंद बूंद बारिश बरसाता है। उसी तरह घर घर में और गांव गांव में लक्ष्मी निर्माण करने की शक्ति चरखे मे पडी है। चरखा धन थोड़ा देता है जैसे बारिश की बूंद भी छोटी होती है। लेकिन बारिश की बूंद छोटी होते हुए भी घर घर बरसती है वैसे ही चरखे का धन थोड़ा होने पर भी घर घर निर्माण होता है। यह जब सोचते है तो आप को मालूम हो जायगा कि अपने गांव की रक्षा कैसे हो सकती है।

हमारे यहां पहले से वर्ण-धर्म चला आया है। वर्ण-धर्म का अर्थ यह है कि अगर बाप चमार है तो लड़के को भी चमार का धंधा करना चाहिये। लेकिन अगर हम अपने गांव के चमार का माल नहीं खरीदेंगे और बाहर का खरीदेंगे वैसे ही अपने बुनकर का कपड़ा न खरीद कर बाहरवालों का कपड़ा खरीदेंगे तो चमार का लड़का चमड़े का काम करेगा कैसे? और बुनकर का लड़का बुनकर का काम आगे चलायेगा कैसे?

गांव का शिक्षण ब्राह्मण संभाले

इस गांव में ब्राम्हण भी रहते है। ब्राम्हण विद्वान होते है। और देहातों में अकसर नहीं रहते। मैं अभी छोटे छोटे देहातो से होता हुआ आया हूं। मैने कहीं ब्राम्हणों के घर नहीं देखे। छोटा गांव होते हुए भी यहां ब्राम्हण हैं क्योंकि यह क्षेत्र का गांव है। लेकिन यहां ब्राह्मणों के होते हुए भी यहां के लोग शिक्षित नहीं हैं। यहां के लोग मुझे आज सबेरे कहते थे कि यहां एक मदरसा खोलने के लिये सरकार से प्रार्थना की जाय। सरकार हर गाँव में कहां तक

मदरसे खोल सकती है ? और पैसा भी कहां से ला सकेगी ? इस गांव में अगर ब्राह्मण रहते है तो यहां के बालकों को वे मुफ्त क्यों नहीं पढ़ाते हैं ? ब्राह्मण लोग रोज एक घंटा पढ़ायेंगे तो पाँच-सात साल में सारा गांव लिखना-पढ़ना सीख जायगा। मदरसा-खोलेंगे तो वहां बच्चों को रोज पांच छः-घंटे पढ़ना होगा। और इतना समय गरीबों के बच्चे निकाल नहीं सकेंगे। इसलिये मैंने ब्राह्मणों से कहा है कि वे सिर्फ एक घंटा पढ़ावें और बच्चे भी एक घंटा सीखें। कुछ लोग शाम को एक घंटा पढ़ायेंगे. कुछ लोग सुबह एक घंटा पढ़ायेंगे। पढ़नेवाले बाकी के समय काम करेंगे और पढ़ाने वाले भी काम करेंगे। अगर इस तरह ब्राह्मण बिना शुल्क विद्यादान करेगा तो उसकी प्रतिष्ठा कायम रहेगी। लेकिन ब्राह्मण बन गये लोभी और फिर भी प्रतिष्ठा कायम रखना चाहते है। लोभ और प्रतिष्ठा दोनों साथ नहीं रहेंगे। इसलिये मैंने ब्राह्मणो से कहा है कि वे विद्यादान करें।

वर्णाश्रम धर्म कैसे टिकेगा ?

ये सारे ब्राह्मण वर्णाश्रमाभिमानी होते हैं। लेकिन उनके बदन पर मिल के ही कपड़े हैं। अब मै उनसे पूछूंगा कि भाई आप अगर वर्णाश्रम का अभिमान रखते हैं तो गॉव के बुनकर का कपड़ा क्यों नहीं पहनते हैं ? अगर वे जूते पहनते हैं तो गाँव के चमार के बनाये हुये क्यों नहीं पहनते ? इस तरह वर्ण-धर्म की प्रतिष्ठा कायम रखना उनका काम है। मैं ब्राम्हणों से और सब से प्रार्थना करता हूं कि अपने गाँव के उद्योग कायम रखो और इस

तरह वर्ण-धर्म कायम रखने मे मदद करो। ऐसा करोगे तो गोदावरी के तट का यह गाँव फिर से भाग्यशाली और सही माने में सुवर्णपुर बनेगा।

इस गाँव के बहुत से लोग बाहर गये हैं। उन्होंने बाहर अपनी पढ़ाई की है। लेकिन वे अपने इस गाँव की क्या सेवा कर रहे हैं? उनका का काम है कि अपने गाँव का जो ऋण उन पर है वह चुकावें और उसके लिये गाँव की सेवा मे लग जायं।

सबसे समान व्यवहार करो

अंत मे एक बात और। यह क्षेत्र है। क्षेत्र में ब्राह्मण ऊंचे माने जाते हैं और हरिजन नीच माने जाते है। मुझसे कहा गया है कि मै इस बारे में कुछ कहू। लेकिन इस बारे में आप मुझसे मत पूछिये। इस गोदावरी नदी को ही पूछिये। क्या यह गोदावरी ब्राह्मण को पानी पिलाती है और हरिजन को नहीं पिलाती? तो जैसे गोदावरी सब के साथ समान व्यवहार करती है और यह सूर्य सब को समान भाव से प्रकाश देता है वैसे सबके साथ समान भाव से व्यवहार करना ही धर्म है। यह ऊंचा वह नीचा कहने वाले धर्म का आचरण नहीं करते। इसलिए इस क्षेत्र मे किसी तरह का भेद-भाव होना ही नहीं चाहिये। दुनियां में दो ही जातियां हैं। एक सज्जनों की और दूसरी दुर्जनों की। भला बर्ताव करनेवाला चांडाल भी ब्राह्मण से बढ़ कर है, और बुरा बर्ताव करनेवाला ब्राम्हण भी चांडाल से बदतर है।

तो मेरे भाइयो, मुझे जो कहना था मैं कह चुका। मैं एक दफा आपके गाँव में आया। फिर कब आऊंगा कौन जाने? हम लोग सर्वोदय यात्रा के लिये निकले है। जैसे यह गोदावरी आप के गाँव से होकर गुजरती है वैसे हमारी यात्रा भी सहज ही यहां आ गई है। तो आप से मेरी प्रार्थना है कि इस क्षेत्र को सच्चे अर्थ में क्षेत्र बनाओ। यहां के हर मनुष्य को पढ़ना-लिखना आना चाहिये एक बात, और यहां जो चीजें बनती हैं उन्हीं को आप को खरीदना चाहिये यह दूसरी बात। एक ज्ञान की है और दूसरी प्रेम की। ये दो बातें आप ध्यान में रखियेगा। मेरा आप को प्रणाम।

सोन अर्थात् सुवर्णपुर, (जि० आदिलाबाद)
२३-३-५१

सतरहवाँ दिन—

: २१ :

गाँव गोकुल बने

मुझे बहुत आनंद होता है कि आप इतनी बहनें और भाई

लेकिन आजादी का यह मतलब नहीं है कि आप बिना काम किये सुखी हो जायेंगे। हम लोग हाथ पर हाथ दिये बैठे रहेंगे तो हम आजाद हो गये है इसलिये मुफ्त खाने या पहनने को थोड़े ही मिलनेवाला है!

अपने ही सूतका कपड़ा पहनें

आज मैंने देखा यहां पर बहुत स्त्रियां कात रही थीं, लेकिन वह देख कर भी मुझे आनंद नहीं हुआ। क्योंकि कातनेवाली बहनों के बदन पर तो मिल का ही कपड़ा था। कातने से मजदूरी मिलती है। इसलिये वे कातती है। लेकिन हमारे सूत की कीमत

अगर हम नहीं करेंगे तो लोग क्यों करेंगे ? हमें हमारे सूतका ही कपडा पहनना चाहिये।

सरकार के सिपाही हैं

लोग मानते हैं कि हमको सरकार अनाज दे, कपड़ा दे। लेकिन क्या सरकार के पास अनाज का और कपड़े का खजाना है? हम सारे हमारी सरकार के सिपाही हैं। अगर हम सिपाही का काम नहीं करेगे तो हमारी सरकार बेकार हो जायगी। हम काम करेंगे तभी सरकार मजबूत बनेगी।

बाहर मत देखिए

इसलिये आप को मेरी सूचना है कि आप सब मिल कर एक समिति बनाइये। उस समिति दूवारा गाँव का सारा कारोबार चलाइये। गाँव में झगडा है तो बाहर की अदालत में नहीं जाना चाहिये। गाँव में कोई न कोई सज्जन होते ही है। उनके पास अपना झगड़ा रख कर उनका फैसला मानना चाहिये। सारे गाँव का हिसाब करके उसमें क्या बोना चाहिये वह तय करना चाहिये। आप के गाँव मे सब तरह की शक्ति है। अनाज आप तैयार करते है, तरकारी आप हीं करते हैं, दूध, घी भी आप के यहां होता है। इतना होते हुए भी आप भिखारी हैं, क्योंकि ये चीजें आप खा नहीं सकते, उनको बेचना चाहते है। और बेचते क्यों है ? पैसे के लिये। और पैसा क्यों चाहिये ? बाहर से सारा पक्का माल खरीदने के लिये। अपना कच्चा माल आप बेचते हैं और पक्का माल मोल लेते हैं। इस तरह से आप लोग स्वराज्य का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

हरेक को दो भाषाओं का ज्ञान हो

अब दूसरी बात जो आज मुझे सूझ रही है वह मैं कहता हूं। हमारी विधान सभा ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्वीकार किया है। इसलिये अब हरेक को राष्ट्रभाषा का उत्तम अभ्यास करना चाहिये। मैंने तो यह उपमा दी है कि जैसे मनुष्य को दो आंखें होती है वैसे हरेक हिंदुस्तानी को दो भाषाओं का ज्ञान होना चाहिये, एक अपनी मातृभाषा और दूसरी राष्ट्रभाषा। मेरा तर्जुमा करने के लिये जो यहां खड़े है उन्होंने हिंदी भाषा का अच्छा अभ्यास नहीं किया है। तो हो यह रहा है कि आपके लिये जो विचार मै भेजता हूं उसमे से कुछ आपके पास पहुचते हैं और कुछ बीच मे खतम हो जाते है। यह आज का अनुभव ध्यान मे लीजिये और जल्दी से जल्दी राष्ट्रभाषा का अध्ययन सब कर लीजिये।

बड़े राष्ट्र की जिम्मेवारी

इन दिनों छोटे-छोटे राष्ट्र टिकते नहीं है। हिंदुस्तान जैसा बड़ा देश ही टिक सकता है। पुराने जमाने में छोटे छोटे राष्ट्र टिकते थे। लेकिन आज जमाना दूसरा आया है। आज बडे राष्ट्र ही टिक सकते है। और आगे तो हम ऐसा स्वप्न देखते है कि सारी दुनिया मिल करके एक ही राज्य बन जाय।

तो यह सब ध्यान में लेकर हरेक नागरिक का कर्तव्य है कि भारत की कोई भी एक भाषा और अपनी मातृभाषा अच्छी तरह सीखे। सारे भारत को एक माना है तो यह जिम्मेवारी उठानी ही चाहिये।

आरमूर (जि० निजामाबाद)
२५-३-५१

उन्नीसवां दिन—

: २३ :

हमारे पाप

आज मुझे इस बात की खुशी है कि मै हिंदुस्तानी मे ही बोलूंगा और आप मेरे व्याख्यान को समझ लेगे। नहीं तो अकसर मेरे वाक्यो का तर्जुमा करना पड़ता था तेलगु में, जिसमें भाषण का बहुतसा सार मै खो बैठता था। लेकिन वह बात आज नहीं होगी और मेरी आवाज सीधी आपके कानों तक और मैं उम्मीद करता हूं कि हृदय तक, पहुचेगी।

अभी आप लोगों को सुनाया गया कि हम वर्धा से पैदल-यात्रा के लिये निकल पड़े है। शिवरामपल्ली में सर्वोदय संमेलन होने जा रहा है, वहां जा रहे है। वैसे रास्ते में तो आप का गाँव नहीं आता है, थोड़ा बाजू में है। इसलिये यहां आने का मैंने नहीं सोचा था। लेकिन आपके गाँववाले पहुंच गये। उन्होंने बहुत आग्रह किया तो मैं पिघल गया। और आप लोगों के दर्शन करने के लिये आरमूर से आज १७ मील चल कर पहुंच गया हूं।

छोटे देहात में क्यों जाता हूं

अकसर मेरी इच्छा खास कर छोटे छोटे गावों में जाने की होती है। क्योंकि ऐसे छोटे गाँवों में लोग बहुत कम पहुंचते है। इसके अलावा पदैल-यात्रा का यह उद्देश्य था कि जिन

देहातों में अकसर जाना नहीं होता है वहां जा कर वहां की स्थिति देखूँ। तो आप का गाँव वैसे छोटा भी नहीं था और रास्ते पर भी नहीं था। दोनों लिहाज से यहा आने का मुझे कोई आकर्षण नहीं था। फिर भी आप लोगों के प्रतिनिधियो ने आपका प्रेम मुझे पहुंचाय। वह मुझे यहां खींच लाया है। छोटे देहात मे जाना होता है तो घंटा डेढ़ घटा उस गाँव मे मै घूम लेता हूं। मेरे कार्यक्रम मे यह भी एक चीज है। बहुत सारे घरो मे जाता हूं; वहां की बहनो से बातचीत करने का मौका मिलता है। इस तरह काफी प्रेमभाव महसूस होता है। मेरे और गाँववालो के बीच कोई परदा नहीं रहता।

शहर की व्याख्या

अब यह बात शहरो मे तो नहीं होती। शहर मे यह अपेक्षा भी नहीं होती कि सब से परिचय हो। इतना ही नहीं बल्कि मैने तो शहर की व्याख्या ही यह की है कि शहर वह है जहां मनुष्य अपने पड़ोसी को नहीं पहचानता। अगर आप से पूछा जाय कि आपके पड़ोसी कौन है और वे क्या करते है, और आप उसका जवाब मुझे दे सके तो मै कहूंगा कि आप दर असल नागरिक हैं ही नहीं। आप देहात के रहनेवाले है। शहर तो वह है जहां एक दूसरे की पहचान नहीं, एक दूसरे की परवाह नहीं, और जहां प्रेम का कोई सवाल ही नहीं। हरेक अपने अपने में मग्न है। अगर दूसरे किसी से संबंध आया तो अपनी गरज से। टिकट घर पर लोग इकट्ठा होते है उनके बीच में कोई संबंध

नहीं होता सिवाय इसके कि हरेक को अपनी अपनी टिकट कटानी होती है। वैसे शहर मे जो समुदाय इकट्ठा होता है वह समुदाय की गरज से नहीं बल्कि अपनी गरज से होता है। तिसपर भी मानवता होती है इसलिये कुछ प्रेमभाव पैदा हो जाय तो लाचारी की बात है।

शहरो में नहीं रहते

एक पुरानी कहानी है। उपनिषदो मे वह किस्सा आया है। एक राजा था और उसने किसी ज्ञानी का नाम सुना। राजा का दिल बडा था। जब वह किसी ज्ञानी का नाम सुनता तो उससे मिलने की उसको बहुत तीव्र इच्छा हो जाती थी। तो राजा ने अपने सारथी को बुला कर कहा कि "जाओ भाई, फलाने ज्ञानी का नाम मैने सुना है उसका पता लगाओ। वह कहां रहता है? ढूंढ निकालो।" राजा के हुक्म से सारथी गया और उसने सारी राजधानी ढूंढी। लेकिन जिस ज्ञानी को ढूढना था उसका कोई पता नहीं लगा। वह राजा के पास वापिस आया और कहा, "मैने सब जगह ढूढ लिया लेकिन "नाविंद इति प्रत्येयाय"—मुझे वह ज्ञानी नहीं मिला।" तो राजा बोला, "अरे मूरख तू कैसा है, ज्ञानी जहां होते है वहां ढूंढना चाहिये। ज्ञानी क्या कहीं शहर में होते है?" फिर वह सारथी जंगल में गया। वहां उसको वह ज्ञानी मिला। फिर राजा को आकर सारथी ने यह बात बताई। राजा ज्ञानी के पास पहुंचा और बहुत कुछ ज्ञान उस ज्ञानी से उसने हासिल किया। वह सारा उपनिषद में दिया

है। हम लोगों को आश्चर्य होगा कि वह उपनिषद का ऋषि ज्ञान की आशा ही शहर मे नहीं करता है। और इधर देखो तो जो भी विद्यालय, हाईस्कूल या कॉलेज आदि खुले है सारे शहरोंमे है। मानों सरस्वतीदेवी ने अपने कमलासन को छोड कर नगर मे ही आसन डाला है। लेकिन उस जमाने मे यह बात जितनी सही थी उससे भी आज वह ज्यादा सही है कि शहर में कोई विद्या नहीं है।

शहरों में विद्या का लय

मै तो बहुत दफा कह चुका हू कि शहरो मे विद्यालय तो बहुत खुले हैं लेकिन वहां विद्या का लय होता है, विद्या का आलय वह नहीं है। आजकल के विद्यालयो मे जो विद्या पढ़ाई जाती है वह बिलकुल ही बेकार है। नागरिकों से जो कुछ आशा करनी है उसके लायक विद्या हाईस्कूल, कालिजों में होनी चाहिये, वह वहा मौजूद नहीं है तो वह विद्या किस काम की? आज कल जो विद्या चलती है वह हमारे काम की नहीं है, उसमें फौरन परिवर्तन होना चाहिये; यू कहते कहते सरदार वल्लभभाई पटेल चले गये। और मैंने तो कई दफा कहा है कि भाई इस तरह की विद्या होने के बजाय न होना बेहतर है। अगर नये ढंग के विद्यालय शुरू करने में देरी लगती है तो कम से कम पुरानी विद्या तो बंद कर दो। चार-छः महीने बच्चों को छुट्टी दे दो, कोई नुकसान नहीं होगा। वैसे तो आज जिस तरह स्कूल चलती है उसमें भी चार-छः महीनो की छुट्टी होती है। गरमी की मौसम में

लगातार दो-दो महीने छुट्टी होती है जब कि किसान धूप में अपने खेत पर काम करता है। लेकिन हम मकानों में बैठ कर विद्या का आदान-प्रदान नहीं कर सकते! इस तरह साल भर में चार-छः महीने छुट्टी लेते है और बारह-बारह पंद्रह-पंद्रह साल सीखते रहते हैं। बच्चों पर उनके मां-बाप तालीम के लिये पैसा खर्च करते हैं। और बच्चे बिना काम किये जिंदगी कैसे बसर हो इसकी खोज में रहते है। इसमें उनका कोई दोष नहीं है। जो विद्या उन्हें मिली है वह निर्वीर्य है। तो बच्चो के शरीर भी नाजुक बनते है। कोई रुहानी याने आत्मिक ताकत मिलती नहीं है, काम की आदत पड़ती नहीं और कोई दस्तकारी सिखाई जाती नहीं। जो उठता है उपदेश देता है कि देश की पैदावार बढ़ाने की आवश्यकता है, और हरेक का काम है कि देश के लिये कुछ न कुछ पैदा करे। इस तरह प्रवचन देनेवाले देते है और सुननेवाले सुनते है। लेकिन दोनों मिल-कर कोई चीज पैदा नहीं होती। चीज तो तब पैदा होती है जब कोई करे। लेकिन करने की तालीम स्कूल में नहीं है। इस हालत में देश का कोई भला यह शहर की तालीम नहीं कर रही है। उससे बेकारी में वृद्धि होती है, मनुष्य के दिल में एक तरह का असंतोष पैदा होता है। इसलिये यद्यपि शहरो में इतने विद्यालय है फिर भी देश का भला हो, मानवता ऊंची उठे, दीनों के दुःख मिटें परस्पर सहकार बढे, सारा देश वीर्यवान, बलवान हो ऐसा कोई काम हम कर नहीं पाते। और सारे शहर एक तरह से राष्ट्र के लिये भाररूप से हो गये हैं।

लेकिन सारी दुनिया कबूल करती है कि हिंदुस्तान के इतिहास में एक ऐसी विशेषता है जो दूसरे देशों के इतिहास मे कम पाई जाती है। यहां हमने अनेक प्रकार की तपस्या की है। यहां अनेक खोजें हुई हैं। अनेक तरह के आध्यात्मिक शोध यहां हुए हैं। इन दिनों पश्चिम में जिस तरह वैज्ञानिक और प्रापंचिक शोध हुये हैं वैसे हमारे यहां आध्यात्मिक शोध और प्रयोग हुये हैं। यह देश क्या है? यह तो सारी पृथ्वी का एक दर्शन है। "नाना धर्माणं पृथिवीम् विवाचसम्" अनेक धर्मवाले और अनेक भाषावाले लोग पृथ्वीभर में फैले हुये है और "माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:" यह सारी भूमि मेरी माता है और मैं उस भूमि का पुत्र हूं, यह जो सारी पृथ्वी के लिये वैदिक ऋषि ने कहा था वह इस भरतभूमि के लिये भी उतना ही लागू है। यहा के विचारवान और ज्ञानी लोगों ने कभी आप पर भेद नहीं रखा। जिसे संकुचित देशाभिमान कहते हैं वह इस भूमि में कभी जन्मा ही नहीं। इसलिये दुनियाभर के लोग यहां आये तो उनका बहुत प्रेम से यहां स्वागत हुआ है। इस तरह के कई पुण्य इस भूमि मे हुए है तो परमेश्वर की कृपा उस पर होनी ही चाहिये।

हमारी भूमि के कुछ पाप

लेकिन जैसे इस भूमि में कुछ पुण्य हुए है वैसे कुछ पाप भी हुए हैं। और पापों को पुण्य के साथ भुगतना ही पड़ता है। यह नहीं होता कि पांच रुपयों का पुण्य किया और तीन रुपयों का पाप किया तो आखिर दो रुपयों का पुण्य बचा। पाप-पुण्य का हिसाब पैसे जैसा नहीं होता है। अगर पांच रुपयों का पुण्य

किया है तो वह भी अलग से भोगना है और तीन रुपयों का पाप किया है वह भी अलग से भोगना है। दोनों को भोगना पड़ता है। एक में से दूसरा बाद नहीं होगा। बहुत लोगों को इस बात का खयाल नहीं होता। वे बहुत पाप करके पैसा कमाते है और फिर सोचते हैं कि कुछ दान देंगे, धर्मशाला बांध देंगे तो उस पुण्य से पाप खतम हो जायगा। लेकिन पाप और पुण्य दोनों अलग से भोगने पड़ते हैं। तो इस पुण्यभूमि में यद्यपि पुण्य काफी हुआ था तो भी पाप भी हुआ था। वह पाप यह कि यहां के लोगों ने उच्च-नीच भाव को बढ़ाया। हमारे समाज की रचना मे श्रम के लिहाज के खयाल से वर्ण-व्यवस्था का उदय हुआ और इसमे मै कोई दोष नहीं देखता हू। लेकिन उस वर्ण-व्यवस्था मे आगे चल कर उच्च-नीच भाव दाखिल हुए और जितने-जितने परिश्रम के उपयोगी काम थे वे सारे नीच श्रेणी के गिने गये। और वे काम करने वाले मनुष्य भी नीच माने गये। यहा तक कि उनमे से कुछ लोगों को अछूत तक हमने माना। काम करना बेइज्जती समझा गया। ज्ञानी काम नहीं करेगा, भक्त माला जपेगा लेकिन काम नहीं करेगा। संन्यासी काम नहीं करेगा। ब्राह्मण काम नहीं करेगा। इस तरह काम न करने वालों की सख्या बढ़ गई और उनकी इज्जत भी बढ़ गई। जो काम करते थे उनकी संख्या घट गई और उनकी इज्जत भी घट गई। यह बड़ा पाप हमारे देश में हुआ। तो उस पर परमेश्वर की अब कृपा हुई और शताब्दियो से हम लोग गुलामी भुगत चुके।

पापों का प्रायश्चित्त हुआ

अब यह दीखता है कि इस देश ने जितना पाप किया था उसका प्रायश्चित्त उसको मिल चुका ऐसा परमेश्वर को लगा। आखिर परमेश्वर कृपालु तो होता ही है। उसने अपनी कृपा इस देश की तरफ फिर से दिखाई, जो पहले भी थी। इसके सिवाय मैं और कोई कारण नहीं देखता कि हमारे जैसे टूटे-फूटे लोग भी गाँधीजी जैसा नेता निमित्तमात्र बनने पर आजादी हासिल कर सके। मैं तो हमारे लोगों में ऐसी कोई शक्ति नहीं देखता हूं कि जिसके बल पर हमको आज़ादी मिली ऐसा हम कह सकते हैं। अगर उस शक्ति का आत्मविश्वास हमें होता तो हिंदुस्तान की आज जो हालत है वह हम नहीं देखते। उसका रंग हमको दूसरा ही दीखता। यह कभी नहीं हो सकता कि स्वराज्य आता है। और लोगों का दुःख, विमनस्कता और मनोमालिन्य जो पहले था वैसा ही बना रहा। लेकिन ऐसा बना है तो उसका मतलब यह है कि परमेश्वर की इच्छा से ही हम स्वराज्य में दाखिल हुए हैं। इसी कृपा के कारण मैं यह देख रहा कि आज के बिगड़े हुए वातावरण में भी हाईस्कूल और कॉलेजों के युवानों में उच्च आकांक्षा और सद्भावना कुछ अंश में सर्वत्र है।

साम्ययोग से तरुणों को स्फूर्ति

हम लोग आश्रम में काम करते हैं वहां मेरे पास काफी तरुण लोग हैं। बहुत सारे तो हाईस्कूल-कॉलेजों को छोड़ कर आये हैं। और वहां आ कर वे क्या करते हैं? कोई खेती में लगा

गये हैं, कोई जमीन खोदते हैं, कोई पानी खीचते हैं, कोई रसोई करते हैं, कोई भंगी का काम करते हैं। हमको कुआं खोदने की जरूरत थी तो आखिर वह भी हमने शुरू कर दिया। जिन तरुणों को उस काम का कोई अनुभव नहीं था वे उस काम को बड़े उत्साह के साथ कर रहे है। मैं बड़ा ताज्जुब मे रह जाता हूं कि यह प्रेरणा उन जवानों में कहां से आयी। तो सिवाय इसके कि यह परमेश्वर की इच्छा है, मुझे और कोई जवाब नहीं मिलता है। और क्योंकि इसमें मैं परमेश्वर की इच्छा देख रहा हूं तो मेरा उत्साह परमावधि को पहुचता है। जब मै हिंदुस्तान की अभी की हालत के विषय में लोगो मे निराशा देखता हू तो उस निराशा का जरा भी स्पर्श मुझे नहीं होता। क्योंकि मै देखता हूं कि यद्यपि काफी अधकार फैला हुआ है, फिर भी उसको तोड़नेवाली शक्ति का जन्म हो रहा है, याने युवानों में बलवान प्रेरणा काम कर रही है। उनकी आत्मा उछल रही है। वे देख रहे है कि कौन ऐसा मिलता है जो हमें मार्ग बतायेगा जिससे कि सारे हिंदुस्तान में साम्ययोग दीख पडेगा। बस साम्ययोग का नाम लीजिये और तरुणो का उत्साह देखिये। इसीलिये जिन्होंने बिल्कुल परिश्रम नहीं किया था वे परिश्रम के लिये तैयार हो रहे है। और इस तरह का काम जहां भी आप शुरू करेगे वहां जवान लोग उत्साह से काम करने के लिये सामने आते है ऐसा दृश्य आप को दीख पड़ेगा।

मेरा खास दावा

इसलिये मै बहुत दफा कॉंग्रेस वालों को सुनाता हूँ। उनको इसलिये सुनाता हू कि वह एक बड़ी जमात है। उसके पीछे तपस्या का भाव है। पचास-साठ साल के इतिहास में कॉंग्रेस ने बहुत भारी तपस्या की है। इस युग में कई महान् महान् पुरुष हमारे देश में पैदा हुये और उन सबका प्रयत्न कॉंग्रेस के द्वारा हुआ। इसका मतलब यह हुआ कि कॉंग्रेस ऐसी संस्था बनी कि जिसका संपर्क सारे देश से आ गया। इसलिये मैं कॉंग्रेसवालों को सुनाता हू। लेकिन मै दूसरे लोगो को भी सुनाता हूं। समाज-वादियो मे मेरे कई मित्र है। वे जानते है कि यह एक ऐसा मनुष्य है जो भेद-भाव नहीं रखता है। मेरा ऐसा खास दावा है कि मै अपने को किसी पक्ष का कभी समझता ही नहीं हू। मेरे सिर पर किसी तरह का लेबल कभी चिपका ही नहीं। मेरा दिमाग किसी वाद के पीछे पागल नहीं हुआ है। जहां जहां सत्य का थोड़ा अंश भी दीख पडता है वह ग्रहण करने के लिये मैंने अपनी बुद्धि को हमेशा स्वतंत्र रखा है। इसलिये समाजवादियो में भी मेरे कई मित्र पड़े है। तो मै उनको भी सुनाता हूं और सबको सुनाता हूं कि अभी वाद-विवाद छोड़ दीजिये। वाद के लिये अभी मौका नहीं है। देश अभी ही स्वतन्त्र हुआ है। जहां देश स्वतंत्र होता है वहां कई तरह की शक्तियां काम करती है। उनमें कुछ शक्तियां प्रतिक्रियावादी भी होती है। उनका मुकाबला सबको मिल कर करना चाहिये। जब इनका मुकाबला होगा और देश का नैतिक

स्तर चाहिये वैसा बनेगा उसके बाद अपने अपने वादों के लिये अवकाश रहेगा। तब तक वादों को छोड़ो और सारे लोगों की सेवा में लग जाओ।

लोगों की सेवा कैसे होगी

और सेवा व्याख्यान श्रवणादि से नहीं बल्कि प्रत्यक्ष शरीर-परिश्रम से होगी। आज हिंदुस्तान के हरेक नागरिक से, और ग्रामीण से, चाहे वह पुरुष, स्त्री, बच्चा, बूढ़ा कोई भी हो, यह आशा की जाती है कि उस से जो भी प्रयत्न बन सकेगा अपनी मातृभूमि के लिये उसे करना चाहिये। अगर यह नहीं होता है तो हमारे देश की समस्या हल नहीं होगी। लोग मुझे पूछते हैं कि सर्वोदय क्या हैं? मै कई तरह के अर्थ समझाता हूं। एक अर्थ यह भी समझाता हूं कि सर्वोदय याने सब का प्रयत्न। एक बच्चा भी ऐसा नहीं रहना चाहिये कि जिसने देश के लिये कुछ न कुछ काम नहीं किया है। इसीलिये गांधीजी ने हरेक को दीक्षा दी कि सूत कातो। और भी दूसरे काम करो। लेकिन कोई इतना कमजोर है कि दूसरा कुछ काम नहीं कर सकता तो वह भी थोड़ा सूत अगर कात लेता है तो देश की पैदावार में उतनी वृद्धि होती है। जैसे बूंद बूंद से नदी बनती है वैसे हरेक मनुष्य से इस वक्त परिश्रम होना अत्यंत जरूरी है।

मै तो समझता हूं कि आप ऐसा कोई कार्यक्रम प्रत्यक्ष पैदावार का निकालो। गरीबो से एकरूप होने का कार्यक्रम

निकालो कि जिससे अमीर, गरीब, शिक्षित, अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण यह सारा भेद मिट जाय, किसी प्रकार का उच्च-नीच भाव न रहे। इस तरह का कार्यक्रम शुरू करो तो कोई वाद का सवाल ही पैदा नहीं होगा और आप देखेंगे कि तरुणों को कितना उत्साह आता है और कितनी तीव्र प्रेरणा से वे उस कार्यक्रम में शामिल होते हैं।

तो मै सब से पहले काँग्रेसवालों को सुनाता हूं फिर समाजवादियो को सुनाता हूं और बाद मे और भी जो बहुतसे वादी पड़े हैं उनको सुनाता हूं कि भाइयो, तुम्हारे जो भी अलग विचार हैं वह सारे रखो तुम्हारे पास। मै यह नहीं कहता कि उनको छोड़ दो क्योंकि जो विचार तुमको अच्छे लगते है और तुम्हारे दिल में बैठे है वे आप कैसे छोडेगे ? और छोड़ना भी नहीं चाहिये। लेकिन उन विचारों को ध्यान में रखते हुए भी यह समझो कि फिलहाल देश को शरीर-परिश्रम की जरूरत है और भेदभाव मिटाने के कार्यक्रम हाथ मे ले लो। तो देखोगे कि कितनी महान् शक्ति पैदा होती है। हमने थोड़ा करके देखा है जिससे हमको अनुभव आया है कि कितनी स्फूर्ति उससे मिलती है। देखनेवालो और सुननेवालों को स्फूर्ति मिलती है तो प्रत्यक्ष करनेवालों को कितनी मिलती होगी इसका अंदाजा आप लगाइये।

आज आपके शहर में आया तो यह विचार सहज सूझा कि शहर और देहात मे भेद क्यों होना चाहिये ? शहरों को देहात की सेवा में लग जाना चाहिये। देहातियों मे शहरों को मदद

करने की प्रेरणा होनी चाहिये। इस तरह एक दूसरे को एक दूसरे की मदद करने की प्रेरणा क्यो नहीं होनी चाहिये? ऐसी प्रेरणा यदि होती है तो यह सारा भेद मिट जायगा और सारे मिल-कर हिंदुस्तान की सेवा मे लग जायेंगे। भगवान ने हरेक को अलग अलग शक्ति दी है। इस तरह की विषमता दुनिया मे है इसमे दोष नहीं बल्कि लाभ है। अगर संगीत में केवल 'सा' 'सा' 'सा' ऐसा एक ही स्वर होता, 'ग' 'म' आदि कुछ नहीं होते तो संगीत ही नहीं बनता। लेकिन भिन्न-भिन्न स्वर होते हुये भी हरेक मे भिन्न भिन्न गुण है इसलिये मधुरता होती है और सब मिल कर सुदर संगीत बनता है। वैसे शहरवालो मे कुछ शक्तियाँ पड़ी है, लेकिन वे सारी एक दूसरे के खिलाफ काम करती है तो उन शक्तियो का जोड नहीं होता बल्कि घटती ही होती है। दस के विरोध में अगर आठ खड़े होते है तो दोनों मिल कर दो ही शक्ति रह जाती है। लेकिन दस के साथ अगर आठ लगते है तो शक्ति अठारह बनती है। यह सीधी गणित की बात है। तो हमारे देश मे शक्ति काफी पड़ी है। लेकिन उस शक्ति का साक्षात्कार हमे तब होगा जब कि वह सारी एक दिशा में लग जाय। नदी का पानी जब कई जगहों से एक दिशा मे आता है तो शक्तिशाली नदी बनती है। लेकिन पानी अगर इधर उधर दौड़ता चले और नदी न बने तो वह सारा का सारा पानी कहीं न कहीं गायब हो जायगा। उसमें से कोई विशेष महान प्रवाह बनता हुआ दीख नहीं पडेगा। वैसे हममें शक्ति कम नहीं है।

लेकिन वह सारी अगर एक दिशा मे लग जाती है तो उसका प्रकाश पड़ेगा, उसका स्वरूप दीख पड़ेगा, उसके परिणाम का अनुभव आयेगा।

मेरे भाइयो, मैंने आपको काफी सुनाया। अगर आप के दिलो तक मेरी बात गई है तो कुछ न कुछ उत्पादक शरीर-परिश्रम मे लग जाइये और ऊच-नीच भाव मन मे से बिलकुल निकाल दीजिये। यह मेरी आप से प्रार्थना है।

निजामाबाद
२६-३-'५१

बीसवाँ दिन—

: २४ :

सज्जनों का समाज

कुष्ठ-रोगियों की सेवा

आप के इस गांव में कोई पंद्रह-बीस साल पहले मैं एक बार आया था। लेकिन यहां गांव के भीतर नहीं आया। कुष्ठ-रोगियों का दवाखाना देखने के लिये आया था जो उन दिनों बहुत मशहूर था। हिंदुस्तान भर मे इस तरह के कुष्ठ-रोगियों के दवाखाने ईसाई भाइयों ने चलाये हैं। वैसे हिंदुस्तान में ईसाइयो की संख्या बहुत कम है। और जो बीमार होते हैं उनमें ज्यादातर हिंदू-मुसलमान ही होते है, ईसाई कम होते हैं। उन दिनों हमारे मन में विचार आता था कि हम ऐसी सेवा क्यों न करें? वैसे हम लोग दूसरी सेवा तो करते थे, जैसे हरिजन सेवा, खादी आदि। लेकिन कुष्ठ-रोगियों की सेवा का काम हाथ में नहीं लिया था। जब इस सेवा के क्षेत्र में आने की इच्छा हुई तो हममें से एक इस काम के लिये तैयार हो गये। उनकी तीव्र इच्छा हुई कि यह काम करें। तब वर्धा में हमने यह काम शुरू कर दिया। उस दृष्टि से उस समय वह दवाखाना मैंने देखा था और देखकर मुझे बहुत खुशी हुई थी। हमारे मित्र श्री मनोहरजी ने यह काम शुरू किया। वे खुद डॉक्टर नहीं थे। लेकिन इस काम के लिये जरूरी डॉक्टरी का ज्ञान

उन्होंने प्राप्त किया। इतने दिन उन्होंने अकेले ही काम किया। वैसे वर्धा के कुछ डॉक्टरों ने भी उनकी मदद की।

लेकिन अब वहां दो अच्छे कार्यकर्ता इस काम के लिये मिले हैं। बीमारों की व्यवस्था भी अच्छी है। गांधीनिधि वालों ने भी तय किया है कि उस निधि से इस काम को कुछ मदद पहुंचाई जाय। क्योंकि महात्मा गांधी ने जो रचानात्मक कार्य बताये हैं उनमें इस काम का भी समावेश है। हम आशा करते हैं कि वह काम अब ठीक चलेगा।

सेवकों की कमी

लेकिन भारत में सेवको की बहुत कमी है। और यह सेवकों की कमी हमारे हर काम में बाधा डाल रही है। मानों फसल तो बहुत ज्यादा है और काटनेवालों की कमी है। हमारे देश में आज तरह-तरह के सेवकों की जरूरत है। आज तक स्वराज्य नहीं था तो वह प्राप्त करने में कार्यकर्ताओं की शक्ति लगी थी। लेकिन अब स्वराज्य मिलने पर कार्यकर्ताओं को सेवा के काम में लग जाना चाहिये।

सेवकों का काम

भारत देश में केवल यही एक रोग नहीं है। और भी बहुत रोग है। इन सब रोगों से लोगों को मुक्त करना सेवकों का काम है। लोगों को अच्छा खाने को भी नहीं मिलता। अच्छी खुराक के अभाव में रोगों की बन आती है। तो रोगों की भी एक समस्या है। और दरिद्रता की भी एक समस्या है। फिर दरिद्रता की समस्या के साथ व्यसनों की भी समस्या है। जिधर देखो उधर शराबखोरी

चल रही है। इधर इस मुल्क मे तो लोग शराब खूब पीते दीखते है। सब को शराबखोरी से मुक्त करना हमारा काम है। मतलब यह कि जिधर देखो उधर सेवा का काम पडा ही है। इसलिये सेवा में फौरन लग जाना चाहिये। कॉंग्रेसवालो को और दूसरे जो सेवक हैं उनको भी।

शराब के विरुद्ध प्रचार की आवश्यकता

पुराने जमाने मे कॉंग्रेस पिकेटिंग द्वारा शराब के विरुद्ध प्रचार करती थी। अब तो कॉंग्रेस का ही राज्य है, लेकिन सरकार को लगता है कि शराबबदी से सरकार की आमदनी बंद होगी और लोग तो छिप छिप कर चोरी से शराब पीते ही रहेगे। इसलिये कार्यकर्ताओ का काम है कि चित्रो और व्याख्यानो के जरिये शराब की बुराइयो को लोगो के सामने रखें। जब ऐसे प्रचार से वातावरण तैयार हो जायगा तो गाँव गाँव मे प्रस्ताव पास करके सरकार को शराबबदी के लिये कानून बनाने की बात हम कह सकते है। याने इधर ज्ञान-प्रचार द्वारा और उधर कानून द्वारा यह काम करना होगा।

जो व्यसन लोगों मे सालो से घुसा हुआ है उसे निकालने में तकलीफ तो होगी; लेकिन यह बात भी सही है कि हमारे सारे देश में वातावरण शराबखोरी के लिये अनुकूल नहीं है, प्रतिकूल है। यद्यपि सब लोग इसके विरोध मे है फिर भी कुछ जातियां, जैसे हरिजन आदि, शराब अधिक पीती हैं। इसलिये केवल कानून से यह काम हो, ऐसा नहीं मानना चाहिये। हम लोगो को प्रचार भी

काफी करना चाहिये। और ये जो प्रचारक होंगे वे केवल प्रचारक नहीं होंगे बल्कि गाँवों की विविध सेवा करनेवाले कुशल सेवक होंगे। अगर वे ऐसा करेंगे तो आप को यहां कम्युनिज्म का जो डर लगता है उसको भी वे रोक सकेंगे। क्योंकि आखिर कम्युनिस्टों का जो हिंसक तरीका है वह हमारे देश को कभी पसंद नहीं आ सकता। फिर भी क्योंकि देश मे गरीबी है, लोग उनकी बात मान लेते है। अगर हम लोग देहातो मे चले जाय और उनकी सेवा मे लग जांय तो उन्हे महसूस होगा कि कॉंग्रेसवाले हमारी सेवा मे लग गये है। इस दृष्टि से सेवा के बारे मे यह डिचपल्ली का दवाखाना हमे गुरुरूप बना है। दूर दूर से अंग्रेज लोग आते है और हमारी सेवा करते है यह क्या हमारे लिये शरम की बात नहीं है? कॉंग्रेस-वाले अगर आइंदा इस तरह सेवा के काम मे नहीं जुट जायेंगे तो कॉंग्रेस खतम होगी। यह तो मैंने सेवकों के लिये कहा। किंतु गाँववालों को भी चाहिये कि वे भी खुद अपनी सेवा करे।

सज्जनों का समाज

लोग यह नहीं कह सकते कि हमारे यहां सेवक नहीं है। जंगल के जानवर भी शेर आदि हिंसक पशुओं से बचने के लिये आपस मे झुंड बना कर रहते है, और एक दूसरे की मदद करते हैं। आप लोग तो आखिर मनुष्य हैं। अगर आप प्रेम से रहेंगे और एक दूसरे की मदद करेंगे तो गाँव की रक्षा सहज कर सकते है। जैसे हम अपने परिवार की सोचते हैं वैसा सारे गाँव की भी सोचने की आदत डालनी चाहिये। लेकिन अपने परिवार के बाहर हम

सोचते ही नहीं। सालों से यही आदत पड़ी है। इसलिये आप लोगों को गाँव मे सज्जनों का एक समाज बनाना चाहिये। जानबूझ कर मैने इसे 'समाज' नाम दिया है। याने यह जो समाज बनेगा वह किसी तरह का अधिकार नहीं चाहेगा। वह सिर्फ सेवा करना चाहेगा।

गाँव मे दुर्जन भी होते है। आपस आपस में संघ करते है। लेकिन सज्जन लोग ऐसा संघ नहीं करते। हरेक सज्जन अकेला अकेला काम करता है इसलिये सज्जनों की शक्ति प्रकट नहीं हो पाती। इसलिये हम लोगों ने सर्वोदय-समाज कायम किया है। ऐसा सज्जनों का समाज हर गाँव में बनना चाहिये फिर यह सोचेगा कि गाँव की बुराइयों का मुकाबला कैसे किया जाय? इस समाज को चाहिये कि सारी समस्याओं पर सोचे। यही सज्जनसंघ का काम होगा। ऐसा संघ आप अपने गांव में कायम करेंगे और गाँव की सेवा करेंगे ऐसी मैं आशा करता हूं।

डिचपल्ली
ता. २७ ३-५१

इक्कीसवाँ दिन—

: २५ :

गाँव स्वर्ग-भूमि है

हम भी देहात मे रहते हैं

हम लोग वर्धा से पैदल यात्रा मे आ रहे है। वैसे वर्धा तो एक बडा शहर है। लेकिन हम लोग वर्धा में नहीं रहते। वर्धा के नजदीक छोटे देहात मे हम रहते है। आप का जैसा यह छोटा गाँव है वैसा हमारा भी एक छोटा गाँव है। महात्मा गांधी वर्धा मे रहे यह सब जानते है। लेकिन वे वर्धा शहर मे नहीं बल्कि वर्धा से नजदीक एक छोटे गाँव में रहे। वैसे पहले वे वर्धा आये। फिर उन्होने कहा कि हमें शहर में नहीं रहना है, बल्कि गाँव में रहना है तो कोई गाँव ढूंढो। फिर वर्धा से चार-पांच मील दूर एक छोटा गांव ढूंढ लिया। और उस गाँव का नाम सेवाग्राम रखा। उस गाँव में वे दस-बारह साल रहे। उन्होंने सारे देश का काम उस छोटे गाँव में बैठ कर किया। वहां ही बड़ी बड़ी सस्थाये खुल गई जो सारे देश का काम करती हैं। आप जानते हैं कि बड़े लोग तो बड़े बड़े शहरो मे रहते है। कोई हैद्राबाद में रहेगा कोई बंबई रहेगा तो कोई दिल्ली रहेगा। हम सब महात्मा गांधी को बड़ा मनुष्य कहते है। लेकिन उन्होंने छोटे गाँव में रहना पसंद किया। उनको मिलने के लिये बड़े बड़े लोग

आते थे तो उनको भी वे देहात मे घसीट लाते थे। उन्होंने हमे सिखाया कि हिंदुस्तान के गरीब लोग गाँवो मे रहते हैं तो उनकी सेवा के लिये गाँवो मे जाओ। उनकी आज्ञा और शिक्षण के मुताबिक हम लोग भी छोटे छोटे गाँवो मे दस-दस पंद्रह-पंद्रह सालो से रहते है।

बैकुंठ की व्याख्या

छोटा गाव याने स्वर्गभूमि है। लेकिन स्वर्ग को भी मनुष्य नरक बना सकता है। हम आज सुबह आपका गाव देखने के लिये आये थे। यहा लोगो मे प्रेम बहुत देखा। स्वर्ग और वैकुंठ तो प्रेम को ही कहते है। जहां प्रेम है वहा वैकुंठ है। मैने देखा कि आप के इस गांव में प्रेम बहुत है। तो यह एक स्वर्ग हो सकता है। लेकिन उस प्रेम के साथ ज्ञान भी चाहिये, और स्वच्छता भी चाहिये, तब स्वर्ग बनता है। तो जहां प्रेम है, ज्ञान है और स्वच्छता है वहा वैकुंठ आ गया। आपके घरो मे तो कुछ स्वच्छता देखी लेकिन गाँव काफी गंदा था। तो सब लोगो को मिल कर रोज कुछ न कुछ गाव की सफाई का काम करना चाहिये। हमारे यहां छोटे छोटे गांवो में सफाई का काम चलता है। एक रोज पुरुष काम करते है, एक रोज स्त्रियां काम करतीं है और एक रोज बच्चे काम करते है, इस तरह सफाई का काम बांट लिया गया है। इस तरह सारा गाँव साफ करने की तालीम उस गांव को मिल रही है। यह नहीं हो सकता कि आप का गांव साफ करने के लिये शहर से कोई मेहतर आ जाय। आप के घर की स्त्रियां जिस तरह घर का सफाई का काम करती है

वैसे सब गांववालों को मिल कर अपने गांव की सफाई करनी चाहिये। जब गांव स्वच्छ होगा तो अपना हृदय भी स्वच्छ होगा। हमें अगर

बात है कि किसी को गाँव छोड़ कर जाना पड़े। हमारे गाँव का मनुष्य कैसा भी क्यों न हो अपना मनुष्य है। तो हम सबको उसकी रक्षा करनी चाहिये। अगर हमारा किसी से झगड़ा है तो हम उसके साथ प्रेम से झगड़ेंगे। लेकिन उसकी रक्षा तो गाँव में जरूर होगी। किसी के शरीर को जरा भी तकलीफ नहीं पहुंचने देंगे। इस तरह गाँव की रक्षा की जिम्मेवारी हमारी है। जरा कहीं भय मालूम हुआ तो लोग पुलिस को बुलाते हैं। अब पुलिस गाँव में आकर क्या करेगी? वह भी दूसरों को लूटती है। लूटनेवालों ने गाँव को लूट लिया। उसके बचाव के लिये पुलिस आये तो उन्होंने भी गाँव को लूट लिया। तो आप को पुलिस की आशा नहीं रखनी चाहिये और अपने गाँव की रक्षा खुद करनी चाहिये। गरीब लोगों

से ही सरकार को पैसा मिलता है। वह पैसा अगर पुलिस पर ही खर्च होगा तो आपके हित के लिये सरकार कुछ नहीं कर सकेगी। आपको सरकार से कहना चाहिये कि हमारे गाँव मे पुलिस मत भेजो। हमारी रक्षा करने के लिये हम समर्थ है। हमने जवान लोगों की सेना बनाई है। गॉव में अगर कोई दुर्जन भी रहा तो उसका भय नहीं मालूम होना चाहिये। दुर्जन को भी हमे प्रेम से जीतना है। हमारे गॉव का भाई हमारे घर का मनुष्य है। अगर लड़का ठीक बर्ताव नहीं करता है तो क्या माता उसको घर से निकाल देती है? वह तो उसको प्रेम से जीतेगी। उसी तरह गाँव के सब लोगों को हमें प्रेम से सीधे रास्ते पर लाना है। लोग कहते हैं कि दुर्जन पर हम प्रेम करते है तो वह और भी दुर्जन बनता है। लेकिन यह खयाल गलत है। अगर कहीं अधकार है और उसमें हम दीपक लाते है तो क्या अंधकार ज्यादा हो जाता है? इस बात का बहुत अनुभव आ चुका है कि सज्जनता के सामने दुर्जन की बुद्धि भी शुद्ध होती है।

शिक्षण का जिम्मा गॉववाले उठायें

आप के गाँव में एक बहुत अच्छी बात हमने देखी, जो हमारी तरफ उत्तर हिंदुस्तान में नहीं है। किसी देहात में अगर हम सभा करते हैं तो आप के यहाँ स्त्रियाँ भी बहुत आती हैं। लेकिन वहां तो पुरुष ही पुरुष आते हैं। बहुत सी स्त्रियां तो परदे मे रहती हैं तो सूर्य का दर्शन भी बिचारी को नहीं होता। आप के यहां स्त्री, पुरुष दोनों प्रेम से एक जगह आते हैं और ज्ञान सुनते है,

यह अच्छा है। गाड़ी में दो पहिये होते है, वैसे संसार की गाड़ी के भी स्त्री और पुरुष ये दो पहिये हैं। दोनों को ज्ञान की अत्यंत आवश्यकता है, और समान आवश्यकता है। लेकिन मैंने सुना है कि आप के गाँव में जो स्कूल चलता है उसमें केवल लड़के ही जाते है, लड़कियां नहीं जातीं। लेकिन लड़कियों को भी अच्छी तालीम मिलनी चाहिये। मैं जानता हूं कि गरीब लोगों के लड़के और लडकियां स्कूल में नहीं जा सकतीं, उनको घर मे काम रहता है। तो मै कहता हूं कि गाँव में एक घंटे की स्कूल चलनी चाहिये। वह स्कूल सरकार नहीं बल्कि गाँव का पढ़ा-लिखा आदमी चलायेगा। उसके लिये पैसे भी नहीं लगेंगे। वह आदमी प्रेम से रात को एक घंटा सिखायेगा और दिन में भी एक घंटा सिखायेगा। अभी गोदावरी के तीर पर सोन नाम का गाँव है वहाँ, मैं गया था। वहा के लोगों से मैंने कहा कि प्रेम से एक घंटा सिखाने के लिये तैयार हो जाइये। वहां पर वैसे लोग तैयार हुए और मेरे जाने के बाद एक घंटे की पाठशाला वहां शुरू हो गई है। तो जैसे उस गाँव में हुआ है वैसे आप के गाँव मे भी हो सकता है।

सहकारी दूकान गाँव में होनी चाहिये

मैने पूछा इस गाँव में दूकानें कितनी है। तो कहा गया कि तीन-चार है। लेकिन ये दूकानें खानगी हैं। मैं चाहता हूं कि आप के गाँव में सब लोगों की एक दूकान होनी चाहिये। चार-चार पांच-पांच रुपयों का शेअर बनाइये। इस तरह सब के पैसे से दूकान करेंगे तो आप को अच्छा माल मिलेगा और कोई

किसी को ठगेगा नहीं। अगर हरेक घर से चार-आठ या दस रुपये मिल जाते हैं तो तीन-चार हजार रुपयों की दूकान हो सकती है। इस तरह की बड़ी दूकान अगर गाँव में चले तो सब को ठकि भाव से माल मिलेगा। एक बच्चा भी उस दूकान पर माल खरीदने जायगा तो उसको ठीक भाव से ही माल मिलेगा। वह दूकान आपके गाँव की होगी। आप सब लोगों का उस पर हक होगा। उसमें अगर कोई लाभ हुआ तो वह भी आप सब लोगों को मिलेगा। मै जानता हूं कि देहात के लोगों के पास धन कम है। लेकिन जो थोड़ा सा है वह इकट्ठा करेंगे तो बडा काम हो सकता है। देहात मे धन कम है लेकिन शरीर-श्रम करने की शक्ति बहुत है। तो उसका उपयोग करो और सब मिल कर गाँव का काम करो इतना ही मुझे कहना है। मेरा आप लोगो को प्रणाम।

कलवरल, (जि० निजामाबाद)
२८-३-५१

पैदल-यात्रा का इतिवृत्त

विनोबाजीने ८ तारीख को सुबह प्रार्थना करके ठीक ४॥ बजे परंधाम आश्रम से बिदा ली और हैद्राबाद के सर्वोदय समेलन मे शामिल होने के लिये पैदल-यात्रा शुरू की।

परंधाम आश्रम से विनोबाजी, महादेवीताई, मदालसाबाई, और दामोदरदास मूंदड़ा तथा गोपुरी से भाऊ पानसे, दत्तोबा और पांडुरंग गाड़ीवाला; इस तरह कुल सात लोगो की टुकड़ी रवाना हुई। बैलगाड़ी में टुकडी का सारा सामान रख लिया। यह गाड़ी हैद्राबाद तक साथ रहनेवाली है। आगे चल कर व्यवस्था अदि करने के लिये दो सायकलें भी साथ थीं।

वर्धा के श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर में विनोबाजी ठीक ६ बजे पहुंचे। नारायण भगवान का दर्शन करना और वर्धा निवासियों तथा वर्धा की सस्थावालों से बिदा लेना यह छोटा-सा कार्यक्रम रखा गया था। विनोबाजी मूर्ति के सामने खड़े हो गये और ऊंचे स्वर से श्री शंकराचार्य का "अच्युत केशवं रामनारायणं" यह विष्णुस्तोत्र गाने लगे। अंत में गद्‌गद् हो कर भगवान को नमन किया और आशीर्वाद के लिये मनोमय प्रार्थना की। यह दृश्य देखकर कइयों को वह दिन याद आया जब श्री जमनालालजी ने यह मंदिर हरिजन आदि सब के दर्शन के लिये खोल दिया था। विनोबाजी उस दिन

भगवान विष्णु के चरणोंपर दृष्टि लगाये भावावस्था में लीन हो गये और उनकी आंखों से प्रेमाश्रु की अजस्र धार बहने लगी। निर्गुण-सगुण एक हो गये। आधा घंटा ठहर कर विनोबाजी ने अपनी यात्रा आगे चलाई।

तारीख ८ से २३ तक की उनकी यात्रा का वृत्त नीचे दिया गया है।

यात्रा का दिन	तारीख	मुकाम का गाँव	जिला	कितने मील चले
(१)	८ मार्च	वायगाँव	वर्धा	१३
(२)	९	रालेगाँव	यवतमाल	१७
(३)	१०	सखी-कृष्णपुर	,,	१४
(४)	११	रुंझा	,,	१०
(५)	१२	पांढरकवडा	,,	१२
(६)	१३	पाटण बोरी	,,	११
(७)	१४	आदिलाबाद	निजामस्टेट, आदिलाबाद	१६
*(८)	१५	कौसल्यापुर	आदिलाबाद	१३
*(९)	१६	मांडवी	,,	११
*(१०)	१७	तलमडगु	,,	१५
(११)	१८	गुडीहतनूर	,,	११
(१२)	१९	इच्छोडा	,,	८
(१३)	२०	निरडगोंडी	,,	११

(१४)	२१ '	गोपाल पेठ	आदिलाबाद	१३
(१५)	२२	निर्मल	,,	५
(१६)	२३	सुवर्णपुर	,,	८

'चिन्हांकित गाँव हैद्राबाद के रास्ते पर नहीं थे। लेकिन मांडवा के कस्तूरबा ग्राम सेविका केंद्रवालों के आग्रह के कारण करीब ४२ मील का प्रवास अधिक हो गया।

विशेष बातें

वायगाँव के पहले मुकाम पर ही विनोबाजी ने गाँववालों से बात छेड़ी कि मजदूरों को हर रोज की मजदूरी में पैसे के अलावा कुछ अनाज निश्चित प्रमाण में देना चाहिये। साल्दारों को ऐसा दिया जाता है। कुछ चर्चा के बाद गाँववालों ने विनोबाजी की बात मान ली। विनोबाजी ने दस छटाक ज्वार का प्रमाण स्त्री-पुरुष सब मजदूरों को एकसा ही रखने का सुझाव रखा। ऊपर से जो पैसे देंगे उसमें कमी बेशी कर सकते हैं लेकिन ज्वार हमेशा के लिये दस छटाक देनी चाहिये। गाँववालों ने ज्वार देने का प्रस्ताव किया और शाम की प्रार्थना के बाद लोगों को वह सुनाया भी गया।

रालेगाँव पहुचने के पहले पोटी गाँव में हम लोगों ने वर्धा नदी पार की, और साथ ही वर्धा जिला। नदी में पानी बहुत ही कम था। रालेगाँव से हम यवतमाल जिले में दाखिल हो गये

रालेगाँव में विनोबाजी ने यही बात दोहराई। वहां तीन

लोगों ने दस्तखत कर के वचन दिया कि वे मजदूरी में दस छटाक ज्वार देंगे।

सखी-कृष्णपुर जगल में बसे हुये गाँव हैं। सखी और कृष्णपुर अड़ोस-पड़ोस मे है। विनोबाजी का मुकाम सखी गाँव मे रखा गया था। इस जगह पर पहुँचते समय जंगल मे रास्ता भूलने के कारण कुछ घूम कर हम लोग पहुंचे। चार साढ़े चार मील तक बीच मे कोई आदमी भी नहीं मिलता था। पथरीला और ऊंचा नीचा रास्ता था। लेकिन जब गाँव में पहुंचे तो श्रमपरिहार हो गया। बीस-पचीस घास के झोंपड़े थे। लेकिन आम्र-वृक्षों की घनी छाया के नीचे तंबू में हमारा पडाव रहा इसलिये चित्त प्रसन्न हो गया। गांव के लोगो ने बड़े प्रेम से खिलाया पिलाया।

शाम की प्रार्थना मे बहनें अधिक से अधिक आयें इस दृष्टि से मदालसाबाई हर घर मे गई और बहनों को प्रार्थना सभा मे ले आई। आसपास के गांवों से भी काफी लोग गाड़ियाँ ले कर पहुंच गये थे। तना छोटा और जंगल के बस्ती का गांव होते हुए भी यहां की सभा अच्छी हुई। बहनें कुछ देर से पहुंची। इसलिये उनके लिये विनोबाजी ने ५-१० मिनिट खास दिये।

मेटी खेड़ा के श्री आनंदराव सरोदे नाम के भाई सभा में आये थे। परंधाम के कांचनमुक्ति के प्रयोग के बारे में उन्होंने सवाल पूछा। बाद में विनोबाजी से उनका निकट परिचय भी हुआ। विनोबाजी ने इनका नाम सर्वोदय ही रख दिया। ये भाई आगे रुंझा में भी मिले।

'दैनिक प्रार्थना' की दो पैसेवाली किताबें लोग बहुत खरीदते है। विनोबाजी का साहित्य भी साथ रखा गया है। हर मुकाम पर प्रार्थना के पहले और बाद में साहित्य की बिक्री होती है।

वर्धा से वायगांव पक्का रास्ता था। वायगांव से आगे रुझा के पास मोहदा गांव तक कच्चे रास्ते से ही मुसाफिरी हुई। मोहदा से आगे पांढरकवडे तक पक्की सड़क ही थी। पांढरकवड़े से फिर कच्चा रास्ता लिया। यवतमाल जिला पैनगंगा के किनारे पर समाप्त हो जाता है। पाटणबोरी से तीन मील की दूरी पर पैनगंगा मिली। इस नदी में भी पानी बहुत कम था। नदी पार करने पर निजाम स्टेट शुरू हो गई। कामई नाम के गांव से फिर पक्की सड़क मिली जो आदिलाबाद और उसके बाद हैद्राबाद तक है।

पांढरकवड़ा गाँव न देहात और न शहर ऐसा अधूरा सा ही है। यहां की प्रार्थना में बच्चों ने असंस्कारिता का ही परिचय दिया। अशांति खूब रही। आपस में मारना-धकेलना भी चलता रहा। विनोबाजी का करीब आधा घंटा बच्चों को समझाने में ही गया। इससे प्रार्थना सभा के लिये जो वातावरण चाहिये था वह नहीं रहा। विनोबाजी ५-१० मिनिट ही बोले। शहरों के बच्चों में मामूली सभ्यता भी दिखाई नहीं देती इसके लिये शालाओं के संचालकों को भी उन्होंने दोष दिया। संस्कारिता की दृष्टि से देहात और शहर का भेद साफ नजर आता था।

पाढरकवड़ा में गंगाबिसनजी, राधाकृष्णजी, अनसूया, शांताबाई रानीवाला और ईश्वरभाई राका आ मिले थे। यवतमाल के डॉक्टर मोरे भी आये। दिल्ली से हिंदुस्तान टाइम्स के संवाददाता श्री कल्हण भी आ पहुंचे। वे दस दिन साथ रह कर निर्मल से वापिस गये। गंगाबिसनजी, राधाकृष्णजी और अनसूया आदिलाबाद तक साथ रहे। शांताबाई रानीवाला मांडवी तक साथ रहीं और वहां से डॉ० मोरे के साथ वापिस वर्धा आ गई। ईश्वरभाई हैद्राबाद तक साथ रहेंगे।

विनोबाजी तीन बातो पर खास ध्यान देते है: सुबह पांच बजे कूच करना, रात को नौ बजे सो जाना और दोपहर में ११ बजे भोजन करना। ये तीन बातें नियमित रहें तो बाकी का कार्यक्रम अपने आप नियमित बनता है ऐसा वे कहते रहते है। सुबह ५ बजे कूच करने का तो बिलकुल नियमित चल रहा है। रात को नौ बजें सोने की बात ५-७ रोज के बाद होने लगी। रात को गाडी मे सारा सामान भर कर तैयार रखना पड़ता है। सुबह सिर्फ बिस्तरे बांध कर गाड़ी में रखना बाकी रहता है। दोपहर का खाना ११ और १२ के बीच अकसर हो जाता है।

अब यात्रा का सारा कार्यक्रम घड़ी के मुआफिक व्यवस्थित बन गया है। सुबह पांच से दस तक मुसाफिरी का समय रखा था जिसमें नास्ते आदि के लिये एक डेढ़ घंटा रखा था। लेकिन अब मुकाम पर पहुंच कर ही नास्ता करने का रखा है जिससे एक रफ्तार में ही धूप के पहले आठ साढ़े आठ बजे के अन्दर मंजिल

तय हो जाती है । शाम की प्रार्थना सभा का निश्चित समय नहीं है । छ · बजे प्रार्थना हो ऐसी विनोबाजी की इच्छा रही । कुछ रोज वैसा चला भी । लेकिन आदिलाबाद के बाद देखा गया कि आस-पास के देहात से काफी भाई-बहने सभा और दर्शन के लिये आ जाती है । उनको अपने गाँव जल्दी वापिस जाने की सुविधा हो इस दृष्टि से विनोबाजी चार बजे या कभी कभी तीन बजे भी सभा कर लेते है ।

आदिलाबाद जिले मे और खास करके निर्मल तहसील मे गगारेड्डी नाम के कार्यकर्ता ने देहातों में घूम कर काफी प्रचार किया दिखाई दिया । हर गाँव के प्रवेशद्वार पर बहनें आरतियाँ लेकर हाजिर रहती थीं और देहाती बाजे भी रहते थे । निर्मल तहसील के देहातों मे चरखे काफी चलते हैं। निरडगोंडी मे पहली बार पचीस-तीस चरखे सिर पर ले कर बहने सूत कातने के लिये विनोबाजी के डेरे पर पहुँच गई ।

गोपालपेठ मे तो हद हो गई । सारा गाँव पानी छिड़क कर साफ किया गया था । रांगोली भी आंगन में खींची गई थी। सड़क की दोनों बाजू आम के पत्तों की पताकाएं लगी थीं । आरतियाँ और बाजे तो थे ही । विनोबाजी की ठहरने की जगह बहुत ही कलामय और मार्मिक थी । इमली के पेड़ के नीचे बड़ और मोह के वृक्षों की डालियों का भव्य मंडप तैयार किया था । कहीं कील या रस्सी का नाम नहीं था । पाखाना, नहाने की जगह, रसोई घर

और विश्राम घर सभी पल्लवों के बने थे। ग्यारह बजे पास के चिचोली गाँव से पचास बहनें सिर पर चरखे ले कर गाने बजाने के साथ आ पहुँचीं। गोपालपेठ के पचास-साठ चरखे थे ही। कुल सौ से ऊपर चरखे जमा हो गये। और सारी बहने कातने लगीं। इतने चरखे थे लेकिन एक चरखे की भी कर्णकटु आवाज नहीं आती थी। टूटन का तो नाम ही नहीं था। चरखे खड़े थे और लकड़ी की धुरा के थे, सिर्फ तकुआ लोहे का था। चमरख मकई के भुट्टों के पत्तों का और तकुवे की घिर्री अरहर के सूखे पेड़ की। प्रार्थना सभा के बाद सारी बहनों ने अपना कता सूत विनोबाजी को अर्पण किया। करीब साठ गुंडियां थीं। वह सूत वहीं चिचोली गांव में बुनने के लिए दे दिया। हैद्राबाद संमेलन में कपड़ा तैयार होकर आ जायगा।

ता० २३ को गोदावरी के तट पर पहुंच गये। गोदावरी के किनारे सुवर्णपुर—जिसे आज सोन कहते हैं—गांव क्षेत्र माना जाता है। सुवर्ण नदी व गोदावरी का यहां संगम है।

इस के बाद "गोदावर्याः दक्षिणे तीरे" हो कर निजामाबाद जिले में प्रवेश किया।

सोन (सुवर्णपुर) में विनोबाजी ने एक घंटे की पाठशाला चलाने की बात कही थी। उसके अनुसार दो ब्राह्मण पंडितों ने जिम्मा लिया। अब पता चला है कि ८ लड़कियां और १३ लड़के सुबह एक घंटा और शामको एक घंटा बड़े उत्साह से पढ़ने के लिये

आते है। और वे पंडित बारी बारी से उनको पढ़ाते हैं। ईशोपनिषद के मराठी श्लोक "दैनिक प्रार्थना" पुस्तिका में से बच्चे कंठ कर लेते हैं।

सोन के आगे निम्न प्रकार प्रवास हुआ।

यात्रा का दिन	तारीख	मुकाम का गाँव	जिला	कितने मील चले
(१७)	२४	बालकोंडा	निजामाबाद	११
(१८)	२५	आरमूर	,,	१०
(१९)	२६	निजामाबाद	,,	१७
(२०)	२७	डिच्चपल्ली	,,	१०
२१)	२८	कलवरल	,,	११
(२२)	२९	कामारेड्डी	,,	११

ऊपर की सारी यात्रा निजामाबाद जिले मे हुई। ३० तारीख से ५ अप्रैल तक का कार्यक्रम निम्न प्रकार है।

यात्रा का दिन	तारीख	मुकाम का गाँव	जिला	कितने मील चले
(२३)	३०	रामायणपेठ	मेदक	१७
(२४)	३१	मसाईपेठ	,,	१२
(२५)	१	मनोहराबाद	,,	१२
(२६)	२	मेडचल	हैद्राबाद	१२
(२७)	३	तिलमलगिरी	,,	११

(२८)	४	हैद्राबाद	,,	८
(२९)	५	शिवरामपल्ली	,,	५

आज तक कुल मील ३३९

निजामाबाद और आरमूर में सायंप्रार्थना के बाद स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा का अच्छा कार्यक्रम हुआ।

बालकोंडा में मेटपल्ली के चरखा संघ के आठ-दस कार्यकर्ता पैदल आ कर विनोबाजी से मिले। आरमूर तक वे विनोबाजी के साथ रहे। और वहां से २२ मील फिर पैदल चल कर वापिस गये।

हैद्राबाद स्टेट के चंद बड़े शहरों में निजामाबाद एक बड़ा शहर है। यहां तेलुगु में प्रवचनों का अनुवाद नहीं करना पड़ा और श्रोतागण भी मध्यम श्रेणी के थे। इसलिए विनोबाजी का यह प्रवचन काफी विस्तार से हुआ।

कामारेड्डी से हैद्राबाद केवल ७२ मील है।

इस तरफ के देहातों में खास बात यह देखी गई कि सभा में करीब आधी संख्या स्त्रियों की होती है। और सब भाषण बड़ी शांति से सुनती हैं।

विनोबाजी का साहित्य हिंदी-मराठी में अच्छी मात्रा में बिकता गया। इस बिक्री की खास बात यह है कि केवल किसी

विक्रेता या प्रचारक के पास पुस्तकें नहीं जातीं बल्कि हरेक पढ़ने-वाले के पास वे पहुँच जाती है।

पाठकों से सीधा संपर्क स्थापित होता है इस दृष्टि से यह बिक्री विशेष महत्त्व रखती है। हैद्राबाद पहुंचने तक करीब छह सौ रुपयो की बिक्री हो जायगी। हर गांव में कितनी और कौनसी किताबे दी गई इसकी तालिका रखी गई है।

—दत्तोबा दास्ताने